हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

E-mail:newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना शुक्रवार | 28 जून 2024 | वर्ष : 02 अंक : 46 | पृष्ठ - 12 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

बंगाल में हॉकरों को अतिक्रमण हटाने के लिए एक महीने का समय, बंगाल सरकार ने गठित किया पैनल

एजेंसी

पश्चिम बंगाल:पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य भर में फुटपाथों से फेरीवालों को हटाने और सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण को लेकर गुरुवार को एक आपात बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में मुख्यमंत्री बनर्जी ने फेरीवालों को फुटपाथ और सड़क के उन हिस्सों को खाली करने के लिए एक महीने का नोटिस जारी किया, जिन पर उन्होंने अतिक्रमण किया है।उन्होंने फेरीवालों के अतिक्रमण के इस मुद्दे पर एक सर्वेक्षण करने और 15 दिनों के भीतर अपने कार्यालय को एक रिपोर्ट सौंपने के लिए एक समिति का गठन किया। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि मुझे किसी की आय का स्रोत छीनने या किसी को बेरोजगार करने का कोई अधिकार नहीं है। लाखों लोग फेरी लगाकर अपना परिवार चलाते हैं। एक महीने तक कोई बेदखली नहीं होगी।इस अवधि के दौरान, फेरीवालों को फुटपाथ खाली करना होगा। उन्होंने फुटपाथों और सड़कों के अतिक्रमण में।

सम्राट चौधरी ने किया ऐलान

पेपर लीक के खिलाफ कानून लाएगी नीतीश सरकार

पेपर लीक के खिलाफ कानून लाएगी नीतीश सरकार, सम्राट चौधरी ने कहा कि केंद्र सरकार की तर्ज पर बिहार सरकार भी परीक्षा में पेपर लीक की घटनाओं को रोकने के लिए कड़ा कानून लेकर आएगी।

एजेंसी

पटना: ।बिहार की नीतीश सरकार पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून लाने जा रही है।राज्य के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। इस संबंध में विभागीय स्तर पर तैयारी भी शुरू हो गई है।बताया जा रहा है कि बिहार विधानसभा के आगामी मॉनसून सत्र में पेपर लीक पर बिल सदन में चर्चा के लिए पेश किया जा सकता है।उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने गुरुवार को कहा कि पेपर लीक मामले पर केंद्र सरकार ने कड़ा कानून बनाया है। बिहार में भी इस तर्ज पर सख्त कानून बनाया जाएगा। इससे पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी इस संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए थे।इसके बाद संबंधित विभाग इसका ड्राफ्ट तैयार करने में जुट गया।बता दें कि बिहार में बीते कुछ सालों में पेपर लीक और परीक्षाओं में धांधली की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है।हाल ही में

नीट पेपर लीक मामले में बिहार प्रमुख केंद्र रहा है।इससे पहले बीपीएससी की शिक्षक बहाली परीक्षा का पेपर भी लीक हुआ था, जिसके बाद वह परीक्षा रद्द कर दी गई थी। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले नीतीश सरकार राज्य के विभिन्न विभागों में खाली पड़े करीब पौने पांच लाख पदों को भरने की तैयारी में है। ऐसे में आने वाले एक साल में बड़ी संख्या में सरकारी भर्ती निकलेगी। अधिकतर पदों पर प्रतियोगी परीक्षा के जरिए ही नियुक्ति की जाएगी। ऐसे में पेपर लीक और एग्जाम में धांधली की आशंका नीतीश सरकार के लिए चिंता का विषय बनी हुई है। इसी को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार जल्द से जल्द पेपर लीक के खिलाफ कड़ा कानून लाने की तैयारी में है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज संसद भवन में नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू के सांसदों से मुलाकात की। इस दौरान जदयू सांसद ललन सिंह, लवली आनंद समेत अन्य सांद मौजूद रहे।इस दौरान बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व हो रहे विकास को लेकर विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा हुई। जनता दल यूनाइटेड के सांसदों ने प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अपनी पूरी निष्ठा से समर्पित रहने के संकल्प को दोहराया।

राष्ट्रपति मुर्मू ने संसद में गिनाई मोदी सरकार की उपलब्धियां, विपक्षियों को रास नहीं आई देश की तरक्की, की नारेबाजी

एजेंसी

नई दिल्ली: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के दोनों सदनों - लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए दावा किया कि भारत की महान परंपरा की प्रतिष्ठा पूरी दुनिया में लगातार बढ़ रही है और भारत के लोगों को भी यह विश्वास है कि उनकी आकांक्षा उनकी सरकार (मोदी सरकार) ही पूरा कर सकती है. संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में अभिभाषण देते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सभी सांसदों (सत्ता पक्ष और विपक्ष) को मिलकर देश हित में काम करने की नसीहत भी दी.विपक्षी दलों की टोकाटाकी और नारेबाजी के बीच मोदी सरकार की उपलब्धियों को सामने रखते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि सरकार उन आधुनिक मानदंडों पर काम कर रही है, जिससे भारत विकसित देशों के सामने बराबरी से खड़ा हो सके. विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है जब देश के गरीब, युवा, नारी शक्ति और किसान सशक्त होंगे.इसलिए सरकार की योजनाओं में सर्वोच्च प्राथमिकता इन्हीं चार स्तंभों को दी जा रही है.राष्ट्रपति ने भारत में तीसरी बार स्थिर और स्पष्ट बहुमत की सरकार बनने की बात कहते हुए कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव की चर्चा आज पूरी दुनिया में है. दुनिया देख रही है कि भारत के लोगों ने लगातार तीसरी बार स्थिर और स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाई है. छः दशक बाद ऐसा हुआ है. ऐसे समय में जब भारत के लोगों की आकांक्षाएं सर्वोच्च स्तर पर हैं, लोगों ने उनकी सरकार पर लगातार तीसरी बार भरोसा जताया है. 2024 का ये चुनाव नीति, नीयत, निष्ठा और निर्णयों पर विश्वास का चुनाव रहा है.राष्ट्रपति के ऐसा बोलते ही विपक्षी दलों की तरफ से सदन में नारेबाजी और टोकाटाकी शुरू हो गई. राष्ट्रपति मुर्मू ने जब देश के युवाओं का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार का ये निरंतर प्रयास है कि देश के युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का उचित अवसर मिले. सरकारी भर्ती हो या फिर परीक्षाएं, किसी भी कारण से इनमें रुकावट आए, ये उचित नहीं है. इनमें शुचिता और पारदर्शिता बहुत जरूरी है. उसी समय विपक्षी दलों की तरफ से 'नीट' को लेकर नारेबाजी शुरू हो गई.

क्या भारत की संसद में 'जय संविधान' नहीं बोला जा सकता? प्रियंका गांधी ने क्यों पूछा ये सवाल

एजेंसी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने गुरुवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि क्या संसद में "जय संविधान" का नारा लगाने की अनुमति है, साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि सत्ता में बैठे लोगों को असंसदीय नारे लगाने से नहीं रोका गया।उनका बयान तिरुवनंतपुरम से कांग्रेस सांसद शशि थरूर के 18वीं लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ लेने के बाद आया।थरूर ने संविधान की प्रति हाथ में लेकर अंग्रेजी में शपथ ली और समापन "जय हिंद, जय संविधान" के साथ किया।विपक्षी सदस्यों ने थरूर के "जय संविधान" के नारे को दोहराया, जिससे अध्यक्ष को उन्हें याद दिलाने के लिए प्रेरित किया गया कि वे पहले से ही संविधान पर अपनी शपथ ले रहे हैं। हरियाणा से कांग्रेस सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने दलील दी कि स्पीकर को आपत्ति नहीं जतानी चाहिए थी।स्पीकर ने पलटवार करते हुए कहा, 'किस पर आपत्ति करनी है और किस पर नहीं, इस पर सलाह न दें।

अजित गुट के साथ गठबंधन पर बीजेपी कार्यकताओं की निराशा एक बार फिर सामने आई, कही ये बात

एजेंसी

अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के साथ पार्टी के गठबंधन को लेकर महाराष्ट्र में भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच 'निराशा' एक बार फिर सामने आई, जब पार्टी के पुणे जिले के उपाध्यक्ष सुदर्शन चौधरी ने मांग की कि एनसीपी को महायुति गठबंधन से हटा दिया जाए। यह मांग भाजपा विधायक राहुल कुल की मौजूदगी वाली बैठक में की गई। भाजपा कार्यकर्ता अजीत पवार के साथ गठबंधन में सत्ता में रहने के बजाय आगामी विधानसभा चुनावों में सत्ता से बाहर जाना पसंद करेंगे। सत्ता में रहने का क्या मतलब है ? हम काम करेंगे और वह बॉस बन जाएंगे और हमें आदेश देंगे। हमें ऐसी शक्ति नहीं चाहिए।

महाराष्ट्र में लाडली बहना और लाडला भाई योजना लागू की जाए, उद्धव ठाकरे ने दिया सुझाव

एजेंसी

शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने गुरुवार को राज्य में लाडली बहना जैसी योजना लागू करने के महाराष्ट्र सरकार के फैसले का समर्थन किया और पुरुषों के लिए भी इसी तरह की नीति की मांग की।उद्धव ठाकरे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए कहा कि चूंकि सरकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं शुरू करने की योजना बना रही है, जिनमें से एक मध्य प्रदेश की तरह लाडली बहना योजना है, मैं इसका स्वागत करता हूं और पूछता हूं कि इस योजना को लड़कों के लिए भी बढ़ाया जाए। भेदभाव क्यों? लड़कियों और लड़कों दोनों को इसका लाभ मिलना चाहिए।महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ गठबंधन शिवसेना (एकनाथ शिंदे), राकांपा (अजित पवार) और भाजपा शामिल हैं। इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए इस योजना को शुरू करने की योजना बना रहे हैं।

मुश्किल में बीएस येदियुरप्पा, अदालत में आरोप पत्र दायर, नाबालिग से छेड़छाड़ का है मामला

एजेंसी

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा के खिलाफ छेड़छाड़ के आरोपों की जांच कर रहे अपराध जांच विभाग (सीआईडी) ने गुरुवार को ढडउरड मामलों को देखने वाली विशेष अदालत में आरोप पत्र दायर किया। सदाशिवनगर पुलिस ने इस साल मार्च में वरिष्ठ भाजपा नेता के खिलाफ छेड़छाड़ का मामला दर्ज किया था। इसके बाद, कर्नाटक के पुलिस महानिदेशक आलोक मोहन ने

मामले को आगे की जांच के लिए सीआईडी ??को स्थानांतरित करने का आदेश जारी किया। यह मामला 17 वर्षीय लड़की की मां द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत से उत्पन्न हुआ, जिसने आरोप लगाया कि येदियुरप्पा ने 2 फरवरी को अपने आवास पर एक बैठक के दौरान उनकी बेटी से छेड़छाड़ की।सीआईडी ??ने मामले के सिलसिले में 17 जून को येदियुरप्पा से करीब तीन घंटे तक पूछताछ की थी। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने पहले सीआईडी ??को मामले में येदियुरप्पा को गिरफ्तार करने से रोकने के आदेश पारित किए थे।

हिंदू नेताओं के सम्मेलन में Owisi को सांसद के रूप में अयोग्य ठहराने की मांग

एजेंसी

पणजी । गोवा में बुधवार को हिंदू नेताओं के एक सम्मेलन में एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी को लोकसभा सदस्य के रूप में शपथ लेने के बाद ह्यफलस्तीन की प्रशंसाह्व करने के लिए अयोग्य ठहराने की मांग की गई।हिंदू नेताओं ने दक्षिण गोवा के पोंडा तालुका में चल रहे वैश्विक हिंदू राष्ट्र महोत्सव के 12वें संस्करण में हैदराबाद के सांसद के खिलाफ एक प्रस्ताव पारित किया।

सम्मेलन का आयोजन करने वाली हिंदू जनजागृति समिति के राष्ट्रीय प्रवक्ता रमेश शिंदे ने कहा कि ओवैसी ने मंगलवार को लोकसभा में सांसद के रूप में शपथ लेने के बाद ह्यजय भीम, जय मीम, अल्लाहु अकबर और जय फलस्तीनह्व के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 102डी में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति किसी विदेशी राज्य के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करता है तो वह संसद के किसी भी सदन का सदस्य होने से अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।

मुंबई के कॉलेज में हिजाब प्रतिबंध, हाईकोर्ट ने हस्तक्षेप से किया इनकार

एजेंसी

मुंबई.:मुंबई. बॉम्बे हाईकोर्ट ने बुधवार को शहर के एक कॉलेज द्वारा अपने परिसर में हिजाब, बुर्का और नकाब पर प्रतिबंध लगाने के फैसले में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया. जस्टिस एएस चंदुरकर और राजेश पाटिल की खंडपीठ ने कहा कि वह कॉलेज द्वारा लिए गए फैसले में हस्तक्षेप करने के लिए इच्छुक नहीं है और नौ छात्राओं द्वारा इसके खिलाफ दायर याचिका को खारिज कर दिया, जो विज्ञान डिग्री कोर्स के दूसरे और तीसरे वर्ष में हैं.छात्रों ने इस महीने की शुरुआत में हाई कोर्ट का रुख किया था, जिसमें चेंबूर ट्रॉम्बे एजुकेशन सोसाइटी के एनजी आचार्य और डीके मराठे कॉलेज द्वारा जारी किए गए निर्देश को चुनौती दी गई थी, जिसमें एक ड्रेस कोड लागू किया गया था, जिसके तहत छात्र परिसर के अंदर हिजाब, नकाब, बुर्का, स्टोल, टोपी और बैज नहीं पहन सकते.याचिकाकर्ताओं ने दावा किया कि ऐसा निर्देश उनके धर्म का पालन करने के मौलिक अधिकारों, निजता के अधिकार और पसंद के अधिकार के खिलाफ है. याचिका में कॉलेज की कार्रवाई को ह्यमनमाना, अनुचित, कानून के विरुद्ध और विकृतह्व बताया गया है.याचिकाकर्ता के वकील अल्ताफ खान ने पिछले सप्ताह हाई कोर्ट के समक्ष कुरान की कुछ आयतें पेश कीं, ताकि उनके इस दावे का समर्थन किया जा सके कि हिजाब पहनना इस्लाम का एक अनिवार्य हिस्सा है. उन्होंने कहा कि अपने धर्म का पालन करने के अधिकार के अलावा, याचिकाकर्ता कॉलेज के फैसले का विरोध करते हुए अपनी पसंद और निजता के अधिकार पर भी भरोसा कर रहे थे.कॉलेज ने दावा किया था कि उसके परिसर में हिजाब, नकाब और बुर्का पर प्रतिबंध लगाने का

हकीकत कम और हवा-हवाई ज्यादा...', संसद में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण पर मायावती की प्रतिक्रिया

एजेंसी

नई दिल्ली:'बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने गुरुवार को संसद के संयुक्त सत्र में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संबोधन की आलोचना की। एक्स पर एक पोस्ट में, बसपा प्रमुख ने कहा कि आज राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में संसद के संयुक्त सत्र को सम्बोधित करते हुये जो केन्द्र सरकार की पिछले 10 वर्षों की उपलब्धियाँ गिनाई है तो वो जमीनी हकीकत में बहुत कम तथा हवा-हवाई ज्यादा है।उन्होंने आगे लिखा कि साथ ही केन्द्र सरकार देश में आर्यादिन बढ़ रही गरीबी, बेरोजगारी व महंगाई तथा कमजोर वर्गों की समस्याओं को भी लेकर कतई गम्भीर नहीं है।इनके आगे के 5 वर्षों के रोडमैप में भी कोई खास दम नहीं है।बसपा प्रमुख ने कहा कि बेहतर होगा कि राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर

सांसदों को केवल आरोप व प्रत्यारोप लगाने की बजाय बल्कि जनहित के जरूरी मामलों में सरकार का ध्यान जरूर आकर्षित कराना चाहिये। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को कहा कि पिछले 10 साल के दौरान देश की उपलब्धियों और विकास का आधार गरीबों का सशक्तीकरण रहा है तथा उनकी सरकार ने पहली बार गरीबों को अहसास कराया कि वह उनकी सेवा में है। मुर्मू ने 18वीं लोकसभा में पहली बार संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार ने गरीबों के जीवन की गरिमा से लेकर उनके स्वास्थ्य तक को राष्ट्रीय महत्व का विषय बनाया है। मुर्मू ने कहा कि सरकार पेपर लीक की हालिया घटनाओं की निष्पक्ष जांच कराने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। हाल में हुए संसदीय चुनाव के दौरान जम्मू कश्मीर में मतदान के कई रिकॉर्ड टूटने का जिक्र करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि इन चुनाव के जरिए घाटी ने देश के दुश्मनों को करारा जवाब दिया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने देश में 1975 में लागू आपातकाल को ह्यसंविधान पर सीधे हमले का सबसे बड़ा और काला अध्यायह्व बताते हुए गुरुवार को कहा कि ऐसे अनेक हमलों के बावजूद देश ने असंवैधानिक ताकतों पर विजय प्राप्त करके दिखाई। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान, बीते दशकों में हर चुनौती, हर कसौटी पर खरा उतरा है और जब संविधान बन रहा था, तब भी दुनिया में ऐसी ताकतें थीं, जो भारत के असफल होने की कामना कर रही थीं।

प्रधान शिक्षक परीक्षा संचालन हेतु डीएम व एसपी ने की ब्रीफिंग

मो. सदरे आलम नोमानी

सीतामढ़ीः प्राथमिक विद्यालय में प्रधान शिक्षक के पद पर नियुक्ति हेतु लिखित (वस्तुनिष्ठ) प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन 29 जून 2024 को एकल पाली में 12 बजे मध्यान्ह से 2:30 बजे अपराह्न तक कुल 9 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित होगा शांतिपूर्ण एवं कदाचार रहित परीक्षा संचालन हेतु प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों एवं पुलिस अधिकारियों को संयुक्त ब्रीफिंग जिलाधिकारी रिची पांडेय एवं पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार तिवारी के द्वारा की गई। जिले के कुल 9 परीक्षा केदों पर परीक्षा आयोजित की जाएगी। अभ्यर्थियों की कुल संख्या 4452 है। जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक द्वारा कदाचार रहित स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण परीक्षा संचालन हेतु प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। किसी भी परीक्षार्थी को परीक्षा कक्ष में

मोबाइल फोन, कैलकुलेटर, ब्लूटूथ, वाईफाई गैजेट, इलेक्ट्रॉनिक पेन पेजर, रिस्ट वॉच (सामान्य/ स्मार्ट) इत्यादि इलेक्ट्रॉनिक सामग्री के साथ तथा व्हाइटनर, इरेजर एवं ब्लेड जैसी सामग्री ले जाने की अनुमति नहीं होगी। ऐसा करने पर उसे कदाचार मानते हुए आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी। कदाचार करते पाए जाने की स्थिति में इस परीक्षा सहित आगामी 5 वर्षों के लिए आयोग की परीक्षाओं में भाग लेने से वंचित किया जाएगा तथा परीक्षा से संबंधित सनसनीखेज अफवाह फैलाने की स्थिति में 3 वर्ष के लिए आयोग की परीक्षाओं से वंचित किया जाएगा। परीक्षा प्रारंभ होने के एक घंटा पहले अर्थात 11 बजे पूर्वाह्न के बाद किसी परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र में प्रवेश नही करने दिया जाएगा। परीक्षा केंद्र के प्रवेश द्वार, कंट्रोल रूम एवं सभी परीक्षा कक्षो में उपस्थित व्यक्तियों की विभिन्न गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सीसीटीवी कलर कैमरा से निगरानी की जाएगी। मोबाइल जैमर की भी व्यवस्था की गई है।

जिला स्तर पर समाहरणालय परिसर स्थित विमर्श कक्ष में जिला नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गई है

राष्ट्रपति महोदय ने सरकार की उपलब्धियां एवं आने वाले वर्षों में सरकार किस सोच के साथ आगे बढ़ने का कार्य कर रही है,:चिराग पासवान

संवाददाता

पटना:लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने संसद भवन मे पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने सरकार की उपलब्धियां एवं आने वाले वर्षों में सरकार किस सोच के साथ आगे बढ़ने का कार्य कर रही है, इसको प्रमुखता से उन्होंने रखने का काम किया। हर विभाग की अपनी क्या-क्या उपलब्धियां रही है? किसानों को लेकर, युवाओं को लेकर, महिलाओं को लेकर, मजदूरों को लेकर उन्होंने प्रमुखता से इन बातों को रखने का काम किया। उनके अभिभाषण में कहीं न कहीं 2047 विकसित भारत के निर्माण की दिशा में जिस तरीके से यह

सरकार काम करने की सोच रखती है, उस दिशा को भी उन्होंने अंकित करने का काम किया। आगे श्री चिराग ने कहा कि ये सरकार पूरी तरीके से समर्पित है गरीब कल्याण को लेकर। गरीब कल्याण से जुड़ी हुई कई ऐसी नीतियां है, आज के तारीख में जो धरातल पर मजबूती से कार्य कर रही है। परिणाम स्वरुप 25 करोड़ से भी ज्यादा परिवार गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं।

सिवान के दुरौंधा थाना क्षेत्र के पिनथू बाजार से 16 वर्षीय किशोर लापता परिजनों मे अनहोनी की आशंका

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

सिवान महराजगंज अनुमंडल दुरौंधा 27 जून बृहस्पतिवार। सिवान के दुरौंधा थाना क्षेत्र के पिनथु बाजार से एक सोलह वर्षीय किशोर जीबी नगर थाना क्षेत्र सोनवर्षा गांव निवासी राजकिशोर सिंह के पुत्र अंकित कुमार सिंह 16 वर्ष लापता है। बता दे की किशोर अपने घर सोनवर्षा से साईकिल से किसी कार्य से पिनथु बाजार आया था लेकिन घर वापस नही पहुंचा तो परिजन काफी खोज बिन कर रहे है लेकिन सुराग हासिल नहीं हुई है। जिसे परिजन किसी अनहोनी की आशंका जता रहे है। परिजन बताते है की अंकित घर वालों से बगैर बताए कही नही जाता था जिसे और चिंता बढ़ गई है। वही परिजनों ने दुरौंधा थाना में आवेदन दे कर किशोर को खोजने का आग्रह किए है। दुरौंधा थाना प्रभारी छोटन कुमार ने बताया की परिजनों द्वारा आवेदन पत्र प्राप्त हुआ है आगे की करवाई और किशोर की तलासी जारी है।

जिला परिषद सदस्य सुरेश यादव की हत्या कि जिले भर में हो रही है तीव्र भर्त्सना,

विहिप और बजरंग दल ने आंदोलन की चेतावनी दी

संवाददाता
कफील एकबाल

मोतिहारी 27 जून विश्व हिन्दू परिषद बजरंगदल ने हिन्दूवादी नेता सह जिला परिषद सदस्य सुरेश यादव की दिन दहाड़े हत्या का कड़ा विरोध किया है। एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए विहिप के बिहार झारखंड के विधि प्रकोष्ठ प्रमुख अशोक श्रीवास्तव अधिवक्ता ने कहा हैकि सुरेश यादव हिन्दूवादी नेता थे तथा बूढ़वा बाडी विवाद मे न्याय के लिए बढ़ चढ़कर हिस्सा लिए थे उनकी हत्या हिन्दू समाज के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। इन्होंने अविलंब दोषियो को गिरफ्तार करने और घटना को सुक्ष्म जांच करने की प्रशासन से मांग किया है ऐसा जल्द नही होने पर आन्दोलन करने का चेतावनी दिया है। प्रशासन से भीड भाड वाले जगहो पर सुरक्षा बढ़ाने की मांग किया है।

विरोध करने वाले मे उद्धेश्य गुप्ता देवेन्द्र कुमार सिंह बजरंगदल के जितेन्द्र कुशवाहा हेमनत कुमार राजन तिवारी राहुल सिंह आनन्द प्रकाश इत्यादि शामिल

जिला परिषद सुरेश यादव के हत्यारों की शीघ्र गिरफ्तारी हो: जनसुराज

वरिष्ठ संवाददाता
कफील एकबाल

मोतिहारी 27 जून । बंजरिया के जिला पार्षद,सिसवां पूर्वी से पैक्स अध्यक्ष,केन यूनियन के सचिव एवं जन सुराज अभियान के समर्थक लोकप्रिय नेता सुरेश यादव की निर्मम हत्या की पूर्वी चंपारण जिला जन सुराज कार्यवाहक समिति ने कड़ी निंदा की है तथा पुलिस प्रशासन से घटना में संलिप्त सभी अपराधियों एवं उनके संरक्षकों को शीघ्र गिरफ्तार कर त्वरित सजा दिलाने की मांग की है। आज जन सुराज की टीम जिलाध्यक्ष बीर प्रसाद महतो के नेतृत्व में मृतक सुरेश यादव के गाँव जाकर उनके पार्थिव शरीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। साथ हीं उनके परिजनों से मिलकर इस दुख की घड़ी में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। टीम में संगठन महासचिव जय मंगल कुशवाहा, मुख्य प्रवक्ता रवीश कुमार मिश्रा प्रवक्ता डा.मंजर नसीम व ई.अजय आजाद सहित कार्यालय प्रभारी अरुण तिवारी आदि शामिल थे।

बाल श्रमिकों के खिलाफ धावा दल का छापामारी अभियान जारी है और जारी रहेगा -श्रम अधीक्षक सत्य प्रकाश

संवाददाता
कफिल एकबाल

मोतिहारी 27 जून, श्रम संसाधन विभाग बिहार के निर्देश के आलोक में एवं श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, ढाका के नेतृत्व में ढाका प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत विशेष धावा दल के द्वारा विभिन्न प्रतिष्ठानों में सघन जाँच अभियान चलाया गया।

जाँच के क्रम में ढाका प्रखंड के कुल-02 प्रतिष्ठानों क्रमशः परफेक्ट टायर और अशोक पी0 से 01-01 बाल श्रमिक अर्थात कुल-02 बाल श्रमिकों को धावा दल की टीम के द्वारा विमुक्त कराया गया। साथ ही श्रम अधीक्षक सत्य प्रकाश द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि यह अभियान पूर्वी चंपारण जिला अंतर्गत लगातार क्रियाशील रहेगा!

बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986 के तहत सभी नियोजकों के विरूद्ध संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है

जबकि सभी विमुक्त बाल श्रमिकों को बाल कल्याण समिति, पूर्वी चंपारण, मोतिहारी के समक्ष उपस्थापित कर उन्हें बाल गृह में रखा गया है। श्रम अधीक्षक सत्य प्रकाश द्वारा बताया कि बच्चों से प्रतिष्ठान में कार्य कराना बाल एवं किशोर श्रम प्रतिषेध एवं विनियमन के अंतर्गत गैर कानूनी है। बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत बाल श्रमिकों से कार्य कराने वाले व्यक्तियों को 20 हजार रुपए से 50 हजार रुपए तक का जुमार्ना और 2 वर्षों तक का कारावास का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निदेश के आलोक में सभी नियोजकों से 20,000/- (बीस हजार रू.) प्रति बाल श्रमिक की दर से राशि की वसूली की जाएगी।

मधुबनी में सघन जांच अभियान 2024 तक बाल श्रम के विरूद्ध विरुद्ध लगातार आम जनमानस के बीच जन जागरूकता

संवाददाता
अबु बकर

जिला पदाधिकारी मधुबनी के द्वारा 30 जूनजिला पदाधिकारी, मधुबनी के निदेशानुसार धावा दल के द्वारा विभिन्न दुकानों एवं प्रतिष्ठानों में सघन जांच अभियान 2024 तक बाल श्रम के विरूद्ध विरुद्ध लगातार आम जनमानस के बीच जन जागरूकता एवं समाज के प्रत्येक वर्ग को बाल श्रम के विरुद्ध सजगता एवं धावा दल के द्वारा बाल श्रमिकों की विमुक्ति हेतु विभिन्न दुकानों एवं प्रतिष्ठानों में सघन निरीक्षण एवं व्यापक प्रचार प्रसार किए जाने का निर्देश दिया गया है इसी क्रम मे आज दिनांक-27.06.2024 को श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी राजनगर, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी रहिका, एवम श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी अंधराठाढ़ी के नेतृत्व में राजनगर प्रखंड में बाल श्रमिकों की

विमुक्ति हेतु जिला पदाधिकारी, मधुबनी के निदेशानुसार धावा दल के द्वारा विभिन्न दुकानों एवं प्रतिष्ठानों में सघन जांच अभियान चलाया गया तथा निरीक्षण के क्रम मे छोला भटूरा की दुकान रांटी चौक से एक (1) बाल श्रमिक एवं शत्रुघन ऑटो रिपेयर नरकटिया चौक, राजनगर से एक (1) अर्थात कुल-02 बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया। विमुक्त बाल श्रमिक को बाल कल्याण समिति, मधुबनी के समक्ष उपस्थापित कर निदेशानुसार उन्हें बाल गृह में रखा गया है। बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के तहत नियोजक के विरुद्ध संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है। श्रम अधीक्षक राकेश रंजन ने बताया कि बाल श्रमिकों से किसी भी दुकान या प्रतिष्ठान में कार्य कराना बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम 1986 के अंतर्गत गैरकानूनी है तथा बाल श्रमिकों से कार्य कराने वाले व्यक्तियों को ?20000 से ?50000 तक का जुमार्ना और 2 वर्षों तक के कारावास का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त माननीय सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा एम सी मेहता बनाम तमिलनाडु सरकार 1996 में दिए गए आदेश।

पुलिस अधीक्षक, सारण द्वारा कोपा एवं रसूलपुर थाना का किया गया वार्षिक निरीक्षण

वरिष्ठ संवाददाता

पटनाः-पुलिस अधीक्षक, सारण द्वारा कोपा एवं रसूलपुर थाना का वार्षिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान थाने में पदस्थापित थानाध्यक्ष सहित सभी पुलिस पदाधिकारियों / कर्मियों एवं चौकीदारो को ड्रेसल-डेल्स एवं स्मार्टनेस के साथ ही अपराध नियंत्रण के संदर्भ में आवश्यक निर्देश दिए गये। कोपा एवं रसूलपुर थाना के निरीक्षण के दौरान थाना भवन के साथ ही थाना के सभी अभिलेखों एवं पंजीयों की जाँच कर अभिलेखो व पंजीयों के संधारण में मिली त्रुटियों के सुधार करने, कांडो का समीक्षा कर त्वरित निष्पादन करने, थानों में साफ-सफाई रखने एवं थाना भवन निर्माण के लिए

निरीक्षण के क्रम में विभिन्न दिशा-निर्देश दिये गये

प्रस्ताव उचित माध्यम से भेजने सहित कई आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। वार्षिक निरीक्षण के दौरान संबंधित अनुमंडल पुलिस पदाधिकरी एवं अंचल पुलिस निरीक्षक उपस्थित रहे। पुलिस अधीक्षक सारण द्वारा औचक निरीक्षण के क्रम में रिविलगंज थानान्तर्गत टेकनिवास मोड़ पर प्लान के अनुसार प्रतिनियुक्त पदाधिकारी/कर्मी दुकानों में बैठे पाये गये। इस संबंध में प्रतिनियुक्त पदाधिकारी/कर्मी से स्पष्टीकरण की मांग की गई है। निरीक्षण के दौरान थानाध्यक्ष सहित थाना में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी को अपराध नियंत्रण हेतु प्रभावकारी गश्ती/ सघन वाहन चेकिंग करने, कांडो का त्वरित निष्पादन, थाना भवन निर्माण हेतु प्रस्ताव भेजने, थानों में साफ-सफाई रखने एवं आम जनता से अच्छा व्यवहार करने और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान करने तथा चौकीदारों को अपने-अपने क्षेत्र में मद्यनिषेध, जमीनी विवाद, अपराध एवं विधि-व्यवस्था से संबंधित आसूचना संकलन करने का निर्देश दिया गया। साथ ही जमीन विवाद, बालू और शराब कारोबार में संलिप्त नहीं रहने की चेतावनी दी गई अन्यथा उनके विरूद्ध कठोरतम कार्रवाई किए जाने की बात बताई गई।

नगर पंचायत गोपालपुर मे विकाश की गंगा बहेगी: ईमाम जाकिर

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

सिवान महाराजगंज,हुसैनगंज 26 जून बुधवार। नगर पंचायत गोपालपुर के विकास लिए के लिए जमाल हाता के सम्मानित व्यक्तियो ने वार्ड पार्षद अब्दुल रहमान के नेतृत्व मे गोपालपुर नगर पंचायत के मुख्य पार्षद ईमाम जाकिर अंसारी से मिलकर क्षेत्र के समस्याओं से अवगत करवाया। वही मुख्य पार्षद श्री ईमाम ने बताया की मेरा सपना है जिले मे गोपालपुर नगर पंचायत विकाश के अग्रसर पथ पर हो। लेकिन नगर पंचायत गोपालपुर मे ईओ के नही रहने से विकाश कार्य में बाधा उत्पन्न हो रही है। नगर विकाश विभाग को सुचित करने के बाद भी वहा आज तक ईओ को पदस्थापित नही किया गया। नगर पंचायत के विकाश का बजट लगभग चालीस करोड़ का है जो ईओ के नही रहने से विकाश अवरुद्ध है। श्री ईमाम ने बताया की ईओ के आते ही गोपालपुर नगर पंचायत में विकाश की गंगा बहेगी जो हमने अपने चुनावी घोषणा किया था उस पर सत प्रतिशत चौमुखी विकाश होगा और विकाश का दुसरा नाम जाकिर ईमाम अंसारी होगा। इस मौके पर जानता नर्सिंग होम के संचालक डॉक्टर महफूज आलम, सामाजिक कार्यकर्ता सह पसमांदा समाज के अकलियत नेता शाह आलम अंसारी, शिक्षक निजामुद्दीन अंसारी, ठीकदार कियामुद्दीन अंसारी, इम्तियाज अंसारी, इत्यादि मौजूद थे।

BRIEF NEWS

3 किलो गोल्ड लूटकांड में 2 लाख का इनामी अरेस्ट

PATNA : डाक बंगला चौराहे पर सात मार्च को दिल्ली के व्यवसायी अंसार अली से हुए तीन किलो सोना लूटकांड में दो लाख का इनामी अपराधी राजीव पटेल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गायघाट से सोमवार देर रात गिरफ्तार आरोपित के पास से 800 ग्राम सोना, एक पिस्टल और एक गाड़ी जब्त की गई है। राजीव यूपी के बलिया जिले के कठुआ रामपुर का रहने वाला है। लूटकांड की जांच कर रही एसआईटी ने गायघाट में छापेमारी कर उसे दबोचा। पुलिस ने राजीव से वह पिस्टल भी बरामद किया जिससे सोना व्यवसायी को गोली मारी गई थी।

पश्चिम चंपारण में ठनका गिरने से महिला की मौत

CHAMPARAN : पश्चिम चंपारण जिले में सिकटा प्रखंड के कंगली थाना क्षेत्र अंतर्गत सेनवरिया गांव में आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई जबकि उसके साथ बैठी एक बच्ची घायल हो गई। मृतका की पहचान ममता देवी (22) के रूप में हुई है। घायल बच्ची मंदना कुमारी (05) उसकी बेटी है। मृतका के परिजनों के मुताबिक, ममता देवी एवं मंदना कुमारी घर के दरवाजे पर बैठी थीं। तभी आकाशीय बिजली उनके समीप ही गिर गई। ममता की तत्काल मौत हो गई और उसकी बेटी गंभीर रूप से घायल हो गई।

मनेर के शाहपुर ईंट भट्ठा के पास मिला युवक का शव

PATNA: मनेर थाना क्षेत्र के छितनावा गांव से दो दिनों से लापता हुआ युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गयी। युवक की हत्या के बाद अपराधियों ने शव शाहपुर ईंट भट्ठा के पास गंगा नदी में फेंक दिया। सूचना पर पुलिस ने युवक का शव पुलिस ने बरामद कर कार्रवाई में जुटी हुई है। मृतक युवक खासपुर पंचायत के छितनावा गांव के रहने वाले अशोक राय के 21 वर्ष से पुत्र विशाल कुमार बताया जा रहा है।

अंजू देवी ने पटना जिप अध्यक्ष का जीता चुनाव

PATNA : पटना जिला परिषद की अध्यक्ष पद पर बुधवार को हुए चुनाव में अंजू देवी ने जीत दर्ज की है। अंजू को 33 वोट मिले जबकि उनकी विरोधी प्रत्याशी रेहाना परवीन को 5 वोट ही मिले। जिला परिषद की पूर्व चेयरमैन स्तुति कुमारी वोटिंग का बहिष्कार करके पहले ही बाहर निकल गईं। बता दें कि स्तुति को चंद महीने पहले अविश्वास प्रस्ताव लाकर पद से हटा दिया गया था। इसके बाद से जिला परिषद के अध्यक्ष का पद खाली था।

मोबाइल नहीं मिलने से नाराज युवक ने की आत्महत्या

BHAGALPUR : जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र के आदर्शनगर में 12वीं कक्षा के छात्र ने बीते देर रात फंदे से लटक कर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि उक्त युवक ने मोबाइल खराब होने के बाद पिता के फटकार से डिप्रेशन में आकर यह कदम उठाया है। छात्र उमेश शाह का पुत्र आदित्य कुमार (19) है। बताया जा रहा है कि बीते दिनों आदित्य का मोबाइल खराब हो गया था, जिसके बाद पिता उमेश शाह ने उसे फटकार लगाई थी, जिसको लेकर वह पिछले कई दिनों से डिप्रेशन में चल रहा था।

मधुबनी जिला पदाधिकारी, अरविन्द कुमार की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में लंबित/निष्पादित (सामान्य वाद/स्पीडी ट्रायल) काण्डों से संबंधित *विभिन्न एजेण्डों पर मासिक समीक्षात्मक बैठक

संवाददाता
अबु बकर

मधुबनी जिला पदाधिकारी, अरविन्द कुमार की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में लंबित/निष्पादित (सामान्य वाद/स्पीडी ट्रायल) काण्डों से संबंधित विभिन्न एजेण्डों पर मासिक समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। जिलाधिकारी ने स्पीडी ट्रॉयल के मामलें, गत माह में उड्ढल्ल१,३ड्ढल्ल२ की स्थिति, सामान्य वाद/विशेष वाद के वैसे मामलें जहाँ अन्तिम (न्यायादेश) नजदीक हो, लम्बित क्क ढटफ ञ्च्छ प्रतिवेदन से संबंधित, रिहाई के मामलें की समीक्षा, गवाह सुरक्षा योजना की समीक्षा आदि कई बिंदुओं पर विस्तार से समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

ई शिक्षा पोर्टल पर शिक्षको के स्थाई या अस्थाई आईडी नहीं होने से उपस्थिति दर्ज करने मे परेशानी

संवाददाता
मोहम्मद आरिफ

सिवान महराजगंज अनुमंडल 27 जून बृहस्पतिवार। इन दिनों शिक्षा विभाग शिक्षको की हाजरी बनाने के लिए ई शिक्षा पोर्टल तो लंच कर दिया है और हाजरी 25 जून से ऑनलाइन बनाने के लिए निर्देश भी जारी कर दिया है। लेकिन विभाग द्वारा जिले मे स्थाई या अस्थाई आईडी नंबर बहुत ऐसे शिक्षक है जिनका अभी तक जेनरेट नहीं है जिसे शिक्षक ई शिक्षा पोर्टल पर बगैर आईडी के हाजरी नहीं बना सकते है। जिसे शिक्षक असमंजस के इस्थिती में है। एक तरफ विभाग के नए नए फरमान प्रतिदिन जारी हो रहे है की जो शिक्षक ई शिक्षा पोर्टल पर अपनी हाजरी नहीं बनाएगी को उनका वेतन नहीं मिलेगा। फिर जब आईडी नहीं है तो हाजरी कैसे बनेगा इस पर विभाग विचार करने में असमर्थ है। शिक्षक संघ के प्रखंड अध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह, अनिल कुमार यादव, प्रखंड सचिव अनिल कुमार सिंह, बताते है की पहले ऑनलाइन ई शिक्षा पोर्टल पर विभाग हाजरी के लिए सभी शिक्षक का आईडी जेनरेट करे तब हाजरी के लिए निर्देशित करे।

सीतामढ़ी में सड़क हादसा, वाहनों की टक्कर में दो की गई जान

AGENCY SITAMARHI : सीतामढ़ी में बुधवार की सुबह भीषण सड़क हादसा हुआ है। दो वाहनों की सीधी टक्कर में दो व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गयी है। तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गये हैं। घायलों को स्थानीय लोगों की मदद से सदर अस्पताल भेजा गया है। जहां तीनों की हालत गंभीर बतायी जा रही है। हादसा सोनबरसा के दोस्तियां के पास राष्ट्रीय उच्च पथ पर हुई है। जहां टाटा 407 और स्कॉर्पियो के बीच भीषण टक्कर हुई है। इस हादसे में कार पर सवार एक व्यक्ति की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी है, जबकि चार लोग बुरी तरह घायल है। एक को इलाज के दौरान मौत हो गयी। घटना की सूचना लोगों ने पुलिस को दी जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों वाहनों को जब्त किया और आगे की कार्रवाई शुरू की। इस भीषण

टक्कर के बाद बेला थाना क्षेत्र के बेला निवासी नागेश्वर महतो के बेटे विवेक कुमार और रामचंद्र गोसाई की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस ने दोनों शवों को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सीतामढ़ी सदर अस्पताल भेज दिया है। साथ ही दुर्घटना के कारणों की जांच करने में जुट गई है। सोनबरसा थाने के थानाध्यक्ष ने कहा कि सोनबरसा के दोस्तियां के पास राष्ट्रीय उच्च पथ पर स्कॉर्पियो और पिकअप वैन में सीधी टक्कर हुई है। इस हादसे में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हुए हैं। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घायल बेहतर इलाज के लिए सीतामढ़ी रेफर : सोनबरसा पीएचसी के द्वारा तीनों घायलों को बेहतर इलाज के लिए बीती देर रात सीतामढ़ी सदर अस्पताल में रेफर कर दिया गया। जहां तीनों का इलाज चल रहा है। वहीं पुलिस ने पिकअप और स्कॉर्पियो को जब्त कर लिया है। थाना अध्यक्ष ने इस बारे में जानकारी देते कहा कि मामले की जानकारी मृतक के परिजनों को दे दी गई है।

सरकारी अस्पताल के चिकित्सक की लापरवाही ऑपरेशन के बाद महिला के पेट में छोड़ दिए बैंडेज

AGENCY BIHARSARIF : बिहार के एक सरकारी अस्तपताल में ऑपरेशन के दौरान बड़ी लापरवाही सामने आई है। मामला बिहारशरीफ स्थित नालंदा जिले के सदर अस्पताल का है। जहां ऑपरेशन के दौरान महिला मरीज के पेट में टेट्रा (बैंडेज) छोड़ दिए गए। महिला के पति ने मंगलवार को इसकी शिकायत डीएम के जनता दरबार में की। इसे गंभीरता से लेते हुए डीएम शशांक शुभंकर ने सिविल सर्जन डॉ. श्यामा राय और सदर अस्पताल के उपाधीक्षक अशोक कुमार को जांच का आदेश दिया है। डीएम ने तीन दिन में जांच रिपोर्ट मांगी है। उन्होंने कहा कि दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। पटना के सकसोहरा थाना क्षेत्र के अंदौली गांव निवासी रवीन्द्र पासवान ने डीएम को आवेदन देकर बताया कि उनकी पत्नी बेबी देवी अपने

मायके सरमेरा-नालंदा के धनावां गांव में रह रही थीं। 25 नवंबर 2023 को रात प्रसव पीड़ा होने पर उसको सरमेरा अस्पताल में भर्ती कराया। अगले दिन सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। वहां दोपहर में महिला डॉक्टर ने ऑपरेशन किया। इसके बाद बच्ची ने जन्म लिया। करीब डेढ़ माह बाद से बेबी देवी अक्सर पेट दर्द की शिकायत करने लगीं। स्थानीय चिकित्सकों से इलाज कराया। लेकिन, तकलीफ दूर नहीं हुई। 11 मई 2024 को जब पटना में एक बड़े डॉक्टर से दिखाया तो पेट में टेट्रा होने का प्रमाण मिला। इसके बाद ऑपरेशन कर टेट्रा निकाला गया। इसमें चार से पांच लाख खर्च हो गए। अभी एक और ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई है। आर्थिक रूप से कमजोर रवींद्र पासवान दो दिन पहले बिहारशरीफ सदर अस्पताल में ऑपरेशन करने वाली डॉक्टर से मिले। लेकिन, अपशब्द कहते हुए डॉक्टर ने उन्हें अस्पताल से भगा दिया। आखिरकार, रवींद्र पासवान ने डीएम से मिलकर पूरी जानकारी दी। पीड़िता के पति ने साक्ष्य के रूप में सदर अस्पताल के पुर्जा के साथ ही पटना के निजी अस्पताल में कराए गए इलाज का पूरा दस्तावेज भी जमा कराया है।

क्या होता है टेट्रा : ऑपरेशन के वक्त शरीर से निकलने वाला पानी अथवा खून को सोखने के लिए बैंडेज के कई टुकड़े डाले जाते हैं। लेकिन, बाद में उन्हें गिनकर निकाल लिया जाता है। इस मामले में एक या उससे अधिक टुकड़े पेट में ही रह गए, जो बाद में महिला के लिए पीड़ादायी बन गए।

उपेंद्र कुशवाहा को रास भेज सकता है जेडीयू

PATNA : बिहार में विधान परिषद की एक सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए जेडीयू ने भगवान सिंह कुशवाहा को उम्मीदवार बना दिया। इससे उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम) के खेमे में नाराजगी है। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी ने उपेंद्र कुशवाहा को काराकाट के साथ एक एमएलसी सीट भी देने का वादा किया था। काराकाट तो कुशवाहा जीत नहीं पाए। अब आरजेडी से एमएलसी रहे रामबली चंद्रवंशी की सदस्यता रद्द होने के बाद उनकी सीट पर हो रहे उपचुनाव में आरएलएम को मौका नहीं मिला है। चर्चा है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू, एमएलसी सीट के बदले उपेंद्र कुशवाहा को राज्यसभा में जाने का मौका दे सकती है। लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद बिहार से राज्यसभा की दो सीटें खाली हुई हैं।

पुलिसकर्मियों की बालू माफिया से साठगांठ

ऑडियो वायरल होने के बाद दारोगा समेत 7 सस्पेंड

AGENCY CHHAPRA : बिहार के छपरा में बालू माफिया से साठगांठ के आरोप में 7 पुलिसकर्मियों पर गाज गिरी है। सारण एसपी कुमार आशीष ने बालू माफिया से गठजोड़ रखने के आरोप में भगवान बाजार थाने में तैनात दारोगा (एसआई) समेत 7 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है। इस संबंध में आधिकारिक आदेश जारी कर दिया गया है। इन सभी के खिलाफ विभागीय कार्रवाई भी चलेगी। आरोप है कि ये सभी पुलिसकर्मी अवैध वसूली करके बालू लदी गाड़ियों को चेक पोस्ट पार करवा रहे थे। पुलिस पदाधिकारी और अन्य जवानों का एक ऑडियो क्लिप भी वायरल हुआ था। वायरल ऑडियो के बाद सारण एसपी ने मामले में जांच के आदेश दिए थे। जांच में सही पाए जाने पर भगवान बाजार थाने के एसआई अजीत प्रसाद, एएसआई किरण कुमारी, सिपाही मनोज कुमार, सरिता कुमारी, नेहा कुमारी, सिम्मी कुमारी, सैप जवान चालक संतोष कुमार और श्याम किशोर सिंह को

सस्पेंड कर दिया गया। एसपी ने बताया कि इन लोगों को नोटिस भेजकर जवाब मांगा गया था। लेकिन, संतोषजनक जवाब नहीं मिलने के कारण कार्रवाई की गई है। बता दें कि सारण जिले में इसके पहले भी कई पुलिस पदाधिकारी और जवानों पर बालू माफिया से साठगांठ करने के मामले में कार्रवाई हो चुकी है। दूसरी ओर, बिहार सरकार ने बालू माफिया पर नकेल कसने के लिए सख्ती बरती है। बालू की बिक्री का सिस्टम ऑनलाइन मोड में कर दिया गया है। वहीं, पटना स्थित सचिवालय में कमांड कंट्रोल सेंटर भी खोला गया है, जहां से प्रदेश भर के बालू घाटों की निगरानी की जाएगी। यह सेंटर 24 घंटे काम करेगा।

कैदी को भगाने में शामिल पुलिसकर्मी पर एसपी ने दिया एफआईआर का आदेश

GOPALGUNJ : कैदी को भगाने के आरोप में गोपालगंज के एसपी स्वर्ण प्रभात ने तीन पुलिसकर्मियों पर एफआइआर के आदेश दिये हैं। इनमें हवलदार उपेंद्र पांडेय, सिपाही सतीश कुमार और एसपी कार्यालय के लिपिक अनिश कुमार सिंह शामिल हैं। होमगार्ड जवान की गोली मारकर हत्या किये जाने के मामले में जेल में बंद कुख्यात अपराधी संजय उर्फ बनरी को पेशी के दौरान भगाने के लिए फूल प्रूफ साजिश रची गयी। साजिश के तहत कुख्यात अपराधी संजय उर्फ बनरी को भगाया गया। अब इस मामले में जांच रिपोर्ट आने के बाद सिपाही पर कार्रवाई शुरू कर दी गयी है। दो साल पहले गिरफ्तार हुआ था हत्या का आरोपी : एसपी स्वर्ण प्रभात के आदेश पर जिला बल के हवलदार उपेंद्र पांडेय के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करायी गयी। उपेंद्र पांडेय की संलिप्तता पायी गयी और कार्रवाई शुरू की गयी है। नगर थाना क्षेत्र के एकडेरवा गांव निवासी होमगार्ड जवान भोला यादव को घर से थावे होमगार्ड कार्यालय जाने के दौरान रास्ते में संजय उर्फ बनरी ने अपने साथियों के साथ मिलकर गोली मारकर हत्या कर दी थी।

नए अपर मुख्य सचिव से शिक्षक नाराज, आदेश का कर रहे विरोध

AGENCY PATNA : बिहार में स्कूल टीचरों की नाराजगी कम नहीं हो रही है। के-के पाठक के जाने के बाद अब नये अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ का भी शिक्षकों ने विरोध करना शुरू कर दिया है। इस बार शिक्षकों की नाराजगी ऑनलाइन अटेंडेंस को लेकर है। बिहार शिक्षा विभाग की तरफ से सभी सरकारी टीचरों को 25 जून से ऑनलाइन अटेंडेंस बनाने का निर्देश दिया गया था, लेकिन सुबह जब शिक्षकों ने पोर्टल खोला तो किसी का आईडी पासवर्ड इनवैलिड बता रहा था तो किसी के मोबाइल पर पोर्टल नहीं खुल रहा था। सर्वर काम नहीं करने के कारण बड़ी संख्या में शिक्षक ऑनलाइन अटेंडेंस नहीं बना पाये।

टैब या एंड्रॉइड फोन उपलब्ध कराए सरकार : शिक्षकों का कहना है कि अभी इसमें कई तकनीकी खामियां हैं। इसको अनिवार्य बनाने से पहले कुछ दिन वैकल्पिक रखा जाये। शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने विभाग के निर्देशानुसार ई-शिक्षा कोष एप मोबाइल में डाउनलोड किया। विभाग से मिले यूजर आईडी पासवर्ड डाला। लॉगिन करने के

बाद मार्क अटेंडेंस का ऑप्शन आ रहा है, जिसे क्लिक करने पर लोकेशन बताए और इस लोकेशन पर अपने विद्यालय एवं फोटो के साथ क्लिक करना है, लेकिन जब पोर्टल खोला तो उनके विद्यालय का लोकेशन गलत बता रहा था। इस वजह से अधिकतर शिक्षकों ने ऑनलाइन अटेंडेंस नहीं बनाया। उन्हें पुरानी विधि से रजिस्टर पर हाजिरी बनानी पड़ी। विभाग को इसकी जानकारी दे दी गयी है। ऑनलाइन अटेंडेंस को लेकर शिक्षक संघ के साथ-साथ राज्यभर के शिक्षकों में काफी नाराजगी देखी जा रही है। इन लोगों का कहना है कि शिक्षकों को बगैर टैब या एंड्रॉइड फोन उपलब्ध कराए ही ई-शिक्षा कोष पर ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराने की अनिवार्यता लागू करना बिल्कुल गलत है।

बिहार में 826 करोड़ के टेंडर रद्द, एनडीए सरकार ने जांच के बाद की कार्रवाई

PATNA : बिहार की एनडीए सरकार ने पिछली महागठबंधन सरकार में हुई अनियमितता की जांच के बाद कार्रवाई शुरू कर दी है। राजद कोटे के विभागों से अलॉट किये गये 826 करोड़ के टेंडर को वर्तमान सरकार ने रद्द कर दिया गया है। कुछ फैसलों की जांच अभी जारी है ऐसे में ऐसे अभी औ? कार्रवाई की उम्मीद की जा रही है। एनडीए सरकार बनने के बाद उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने कहा था कि राजद कोटे के विभागों से जारी टेंडरों की जांच की जायेगी और उसमें अनियमितता पाये जाने के बाद उचित कार्रवाई की जायेगी।

नीतीश सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग ने 826 करोड़ के 350 टेंडर में धांधली पाये जाने के बाद उन्हें रद्द कर दिया है। ये सभी टेंडर महागठबंधन सरकार के कार्यकाल में जारी हुए थे। तब इस विभाग के मंत्री राजद के ललित यादव हुआ करते थे। मौजूदा सरकार ने इन टेंडर की जांच करायी थी और अब उसमें गड़बड़ी पाते हुए रद्द कर दिया है। बिहार के पीएचईडी मंत्री नीरज कुमार बबलू ने बताया कि जांच के दौरान ये पाया गया कि टेंडर प्रक्रिया में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हुई थी।

आम लोगों की बेहतर स्वास्थ्य सुविधा के लिए सरकार ने स्वीकृत किए 17.55 करोड़ रुपये

एक क्लिक में डॉक्टर देखेंगे आपका स्वास्थ्य

AGENCY PATNA : बिहार के आम लोगों को स्वास्थ्य सुविधा आसानी और सहज तरीके से मुहैया किया जा सके इसके लिए सरकार की ओर से मुख्यमंत्री डिजिटल हेल्थ योजना प्रदेश में प्रभावी है। इस योजना के तहत बुनियादी स्वास्थ्य सुविधा और जांच वगैरह को डिजिटल मोड पर ले जाना है। सरकार का मानना है कि इस योजना के माध्यम से स्वास्थ्य व्यवस्था और आमजनों का हेल्थ रिकार्ड डिजिटल माध्यम में उपलब्ध हो जाएगा तो भविष्य में स्वास्थ्य नीति के निर्माण में काफी सहूलियत मिलेगी। पांच वर्षों के लिए लागू की गई इस

- अब तक इस योजना के खर्च हो चुके है 100 करोड़
- सभी अस्पतालों में 24 घंटे मिलेगी आपातकालीन सुविधा
- पांच वर्षों तक के लिए लागू है डिजिटल हेल्थ योजना

योजना के वित्तीय वर्ष 2024-25 में सफल संचालन के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा 17.55 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, वर्ष 2022-23 से राज्य में मुख्यमंत्री डिजिटल हेल्थ योजना लागू किया गया है। बता दें कि इस योजना का कार्यकाल 2026-27 तक है। पूरी योजना पर करीब तीन सौ करोड़ रुपये खर्च किए जाने का प्रावधान है। राज्य सरकार के अनुसार इस वर्ष योजना के रखरखाव और परिचालन के लिए 17.55 करोड़ रुपये खर्च हो सकती है जिसको देखते हुए राशि स्वीकृत कर दी गई है। योजना के शुरुआती काल से अब तक इस पर सौ करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। प्रत्येक जिले में योजना पूरी तरह से प्रभावी हो जाने के बाद सभी अस्पतालों में सातों दिन 24 घंटे आपातकालीन चिकित्सा सुविधा और विशेषज्ञ डाक्टरों का परामर्श मिलने लगेगा। प्रदेश की जनता के स्वास्थ्य की मॉनीटरिंग आसानी से हो सकेगी। अगर पूरी तरह से यह डिजिटल योजना राज्य में प्रभावी हो जाएगा उसके बाद रोगियों को इलाज के लिए अपने साथ इलाज के दस्तावेज लेकर नहीं आने होंगे। महज एक क्लिक पर डाक्टर उनकी पूरी स्वास्थ्य कुंडली देख सकेंगे।

आम के पेड़ से लटके मिले दंपती के शव

HAZIPUR : हाजीपुर के देसरी थाना क्षेत्र के खोखसा कल्याण गांव में एक बगीचे में आम के पेड़ से लटका एक प्रेमी जोड़े का शव मिला है। एक ही दुपट्टा, दोनों के गर्दन में लपेटा हुआ मिला। घटना की जानकारी स्थानीय लोगों ने देसरी थाना के पुलिस पदाधिकारी को दी। घटना की सूचना मिलते ही देसरी थाना अध्यक्ष सुनील कुमार, पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल में जुट गए। पुलिस प्रेम प्रसंग में फांसी लगाकर आत्महत्या करने की बात कह रही है, जबकि ग्रामीणों का कहना है कि दोनों की हत्या करके शव को टांग दिया गया है। पुलिस का कहना है कि सोनी 6 महीने से अपने मायके में ही रह रही थी। सोनी और अजीत का घर आमने-सामने है।

भूमि विवाद में एसिड से अटैक तीन लोग गंभीर रूप से झुलसे

AGENCY NAWADA : जिले में नेमदारगंज थाना क्षेत्र के भनैल लोदीपुर गांव में बुधवार को जमीनी विवाद को लेकर एक परिवार के तीन लोगों पर एसिड से हमला किया गया है। इलाज कर रहे चिकित्सक एसिड की पुष्टि करते हुए हालत गम्भीरर बताया है।। घटना में एक महिला समेत तीन लोग जख्मी हुए हैं। झुलसे लोगों में सुगिया देवी, राजीव कुमार एवं अरविंद कुमार शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में विवाद हुआ था। जिसमें दोनों तरफ से आधा दर्जन लोग जख्मी हुए थे। सभी घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अभी एक पक्ष के लोग सदर अस्पताल से इलाज करा कर घर

लौटे ही थे। तभी दूसरे पक्ष ने उनके उपर तेजाब से हमला कर दिया। हमले में एक महिला समेत तीन लोग जख्मी हुए हैं। फिलहाल सुगिया देवी का इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है, जबकि राजीव एवं अरविंद कुमार को निजी क्लिनिक में इलाज कराया गया है। पीड़ित परिवार के संजीत कुमार ने बताया कि महज दो फीट जमीन को लेकर विवाद हुआ था। विवाद इतना बढ़ गया कि एक पक्ष पर तेजाब से हमला कर दिया गया।

नीट पेपर लीक मामले में रोज नये-नये खुलासे

▪ नीट पेपर लीक का मास्टरमाइंड संजीव मुखिया उद्यान महाविद्यालय में तकनीकी सहायक के पद पर कार्यरत

एजेंसी

पटना/नालंदा : नीट पेपर लीक मामले में रोज नये-नये खुलासे हो रहे हैं। इस मामले में एक और बड़ा खुलासा हुआ है। नीट पेपर लीक का मास्टरमाइंड संजीव मुखिया नालंदा जिले का नूरसराय उद्यान महाविद्यालय में तकनीकी सहायक के पद पर कार्यरत है। महाविद्यालय के कार्यालय अधीक्षक प्रणय कुमार पंकज ने कहा कि संजीव ने पांच मई को छुट्टी का आवेदन दिया था। छह मई को उसने बीमारी का बहाना बनाकर पांच जून तक यानी एक माह की छुट्टी ले लिया। छुट्टी पूर्ण होने के बाद भी जब कार्यालय ड्यूटी पर नहीं लौटा तो विभाग ने पत्र जारी कर स्पष्टीकरण मांगा लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है। यदि जवाब नहीं मिलता है तो उद्यान महाविद्यालय प्रबंधन अनुशासनात्मक कार्रवाई करेगा। संजीव कुमार ने नवंबर 2012 में जॉइनिंग किया था और उसके बाद वह सभी अधिकारियों की आंखों में धूल झोंक कर काम कर रहा था। वह मूल रूप से नालंदा के नगरनौसा का रहने वाला है। संजीव मुखिया सॉल्वर गैंग का पुराना मेंबर रहा है। पिछले दो दशकों से वह विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की सेटिंग में शामिल रहा है और पुलिस ने इस गिरफ्तार भी किया है। वह जेल की हवा भी खा चुका है। संजीव मुखिया का बेटा डॉक्टर शिव शिक्षक बहाली पेपर लीक मामले में फिलहाल जेल में बंद है। अब संजीव मुखिया कोर्ट से अग्रिम जमानत लेने की फिराक में लगा हुआ है। वकील के माध्यम से संजीव मुखिया ने पटना सदर के एसीजेएम-9 की कोर्ट में अर्जी दाखिल की है। उल्लेखनीय है कि सीबीआई पेपर लीक से जुड़े सभी दस्तावेज और सबूत ले रही है। सीबीआई से पहले ईओयू ही पूरे मामले की जांच कर रही थी। इस मामले में ईओयू की टीम बिहार और झारखंड से 18 लोगों को गिरफ्तार और कई लोगों से पूछताछ भी कर चुकी है।

तालाब में डूबने से दो बच्चों की मौत

पटना : बिहार में गोपालगंज जिले के विजयीपुर थाना क्षेत्र अन्तर्गत रामनगर गांव के पास स्थित तालाब में बुधवार को डूबने से चचेरे भाई-बहनों की मौत हो गई। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए गोपालगंज सदर अस्पताल भेज दिया। पुलिस के मुताबिक, मृतकों की पहचान विजयीपुर थाना क्षेत्र के रामनगर गांव निवासी मोहम्मद अंसारी की आठ वर्षीय बेटी शबनम खातून और स्वर्गीय इद्रीश अंसारी के नौ वर्षीय बेटा इम्तियाज अंसारी के रूप में की गई। घटना के संदर्भ में बताया जाता है कि इम्तियाज अंसारी और उसकी चचेरी बहन शबनम खातून के अलावा चार बच्चे घर से करीब 200 मीटर की दूरी पर खुदाई किए गए तालाब में नहाने गए थे।

राज्य के छह जिलों में वज्रपात से आठ लोगों की मौत पर मुख्यमंत्री ने जताया शोक

एजेंसी

पटना : बीते 24 घंटे के दौरान राज्य के छह जिलों में वज्रपात से आठ लोगों की मौत पर मुख्यमंत्री ने शोक जताया है। उन्होंने मृतकों के आश्रितों को चार-चार लाख रुपये अविलंब देने का निर्देश दिया है। राज्य आपदा प्रबंधन विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक वज्रपात से मुंगेर में 02, भागलपुर में 02, जमुई में 01, पूर्वी चम्पारण में 01, पश्चिमी चम्पारण में 01 और अररिया में 01 व्यक्ति की मौत पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने अविलंब मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपये अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम होने पर वज्रपात से बचाव के लिये आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सुझावों का अनुपालन करें। खराब मौसम में घरों में रहें और सुरक्षित रहें।

एक झलक

भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ने श्राद्ध कार्य के लिए दी नगद व खाद्य सामग्री

अनगड़ा: गेतलसुद बलौरा निवासी करमा उरांव का पिछले दिनों लंबी बीमारी के बाद मृत्यु हो गई थी उनका एक मात्र पुत्र का भी सर्प दंश से एवं पत्नी का भी कैंसर से पहले ही मृत्य हो चुकी है। उस परिवार में अब उनकी बेटियां ही सभी श्रध्द कार्य को कर रही है, अत्यंत गरीब होने के कारण उनके श्राद्ध पर भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य जैलेन्द कुमार ने नगद एवं खाद्य सामग्री दी एवं ईश्वर से मृत आत्मा की शांति अपील की मौके पर बंधन उरांव, करमी उरॉव, राजु,मिना उरॉव ,सुखैर उरॉव,पर्वतती पती मुरारी सिंग,संगीत पती सुनील कुमार,जगमनी, अजय उरॉव।

मोबाइल चोर को पकड़ कर पुलिस को सौंपा

बुढ़मू : सामाहिक बाजार बुढ़मू में मोबाइल चोरी करने का प्रयास करते हुए एक मोबाइल चोर को पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया। जानकारी के अनुसार बुढ़मू निवासी पुरुषोत्तम कुमार सामाहिक बाजार बुढ़मू में सब्जी खरीद रहे थे इसी दौरान एक युवक उनके पाकेट में हाथ डालकर मोबाइल निकालने लगा जिसे तत्परता दिखाते हुए पुरुषोत्तम ने पकड़ लिया। पुछताछ में कभी अपना घर उरुगुटू तो कभी गोमिया बता रहा था। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना पाकर पुलिस पहुंची और मोबाइल चोरी करने का प्रयास करने वाले युवक को थाना ले आयी।

सहेलियों के साथ स्कूल से लौट रही छात्रा के साथ छेड़छाड़

- दिमलिया के ग्रामीणों ने आरोपी को किया थाने के हवाले
- सेन्हा का है विवेक कुमार पुलिस कर रही पड़ताल

रातू : सिमलिया नयांटोली स्थित बाघलता के समीप सहेलियों संग स्कूल से घर लौट रही एक नाबालिग छात्रा के साथ छेड़खानी के आरोप में 24 वर्षीय युवक को ग्रामीणों ने खदेड़कर पकड़ा और जमकर धुनाई करने के बाद थाने के हवाले कर दिया। जबकि, गौतम कुमार, कमल व एक अन्य आरोपी फरार हो गये। वह लोहरदगा जिले के सेन्हा वेनकोपा निवासी विपिन कुमार साहू का पुत्र है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। घटना बुधवार को दिन के करीब 2:30 बजे की है। मामले को लेकर पीड़िता के पिता की ओर से रातू थाने में चार के खिलाफ पोक्सो एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है।

चेन की छिनतई करने का प्रयास

रातू : थाना क्षेत्र में फिर बाइक सवार अपराधियों का आतंक शुरू हो गया है। बुधवार को संध्या पौने 4 बजे कान्ता देवी पति एस साहू गोविंद नगर कॉलोनी की महिला से चैन छिनतई का प्रयास किया गया। कान्ता देवी बाजार से सामान लेकर घर जा रही, तभी 4 लोग 2 बाइक पर टैंगर बागीचा तक पीछा किया, उन्हें आवाज देकर रोका। तभी कुछ पूछने के दौरान चैन छीनने का प्रयास किया। परंतु अपराधी असफल रहे। जिसके बाद बाइक सवार अपराधी रांची की ओर भागने में सफल रहा।

राज्य में अब नौ बजे से 4:30 बजे तक खुलेंगे स्कूल

पटना : बिहार में मानसून के प्रवेश करने के बाद मौसम में आई नरमी को देखते हुए स्कूल के समय में बदलाव किया गया है। शिक्षा विभाग ने स्कूलों के लिए नई समय सारिणी जारी कर दी है। अब हर दिन सुबह नौ बजे से शाम 4:30 बजे तक स्कूलों का संचालन होगा। छात्रों की छुट्टी तीन बजे ही कर दी जाएगी जबकि शिक्षक स्कूल बंद होने तक रुकेंगे। जारी आदेश के अनुसार सभी शिक्षकों को सप्ताह में 45 घंटे ड्यूटी करना अनिवार्य होगा। ऐसे में सोमवार से शनिवार तक हर दिन उन्हें साढ़े सात घंटे की ड्यूटी करनी होगी। आवश्यकता पड़ने पर पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए यह कार्यावधि प्रधानाध्यापक द्वारा बढ़ायी जा सकती है।

राहे निर्माणधीन उप स्वास्थ्य केन्द्र गड़बड़ी पर देवेंद्र की शिकायत पर विभाग ने लिया संज्ञान

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

रांची : बुधवार को सिल्ली विधान सभा अंतर्गत राहे प्रखण्ड बी नावाडीह कोटांगदाग में निर्माणधीन उप स्वास्थ्य केंद्र के कार्य पर गड़बड़ी के शिकायत पर विगत 23/06/2024 को झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्र नाथ महतो कार्य स्थल का निरीक्षण कर ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल रांची के एसडीओ जी शिकायत किया था। मामला को गंभीरता से लेते हुए ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल के सहायक अभियंता, कनीय अभियंता ने ऐक्शन लेते हुए कार्य स्थल का निरीक्षण किया। तथा ग्रामीणों के मांग के अनुरूप देवेंद्र नाथ महतो के उपस्थिति में पांच शर्त के आधार पर गुणवत्तापूर्ण कार्य करने का लिखित वादा के समझौता हुआ। पांच शर्त निम्न है -

1. बीम तक पूरा छत झाड़कर एवम साईड बीम साफ सुथरा कर नए तरीके से सैटरिंग किया जायेगा।
2. ज्वाइंट में डॉक्टर फिक्स इट जैसे विश्वसनीय कंपनी से ट्रीटमेंट कर आगे ढलाई कार्य पूर्ण किया जाएगा।
3. बचे हुए ढलाई में चिसलिंग कर ढाई इंच सम्पूर्ण छत में ढलाई किया जाएगा।
4. सम्पूर्ण छत में डॉक्टर फिक्स इट जैसे विश्वसनीय कंपनी से वाटर प्रूफिंग कराया जाएगा।

मौके पर देवेंद्र नाथ नाथ महतो ने कहा कि ग्रामीणों के उपस्थिति में शर्त के साथ गुणवत्तापूर्ण कार्य किया जाय अन्यथा आंदोलन के लिए बाध्य होंगे, जिसका सारा जवाबदेही विभाग की होगी।

राष्ट्र का नागरिक जीवन उस सभ्यता की पहचान है : आलोक कुमार

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील सिटी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ,उत्तर पूर्व क्षेत्र के कार्यकर्ता विकास वर्ग प्रथम वर्ष (सामान्य),झारखण्ड प्रान्त के संघ शिक्षा वर्ग (सामान्य) एवं घोष वर्ग का समापन समारोह 26 जून, 2024 को पू. त. ज. म. सरस्वती विद्या मंदिर जनवृत 3सी बोकारो में आयोजित किया गया। समारोह में संघ के सह सरकार्यवाह आलोक कुमार मुख्य वक्ता तथा भारत सेवा आश्रम संघ के सचिव स्वामी भूतेशानंद जी महाराज मुख्य अतिथि थे.मंच पर मुख्य अतिथि एवम मुख्य वक्ता के साथ क्षेत्र संघचालक मा देवव्रत पाहन, सर्वाधिकारी श्री राजकुमार सिन्हा और श्री सुरेन्द प्रताप सिंह तथा बोकारो महानगर संघचालक मा रंजीत वर्णवाल उपस्थित थे। मुख्य वक्ता श्री आलोक कुमार जी ने उपस्थित शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जिन्होंने अपने लोगों को सत्कार और स्वीकार नहीं किया उसे कोई भी सम्मान नहीं देता इस संदर्भ में

महात्मा बुद्ध की जातक कथा का एक कहानी शिक्षार्थियों के बीच रखा। हमे अपने विचार अपने समाज पर गर्व है स्वाभिमान है तो दुनिया भी हमे सम्मान देगी।आज पूरे देश में हिंदुत्व का सम्मान है और विश्व में हिंदू संस्कृति और विचार का प्रभाव भी लोगों के जिज्ञासा का केंद्र बना है।आजादी के पूर्व और आजादी के बाद संघ के स्वयंसेवक समाज स्वीकृत अनेक यशस्वी कार्य किया देश की एकता और अखंडता की बात पर संघ ने हमेशा देशानुकूल सेवा की है।नक्सल हो या धारा 370 ऐसे देशघातक व्यवस्था के विरुद्ध में हमेशा संघ आगे रहा और इस दिशा में अपना हिंदू समाज सफल भी हुआ। उन्होंने शिक्षार्थियों का आह्वान किया की स्वयंसेवकों को समाज जीवन में पंच परिवर्तन अपनाने पर जोर देना चाहिए, उन्होंने कहा कि पंच परिवर्तन के अंतर्गत हम सब अपने दैनिक जीवन में सामाजिक समरसता, परिवार प्रबोधन, पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली, नागरिक कर्तव्य पालन,कुटुंब प्रबोधन एवं स्वदेशी को अपना कर ही इस प्रशिक्षण का लाभ स्वयं और समाज को दे सकते हैं. उन्होंने कहा कि व्यक्ति को समाज के लिए सहज सेवा भाव रखना चाहिए,अपने भाव में परिवार का भाव बढ़े बढ़ती परिवार विच्छेदन से अपने समाज को बचाना उनका प्रबोधन हो ऐसा प्रयास हो। किसी भी राष्ट्र की पहचान वहां के नागरिकों के नागरिक कर्तव्य पर उनकी सभ्यता और संस्कृति को विश्व में सम्मानित करता है। नागरिक कर्तव्य और बढ़े इस दिशा में अपना प्रयास भी बढ़े।

एसडीएम, विधायक और चेयरमैन ने मार्केटिंग यार्ड के व्यवसायियों के साथ की बैठक

एजेंसी

अररिया : फारबिसगंज कृषि उत्पादन बाजार समिति (विघटित) में करोड़ों की लागत से हो रहे जीर्णोद्धार के दौरान व्यवसायियों को हो रही समस्या के समाधान को लेकर बुधवार को स्थानीय विधायक विद्यासागर केशरी, एसडीओ शैलजा पांडे, नप की मुख्य पार्षद वीणा देवी ने बाजार समिति का निरीक्षण कर व्यवसायियों के साथ बैठक की।व्यवसायियों की समस्या सुनने के बाद विधायक,एसडीओ व मुख्य पार्षद ने उनके समस्या के समाधान की बात कही। व्यवसायियों का कहना है बाजार समिति में दुकानों व गोदामों का निर्माण के दौरान संवेदक द्वारा पूर्व से कारोबार कर रहे दर्जनों दुकानों के आगे सड़क को तोड़ दिया गया,जिससे उन्हें कारोबार करने में परेशानी हो रही है। बैठक में व्यवसायियों ने एसडीओ ,विधायक व मुख्य पार्षद से बातचीत के दौरान कहा कि उन्हें जीर्णोद्धार से कोई परेशानी नहीं है। मगर संवेदक द्वारा वर्तमान में उनकी दुकानों के सामने बड़े-बड़े पिलर का निर्माण किये जाने से उन्हें काफी परेशानी हो रही है। थोक मंडी होने के कारण प्रतिदिन सैकड़ो की संख्या में वाहनों की आवाजाही होती है। मगर पिलर व सड़क को तोड़ देने से उनका करोबार काफी प्रभावित हो रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस मना

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

रांची : बुधवार को झारखंड स्किल डेवलपमेंट मिशन सोसाइटी के अंतर्गत चल रहे Mosaic Work Skills वेटरनरी रोड कांके रांची में लगभग 200 से ज्यादा प्रशिक्षु के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस मनाया गया जिसमें नशीले पदार्थों का सेवन के विरोध में रैली निकालकर लोगों के बीच जन-जन में नशा मुक्ति के लिए केंद्र से लेकर कांके के ग्राउंड तक नशा मुक्ति अभियान में चढ़ बढ़कर हिस्सा लिया और खुद एवं अपने परिजनों को भी नशा से दूर रहने का संकल्प लिया इसमें सम्मिलित मुख्य रूप से केंद्र संचालक अखिल तिवारी अतिथि विजय राय केंद्र प्रबंधक मोहम्मद अब्दुल्ला केंद्र व्यवस्थापक अरविंद कुमार केंद्र कोऑर्डिनेटर निखिल तिवारी प्लेसमेंट इंचार्ज पिंटू पांडXZ mis पुनीत सिंह ट्रेनर रानी कुमारी नरेश कुमार मिस्त्री दीपिका उरांव बेबी कुमारी मोहम्मद शहजाद रीता कुमारी मौजूद थी।

भाजपा ने दुष्कर्म मामले पर कैंडल मार्च निकाला

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

अनगड़ा : ओरमांझी में नाबालिग से हुये दुष्कर्म के मामले को लेकर बुधवार को भाजपा कार्यकर्ताओं ने गोंदलीपोखर में कैंडल मार्च निकाला। कैंडल मार्च पूर्व विधायक रामकुमार पाहन के नेतृत्व में निकाला गया. पूर्व विधायक रामकुमार पाहन ने कहा कि राज्य में विधि व्यवस्था चौपट हो गई है, अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है. राज्य में हर तरफ अपराध व अराजकता का माहौल बना है। कार्यकर्ताओं ने सरकार से पिड़िता को न्याय दिलाने की मांग किया. मौके पर भाजयुमो प्रदेश उपाध्यक्ष सत्यदेव मुंडा, जिला उपाध्यक्ष मनोज चौधरी, मंडल अध्यक्ष रामनाथ महतो, कामेश्वर महतो, रामसाय मुंडा, राजेन्द्र महतो, अगमलाल महतो, जगेश्वर महतो, धनीराम महतो, नरेश साहू, सुरेश महतो, सुनील महतो, बिहारी साहू, पुशनाथ मुंडा, धनेनाथ महतो, संजय नायक सहित अन्य उपस्थित थे।

मादक पदार्थों के दुरुपयोग रोकने के लिए चलाया जागरूकता कार्यक्रम

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

रजरप्पा (रामगढ़) : डॉ.एस. राधाकृष्णन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सुकरीगढ़ा (लारी) के बहुद्देश्यीय सभागार में बुधवार को राष्ट्रीय सेवा योजना(एन.एस.एस.) के तत्वावधान में मादक पदार्थों के दुरुपयोग रोकने हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मातृसंस्था जन आकांक्षा सोसाइटी के मणिकांत सिन्हा, महाविद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष रितेश कुमार, प्रबंधन समिति के सचिव संजय कुमार प्रभाकर तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.शिवकुमार राणा एवं सभी शिक्षकों ने भाग लिया। सर्वप्रथम महाविद्यालय के प्राचार्य ने नशामुक्त कार्यक्रम की जानकारी दी तथा इसके दुष्परिणाम की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में मंच का संचालन कर रहे सहायक प्राध्यापक डॉ. अशोक राम ने नशामुक्त मादक पदार्थों से दूर रहने तथा इसके दुष्परिणामों से कम से कम दस लोगों को जागरूक करने की बात कही। मौके पर महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक रंजु वंदना होरो, नवन कुमार मिश्रा, संजु रंजना होरो, प्रभारी विभागाध्यक्ष सुप्रिया बर्मन, व्याख्याता मुरारी कुमार दूबे, सुलेखा कुमारी तथा शिक्षकेत्तर कर्मचारियों में निकिता कुमारी, नंदलाल कुमार, निशा कुमारी, श्रेया गुप्ता, पवन कुमार, मुनीता कुमारी, सुनीता देवी, सावित्री देवी, पंकज करमाली, निर्मल महतो सहित बी.एड तथा डी.एल.एड.के सभी प्रशिक्षु उपस्थित थे।

सांसद ओम बिड़ला के अध्यक्ष बनने पर भाजपा रामगढ़ जिला कमिटी में हर्ष

फ्रीडम फाइटर संवाददाता

गोला (रामगढ़) : कोटा बूंदी(राजस्थान) से तीन बार के निर्वाचित सांसद ओम बिरला को ध्वनि मत से 18वीं लोकसभा का अध्यक्ष चुन लिया गया। उनके लोकसभा अध्यक्ष चुने जाने पर भारतीय जनता पार्टी की रामगढ़ जिला कमिटी परिवार ने खुशी का इजहार करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी। मौके पर भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता ने कहा कि देश ने फिर एक बार इतिहास बनते देखा जब ध्वनि मत से ओम बिरला दुबारा लोकसभा अध्यक्ष के लिए निर्वाचित हुए। उनके 17 वीं लोकसभा की कार्यवाही चलाने के अनुभव से भारत के निचली सदन को बहुत लाभ मिलेगा और लोकसभा के हित की रक्षा होगी। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह

मंत्री अमित शाह की रणनीति की जीत है। जीत की बधाई देते हुए जिले के वरिष्ठ नेता राकेश प्रसाद, अविनेश कुमार, रंजीत कुमार सिन्हा, अमरेन्द्र कुमार गुप्ता, रणंजय कुमार उर्फ कुंदू बाबू, डॉ संजय प्रसाद सिंह, डॉ संजय कुमार सिंह (पतरातु), चंद्रशेखर चौधरी, इला रानी पाठक, राजू चतुर्वेदी, बलराम महतो, सरिता ठाकुर, आनन्द बेदिया, अखिलेश प्रसाद, स्नेह लता चौधरी, प्रो. खिरोधर साहू, रंजन फौजी, राजू कुशवाहा, रमेश वर्मा, दिलीप सिंह, किरण देवी, बसुध तिवारी, सुरेन्द्र करमाली, दीनदयाल कुमार, राजीव पामदत्त, भीम सेन चौहान, संतोष कुमार शर्मा, प्रवीण कुमार सोनु, धीरज साहू, राकेश पांडा, सोनू कुमार शौर्य, लक्ष्मी देवी, नर्मेद्र चंचल, अमितेश कुमार सिंह, सनी कुशवाहा, विनोद कुमार, कुमेल उरांव, सैय्यद किरमानी, उमेश प्रसाद, रंजीत पांडेय, जगेश्वर प्रजापति, विजय जायसवाल, महेन्द्र प्रजापति, सुबोध सिंह, वरुण कुमार सिंह, सहदेव ठाकुर, प्रो. आलोक सिंह, सुखदेव प्रसाद, योगेश दांगी, राजीव जायसवाल, युगेश महतो, मनोज जायसवाल, संतराज पासवान, सूर्यवंश श्रीवास्तव, मनोज गिरि, संजय साह, अशोक कुमार, बबलू साव, नरेश कुमार, गणेश प्रसाद स्वर्णकार, राजाराम प्रजापति, सतीश मोहन मिश्रा, सागर दांगी, टोकेश सिंह, राजेश कुमार, राजेश ठाकुर,रोबिन गुप्ता, धनंजय कुमार पुटूस, सौरव जायसवाल, सुमित कुमार, संजय अग्रवाल, रूपा देवी, अमिता सोनी, सारिका राठौड़, शीतल सिंह, रीति श्रीवास्तव, स्नेहा गुप्ता, मनोज कुमार सिंह, महेश चौधरी, ब्रजेश पाठक, विजय ओझा, संतोष कुमार शाह, सुरेन्द्र कुमार शर्मा, इंद्रदेव साव , मच्छेंद्र कुमार, पी एन सिंह, मोहन पांडेय, सरदार अनमोल सिंह, अरुण कुमार गणौरी, शिव कुमार महतो,, जगदीश शर्मा,महेंद महतो, मनोज महतो, सुनील प्रसाद रवि कुमार सिन्हा, त्रिलोचन प्रजापति सहित भारतीय जनता पार्टी के बूथ अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को धन्यवाद देते हुए आभार जताया।

डॉ. पीटी उषा ने एशियाई खेलों के कार्यक्रम में योगसन खेल को शामिल करने की पहल की

रांची : वर्ल्ड योगासन के अध्यक्ष परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के मार्गदर्शन में वर्ल्ड योगासन के महासचिव डॉ. जयदीप आर्य तथा एशियन योगासन के अध्यक्ष डॉ संजय मालपानी जी, महासचिव उमंग डॉन जी, योगासन भारत के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री उदित सेठ जी एवं कोषाध्यक्ष श्री रचित कौशिक जी ने डॉ पीटी उषा जी के योगासन खेल को एशिया ओलिंपिक परिषद् में सम्मिलित करने के प्रस्ताव का हृदय से स्वागत किया' इस अवसर पर उन्होंने भारत के माननीय प्रधानमन्त्री, माननीय खेल मंत्री, माननीय आयुष सचिव, माननीय खेल सचिव एवं भारतीय खेल प्राधिकरण के माननीय महानिदेशक का भी अभिनन्दन करते हुए उनका आभार ज्ञापन किया कि उन सबके प्रयासों से ही योगासन के खिलाड़ियों को यह अवसर प्राप्त हो रहा है कि उनका खेल अब एशिया और ओलिंपिक की ओर अग्रसर हो गया है' हम सब 3 लाख योगासन खिलाड़ियों की ओर से और योगासन खेल के सभी कोच, प्रबंधक और अभिभावकों की ओर से भारत सरकार का अभिनन्दन करते हैं, विशेषतः भारतीय ओलिंपिक संघ की अध्यक्षा और ओलिंपिक संघ, भारत का अभिनन्दन और धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। डॉ पी.टी उषा जी भारत की एक जानी-मानी धाविका हैं, साथ ही शिरोमणि संस्था भारतीय ओलिंपिक संघ की अध्यक्ष भी हैं' उन्होंने गोवा में आयोजित हुए 37वें राष्ट्रीय खेलों के दौरान योगासन प्रतियोगिता को देखते हुए यह आश्वासन दिया था कि वह योगासन खेल को एशियाई पटल पर स्थापित करने के लिए प्रयास करेंगी' इसी क्रम में भारतीय ओलंपिक संघ द्वारा एशियाई ओलम्पिक परिषद् में योगासन खेल को सम्मिलित करने के प्रस्ताव हेतु वर्ल्ड योगासन एवं योगासन भारत के महासचिव डॉ जयदीप आर्य जी ने स्वागत किया। भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष डॉ. पी.टी उषा ने आज एशियाई खेलों के कार्यक्रम में योगासन खेल को शामिल करने की जोरदार वकालत की। एशियाई ओलंपिक परिषद के अध्यक्ष राजा रणधीर सिंह को एक भावपूर्ण पत्र में, उन्होंने एशियाई खेल समुदाय से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले प्राचीन भारतीय अनुशासन को शामिल करने का आग्रह किया।

डॉ. उषा ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दृष्टिकोण के कारण दुनिया ने योग को अपनाया है। उन्होंने कहा, दुनिया ने 21 जून को 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया और इसकी सार्वभौमिक अपील पर जबरदस्त प्रतिक्रिया रही है। देश भर के लोगों ने योग को अपनाया है और लाभ प्राप्त किया है।

उन्होंने कहा कि खेल के सबसे बड़े समारोहों में योगासन को शामिल करने के प्रयासों का नेतृत्व करना भारत के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास है कि योग एवं योगासन के आध्यात्मिक घर और विश्वगुरु के रूप में, भारत एशियाई खेलों और अंततः ओलंपिक खेलों में भी इस खेल को शामिल करने के लिए अभियान चला सकता है। उन्होंने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि पेरिस में प्रसिद्ध लूव्र संग्रहालय अगले महीने ओलंपिक से पहले आगंतुकों को प्रशिक्षकों के साथ योग सत्र में भाग लेने का मौका देगा। उन्होंने कहा, ¤यह खुशी की बात है कि लूव्र योग का स्वागत कर रहा है। एशियाई खेलों और ओलंपिक खेलों में इसे शामिल कराकर इस खेल को पहचान दिलाना हमारी जिम्मेदारी है। आईओए अध्यक्ष ने कहा कि केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मंडाविया एशियाई खेलों में योगासन के लिए मामला बनाने के विचार के लिए बहुत प्रोत्साहित और सराहना कर रहे थे। डॉ. उषा ने कहा, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें लगता है कि एशियाई खेलों में शामिल किया जाना इस खेल को ओलंपिक में ले जाने की दिशा में पहला कदम होगा। हमें अपने स्वदेशी खेल को ऐसे मंचों पर लाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, ¤एक खेल के रूप में योगासन प्रसारकों के लिए एक बहुत ही आकर्षक प्रस्ताव हो सकता है। योगासन खेलो इंडिया गेम्स का एक हिस्सा रहा है। इसकी सफलता को देखते हुए, गोवा में राष्ट्रीय खेलों के आयोजकों ने मल्लखंभ और योगासन को नेशनल गेम्स में शामिल किया। मुझे यकीन है कि एशियाई ओलंपिक परिषद योगासन खेल को सम्मिलित कर मेरा प्रस्ताव स्वीकार करते हुए भारत की इस खेल विधा को सम्मान देगी। इस बड़ी उपलब्धि पर झारखंड योगासन स्पॉट संगठन के अध्यक्ष संजय सिंह महासचिव विपिन कुमार पांडे कोषाध्यक्ष मनोज तिवारी सरस्वती सुधा झा राज्य कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने एवं जिला कमेटी के सभी सदस्यों ने बधाई दी एवं झारखंड में भी इस खेल को अब और नई पहचान और नया मुकाम मिलेगा इसी भावना के साथ राजा स्तरीय योग एक्सीलेंस सेंटर स्थापना का संकल्प लिया गया।

घर में पालना चाहते हैं तोता, तो रखें वास्तु शास्त्र के नियमों का ध्यान

वास्तु शास्त्र में घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए विस्तार से बताया है कि कौन सी वस्तु को किस स्थान पर रखना चाहिए। यहां तक वास्तु शास्त्र में पशु-पक्षियों को घर में रखने के नियम बताए गए हैं। वास्तु शास्त्र के नियमों का पालन करने से घर में नकारात्मकता दूर होती है।

वास्तु शास्त्र में घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए विस्तार से बताया है कि कौन सी वस्तु को किस स्थान पर रखना चाहिए। यहां तक वास्तु शास्त्र में पशु-पक्षियों को घर में रखने के नियम बताए गए हैं। वास्तु शास्त्र के नियमों का पालन करने से घर में नकारात्मकता दूर होती है। कई लोगों को घर में तोता पालना अच्छा लगता है, लेकिन क्या आपको पता है कि यह घर के लिए शुभ है या नहीं।

वास्तु शास्त्र के अनुसार तोता पालना शुभ या अशुभ

वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि घर में तोता पालने से सकारात्मकता का माहौल बनता है। यह घर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर देता है। तोते का बोलने घर के लिए शुभ माना जाता है।

तोता को घर में रखनी की दिशा

वास्तु शास्त्र के नियमों को मानें तो तोते को उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ रखा जा सकता है। उत्तर दिशा बुध ग्रह की दिशा होती है। बुद्ध बुद्धि के प्रतीक समझें जाते हैं। ऐसे में इस दिशा में तोते को रखने से बच्चों का पढ़ाई में मन लगा रहेगा। पूर्व दिशा को माना जाता है कि वह सूर्य की दिशा है। सूर्य शक्ति और सफलता के प्रतीक हैं। ऐसे में इस दिशा में तोता रखने से आपके घर में समृद्धि का वास होगा।

पिंजरे में तोता रखना सही या गलत

तोता को पिंजरे में रखने के बाद यह जरूर देखें कि वह खुश तो है। ऐसा माना जाता है कि तोता अगर पिंजरे में रहना पसंद नहीं करता है, तो घर से खुशियां चली जाती हैं। यह आपके घर में नकारात्मकता का माहौल बना देगी।

कब है कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी शुभ मुहूर्त और महत्व

चतुर्थी के दिन गणेश जी का पूजन किया जाता है। बप्पा को प्रसन्न करने के लिए यह दिन खास होता है। आय, सुख और सौभाग्य में अपार वृद्धि होती है। भगवान गणेश के साथ-साथ इस दिन चंद्रमा की पूजा का भी विधान है। चंद्रमा की पूजा के बिना ये व्रत अधूरा माना जाता है।

मान्यताओं के अनुसार, आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। हर चतुर्थी तिथि भगवान गणेश को समर्पित होती है, इसलिए इस दिन भी विधि-विधान से बप्पा की पूजा की जाती है। साथ ही व्रत भी रखा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान गणेश की आराधना करने से जीवन में व्याप्त सभी संकट दूर होते हैं। यह चतुर्थी कृष्ण पक्ष में पड़ती है, इसलिए इसे कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी कहा जाता है।

कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी तिथि

पंचांग के अनुसार, इस साल आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि मंगलवार को पड़ रही है। इस तरह कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी 25 जून 2024 को मनाई जाएगी। कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी की तिथि 25 जून 2024 को रात 1.23 से प्रारंभ होगी, जो रात 11.10 तक रहेगी। इस दिन भगवान गणेश की पूजा के लिए शुभ समय सुबह 5.30 से 7.08 तक रहेगा। वहीं, शाम में 5.36 से रात 8.36 बजे तक शुभ मुहूर्त रहेगा।

इस तिथि पर भगवान गणेश की विशेष पूजा करने से सभी प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्टों से छुटकारा मिलता है। चतुर्थी तिथि के दिन चंद्र देव की भी पूजा की जाती है। यह महत्वपूर्ण होती है। रात के समय चंद्रमा की पूजा की जाती है और इसके बाद व्रत खोला जाता है। संकष्टी चतुर्थी के दिन चंद्रोदय रात 11.27 पर होगा।

कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी पूजा विधि

- कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए।
- फिर व्रत का संकल्प करें। सूर्य देव को अर्घ्य दें।
- इसके बाद मंदिर की साफ-सफाई करें।
- फिर एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर भगवान गणेश की मूर्ति या चित्र स्थापित करें। भगवान को हल्दी और कुमकुम का तिलक लगाएं।
- चावल और फूल चढ़ाएं। घी का दीपक जलाएं।
- बप्पा को मोदक, मिठाई और फल का भोग लगाएं।
- भगवान गणेश के मंत्रों का जाप करें।

शुक्र ग्रह कमजोर होने पर घट जाती है सुंदरता ऐसे करें मजबूत

शुक्र ग्रह को सुंदरता का कारक माना जाता है। शुक्र यदि कमजोर हो तो सुंदरता घट जाती है। यदि कुछ उपाय किए जाए जो शुक्र ग्रह को कुंडली में मजबूत किया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में नव ग्रहों का विशेष स्थान दिया गया है। प्रत्येक ग्रह के अपने अलग-अलग कारक होते हैं। साथ ही ग्रहों का जातकों के जीवन में भी अलग-अलग असर पड़ता है। शुक्र ग्रह का भी ज्योतिष में विशेष महत्व बताया गया है। शुक्र कमजोर हो, तो आंखों में परेशानी होने लगती है। साथ ही मधुमेह की बीमारी हो सकती है। शुक्र ग्रह को महिलाओं के लिए काफी शुभ माना गया है। इस ग्रह को महिलाओं की सुंदरता से जोड़कर देखा जाता है। माना जाता है कि जिस महिला की कुंडली में शुक्र शुभ होता है, वे काफी सुंदर होती हैं। वहीं जब शुक्र कमजोर हो तो इसका शरीर पर नकारात्मक असर भी पड़ सकता है। यहां आपको बताते हैं शुक्र कमजोर होने के क्या संकेत है और इसे कैसे मजबूत किया जा सकता है।

शुक्र कमजोर होने के क्या संकेत है

- चेहरे पर मुंहासों का अचानक निकलना शुक्र के कमजोर होने का संकेत माना जाता है।
- चेहरे पर इंफेक्शन भी शुक्र कमजोर होने का संकेत है।

ऐसे मजबूत करें शुक्र ग्रह

- शुक्रवार के दिन सफेद रंग के कपड़े पहनने चाहिए
- सफेद रंग की वस्तुओं का दान करना शुभ होता है
- शुक्र यंत्र को घर में स्थापित करना चाहिए
- सफेद गाय को चारा खिलाने से शुक्र के प्रकोप से मुक्ति मिलती है
- केमिकल वाले परफ्यूम की जगह प्राकृतिक महक वाले इत्र का इस्तेमाल करना चाहिए
- गंदे और फटे-पुराने कपड़े पहनने से शुक्र ग्रह अशुभ फल देता है। ऐसे में इस तरह के कपड़े पहनने से बचना चाहिए।

शनिदेव को नाराज कर सकती हैं अनजाने में हुई ये गलतियां

शनिदेव व्यक्ति के अपराधों की सजा महादशा, ढैया या साढ़ेसाती के दौरान देते हैं। शनिदेव की वक्र दृष्टि से वही जातक बच पाता है जिसने निम्नलिखित 8 में से कोई भी कार्य नहीं किया हो। कहते हैं कि शनिदेव की नाराजगी व्यक्ति को एक झटके में बर्बाद कर देती है। यदि आप भी ये 8 गलतियां कर रहे है तो सतर्क हो जाए। शनिदेव डालते हैं इन पर अपनी वक्र दृष्टि :

- यदि आप ब्याज का धंधा करते हैं तो एक ना एक दिन आप पर शनिदेव की वक्र या कहें कि तिरछी दृष्टि पड़ेगी और बर्बादी शुरु हो जाएगी।
- यदि आप अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य महिला से संबंध रखते हैं तो निश्चित ही एक दिन शनिदेव की वक्री दृष्टि पड़ेगी और बर्बादी शुरु हो जाएगी।
- यदि आप नियमित शराब पीते हैं और खासकर मंगलवार, गुरुवार, शनिवार, प्रदोष काल, एकादशी, चतुर्थी, अमावस्या, पूर्णिमा के दिन शराब पीते हैं तो बहुत जल्द आप शनिदेव की दृष्टि की चपेट में आएंगे।
- यदि आप किसी गरीब, सफाईकर्मी, दिव्यांग, विधवा, अबला आदि को सताते हैं या उनका अपमान करते हैं तो आप तैयार रहें शनि का दंड भुगतने के लिए।
- यदि आप धर्म, देवता, गुरु, पिता और मंदिर का अपमान करते हैं या किसी भी रूप में उनका मजाक उड़ाते हैं तो दंडनायक के दंड का इंतजार करें बहुत जल्द वे हिसाब किताब पूरा कर देंगे।
- यदि आप जुआ या सट्टा खेलते हैं तो पांडवों की तरह वनवास भुगतने या कौरवों की तरह नाश होने के लिए तैयार रहें। आपके जीवन में घटना और दुर्घटना के योग बढ़ जाएंगे।
- अप्राकृतिक रूप से संभोग करना, लिव इन रिलेशनशिप में रहना, अवैदिक विवाह करना और पत्नी को सताने वाला बहुत जल्द शनि की क्रूर दृष्टि की चपेट में आ जाता है।
- झूठी गवाही देना, निर्दोष लोगों को सताना, किसी के पीठ पीछे उसके खिलाफ कोई कार्य करना, चाचा-चाची, माता-पिता, सेवकों और गुरु का अपमान करना, ईश्वर के खिलाफ होना, दांतों को गंदा रखना, तहखाने की कैद हवा को मुक्त करना, भैंस या भैंसों को मारना, सांप, कुत्ते और कौवों को सताना इन सभी से शनिदेव नराज होकर व्यक्ति के जीवन को खराब कर देते हैं।
- शनिदेव से बचने का इस कलयुग में मात्र एक ही उपाय है हनुमानजी की भक्ति करना।

भगवान विष्णु की यह शर्त पूरी नहीं कर पाई थीं देवी लक्ष्मी, धारण करना पड़ा था गरीब स्त्री का रूप

भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी से जुड़ी एक पौराणिक आज भी प्रचलित है, जिसके मुताबिक माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु धरती पर भ्रमण के लिए निकले थे। देवी लक्ष्मी के कारण भगवान विष्णु की आंखों से अश्रु बहने लगे थे। इसके कारण देवी मां को सजा भी भुगतनी पड़ी थी।

गुरुवार का दिन भगवान विष्णु को समर्पित होता है। इस दिन भगवान विष्णु की विशेष पूजा की जाती है। साथ ही उनके निमित्त व्रत भी रखा जाता है और गुरुवार व्रत कथा का पाठ भी किया जाता है। भगवान विष्णु को पीला रंग प्रिय है। ऐसे में इस दिन पीले वस्त्र पहनने चाहिए। साथ ही भगवान को पीले रंग की मिठाइयों का भोग भी लगाना चाहिए। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं प्रचलित है। कहा जाता है कि एक बार देवी लक्ष्मी के शर्त न मानने के कारण भगवान विष्णु की आंखों से अश्रु बहने लगे थे।

भगवान विष्णु ने रखी थी शर्त

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार श्रीहरि पृथ्वी भ्रमण पर निकले थे। तब देवी लक्ष्मी ने उनसे कहा कि वह भी उनके साथ जाना चाहती हैं। तब विष्णु जी ने कहा कि वे केवल एक शर्त पर ही उनके साथ जा सकती हैं। जब लक्ष्मी जी ने शर्त पूछी तो विष्णु जी ने कहा कि पृथ्वी पर चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, उन्हें उत्तर दिशा की ओर नही देखना है। लक्ष्मी जी ने शर्त स्वीकार कर ली और श्रीहरि के साथ चली गईं।

दोनों धरती पर घूम रहे थे, देवी की नजर उत्तर दिशा में पड़ी। वहां इतनी हरियाली थी कि देवी लक्ष्मी बगीचे की ओर चल पड़ीं। उन्होंने वहां से एक फूल तोड़ा और विष्णु जी के पास आ गईं। लक्ष्मी जी को देखते ही विष्णु जी रोने लगे। तब मां लक्ष्मी को विष्णु जी की शर्त याद आई। श्रीहरि ने कहा कि बिना किसी से पूछे किसी भी वस्तु को छूना अपराध माना जाता है। यह सुनकर देवी लक्ष्मी ने अपनी गलती का अहसास किया। उन्होंने माफी मांगी। श्री हरि ने कहा कि केवल बगीचे का माली ही उन्हें माफ कर सकता है। लक्ष्मी जी को माली के घर दासी बनकर रहना होगा। यह सुनकर लक्ष्मी जी तुरंत एक गरीब स्त्री का रूप धारण करके माली के घर चली गईं।

देवी लक्ष्मी ने दिया माली को आशीर्वाद

माली ने देवी लक्ष्मी से कई तरह के काम करवाए। जब माली को पता चला कि वह मां लक्ष्मी हैं, तो वह रोने लगा। उसने देवी लक्ष्मी से कहा कि जो कुछ भी उसने किया, उसके लिए उसे माफ कर दें। तब लक्ष्मी जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि जो कुछ हुआ वह भाग्य था। इसमें किसी का दोष नहीं है। लेकिन माली ने लक्ष्मी जी को अपने परिवार का सदस्य माना, इसलिए उन्होंने जीवनभर के लिए उसे सुख-समृद्धि का आशीर्वाद दिया। जिसके बाद वे विष्णु लोक लौट आईं।

नरेंद्र मोदी 3.0 में भी हाइवे और एक्सप्रेसवे पर जोर

गडकरी के मंत्रालय ने रखा 30,000 किलोमीटर का प्लान

नईदिल्ली, एजेंसी। नरेंद्र मोदी सरकार अपने दो कार्यकालों के रिपोर्ट कार्ड में हाइवेज और एक्सप्रेसवे के निर्माण को गिनाती है। यूपी, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में तेजी से इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार भी हुआ है। अब तीसरे कार्यकाल में भी सरकार इन्फ्रा पर फोकस करना चाहती है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने कैबिनेट से 22 लाख करोड़ रुपये के निवेश की मंजूरी मांगी है। मंत्रालय का कहना है कि वह 2031-32 तक देश में 30,600 किलोमीटर हाईवे बनाएगा। यह प्लान वित्त मंत्रालय को सौंपा गया है और सभी अहम मंत्रालयों के साथ साझा किया गया है। इस प्लान के अनुसार देश भर में 18 हजार किलोमीटर एक्सप्रेसवे और हाई स्पीड कॉरिडोर बनाने की तैयारी है। इसके अलावा शहरों के आसपास 4000 किलोमीटर हाईवेज को जाममुक्त करने का भी प्लान है। वहीं सीमांत इलाकों में भी सड़क बनाने की योजनाएं हैं, जो रणनीतिक लिहाज से बेहद अहम है। मंत्रालय की योजना के मुताबिक इसमें 25 फीसदी रकम प्राइवेट सेक्टर से आएगी। सड़क परिवहन मंत्रालय के मुताबिक दो चरणों में योजना तैयार की गई है। पहले राउंड के तहत 2028-29 तक सारे टेंडर जारी हो जाएंगे और उन पर काम 2031 तक पूरा कर लिया जाएगा। इन प्रोजेक्ट्स में 22 लाख करोड़ रुपये की पूंजी लगेगी। रिपोर्ट के मुताबिक मंत्रालय ने सालाना 10 फीसदी बजट आवंटन बढ़ाने की मांग की है ताकि परियोजनाओं को पूरा किया जा सके। बता दें कि सरकार ने अंतरिम बजट में हाईवेज मिनिस्ट्री को 2.78 लाख करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया था। यह बीते वित्त वर्ष की तुलना में 2.7 फीसदी अधिक था। सड़क परिवहन मंत्रालय ने दूसरे चरण की जो योजना तैयार की है, उसके तहत 28,400 किलोमीटर हाईवे बनेगा। इस प्लान के तहत पूरी कार्ययोजना और टेंडर का काम 2033-34 तक निपटा लिया जाएगा और इन पर काम 2036-37 तक निपटा लिया जाएगा।

नितिन गडकरी के कामकाज की होती रही है तारीफ

हालांकि इसके बारे में अभी किसी फंड की मांग नहीं की गई है। पहले चरण का काम पूरा होने के बाद ही इस पर फोकस किया जाएगा। बता दें कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के कामकाज की तारीफ होती रही है। वह मोदी सरकार के उन मंत्रालयों में से एक रहे हैं, जिनके रिपोर्ट कार्ड की चर्चा होती रही है। ऐसे में सरकार भी चाहती है कि हाइवेज पर काम तेजी से जारी रहे।

संक्षिप्त समाचार

एनसीआर में आवास योजना के तहत 1600 से अधिक लोगों को मिलेंगे मुफ्त प्लॉट

नईदिल्ली, एजेंसी। सरकार की मुफ्त आवास योजना के तहत अब एनसीआर के डेढ़ हजार से अधिक लोगों को प्लॉट मिलेंगे। इसके लिए सोमवार को निकाले गए ड्रॉ में 1677 आवेदकों का नाम निकालने से उन्हें बड़ी खुशखबरी मिली है। हरियाणा में मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के प्रथम चरण के तहत सोमवार को फरीदाबाद से सटे पलवल जिले में विधवा श्रेणी, घुमंतु और अनुसूचित जाति के आवेदकों को दिए जाने वाले प्लॉट का ड्रॉ अतिरिक्त उपायुक्त ब्रह्मजीत सिंह रांगी ने निकाला। जिला के 1677 आवेदकों का ड्रॉ में नाम निकाला गया।उपायुक्त ब्रह्मजीत सिंह रांगी ने सोमवार को ड्रॉ प्रक्रिया शुरू करवाई। इस दौरान बड़ी स्क्रीन के माध्यम से लाभार्थियों को ड्रॉ ऑफ लॉट्स की ऑनलाइन प्रक्रिया को दिखाया गया। लाभार्थियों को यह प्लॉट जिला के अगवानपुर गांव में उपलब्ध करवाएं जाएंगे। इस ड्रॉ के माध्यम से हाउसिंग फॉर ऑल विभाग द्वारा मुख्यमंत्री शहरी आवास योजना के तहत गरीब पात्र लोगों को 30-30 वर्ग गज के प्लॉट आवंटित किए जाएंगे।जिला के विधवा श्रेणी, घुमंतु और अनुसूचित जाति के 1677 लाभार्थी इस योजना के तहत चुने गए है। 26 जून को पलवल के नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम में लाभार्थियों को प्लॉट अलॉटमेंट के लेटर दिए जाएंगे। योजना के पात्र व्यक्तियों में एक लाख 80 हजार रुपये से कम आमदनी वाले शहरी परिवार शामिल है। गौरतलब है कि, हरियाणा सरकार शहरी और ग्रामीण इलाकों में रहने वाले गरीबों को मुफ्त प्लॉट दे रही है। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बीते दिनों कहा था कि शहरी और ग्रामीण इलाकों में गरीबों को मुफ्त प्लॉट दिए जाएंगे। ग्रामीण इलाके में इसका लाभ एक लाख रुपये से कम आमदनी वाले लोगों को मिलेगा और शहर में जिनकी आमदनी एक लाख 80 हजार रुपये से कम है, वह सरकार की इस योजना का लाभ उठा सकेंगे।

दिल्ली में गर्मी का सितम! हीटस्ट्रोक के कारण 72 मरीज अस्पतालों में भर्ती

नईदिल्ली, एजेंसी। राजधानी के अलग-अलग अस्पतालों में हीट स्ट्रोक के 72 मरीज अभी भी भर्ती है। इनमें से कई गंभीर मरीज वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं। सफदरजंग अस्पताल में हीट स्ट्रोक के कुल 15 मरीज भर्ती है। इनमें से 10 मरीज बेहद गंभीर है या वेंटिलेटर सपोर्ट पर है। इसी तरह राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती 14 मरीजों में से सात मरीज वेंटिलेटर सपोर्ट पर है। लोकनायक अस्पताल में रविवार तक हीट स्ट्रोक के कुल 13 मरीज भर्ती थे। इनमें से छह मरीज गंभीर हालत में हैं। इसके अलावा बाबा साहेब अंबेडकर अस्पताल में रविवार तक कुल 15 हीट स्ट्रोक के मरीज भर्ती थे। दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में रविवार तक हीट स्ट्रोक के कुल नौ मरीज भर्ती थे। अस्पतालों में भर्ती अधिकतर मरीज मजदूर या ऐसे लोग है जो गर्मी में बाहर काम करते है। अन्य मरीजों में बुजुर्ग और बच्चे शामिल है। देरी से इलाज कराने वाले ज्यादा गंभीर एम्स के मेडिसिन विभाग के एडिशनल प्रोफेसर डॉक्टर नीरज निश्चल ने कहा कि ऐसा नहीं है हीट स्ट्रोक के सभी मरीज गंभीर होते है, लेकिन जब मरीज शुरुआती लक्षण नजरअंदाज करता है तो गर्मी का असर उसके शरीर के अंगों पर होने लगता है। किसी की किडनी पर असर होता है तो किसी के दिल पर इसका असर होता है। ऐसे में लक्षण होने के बावजूद भी लापरवाही करना लोगों को गंभीर बीमार का देता है।डॉक्टर नीरज निश्चल के मुताबिक अधिकतर मामलों में हीट स्ट्रोक तब होता है जब आपका शरीर उच्च तापमान में अत्यधिक परिश्रम के कारण ज्यादा गर्म हो जाता है। इस स्थिति में आपातकालीन उपचार की आवश्यकता होती है। हालांकि, गर्मी में बिना परिश्रम करने वाले ऐसे लोगों को भी हीट स्ट्रोक हो सकता है, जिनके शरीर में पानी की कमी हो जाती है।अस्पताल प्रशासन को कई बार इस संबंध में अवगत कराया गया, लेकिन कोई कदम नहीं उठाया गया है। वहीं, आचार्य भिक्षु अस्पताल की ओपीडी में भी एसी खराब है। हिंदू राव अस्पताल में सर्जिकल और आंखों की ओपीडी में लगे सभी 15 एसी खराब है। यहां हर दिन दो हजार से अधिक लोग उपचार के लिए आते है। मरीजों ने बताया कि अस्पताल में मरम्मत कार्य किया जा रहा है। पिछले आठ माह से यह काम चल रहा है। इसे जल्द से जल्द खत्म करने की भी मांग की गई, लेकिन इस पर भी अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे लोनी बॉर्डर तक रहेगा टोल फ्री, 3 राज्यों को होगा सीधा

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर फर्राटा भरने का इंतजार कर रहे लोगों के लिए गुड न्यूज है। इस एक्सप्रेसवे पर अक्षरधाम से लोनी बॉर्डर तक कोई टोल टैक्स नहीं चुकाना होगा। शुरुआत के करीब 18 किलोमीटर के हिस्से में टोल वसूली नहीं होगी, लेकिन उसके आगे सफर की दूरी के हिसाब से टोल चुकाना होगा। यह एक्सप्रेसवे दिल्ली, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को सीधा फायदा पहुंचाएगा। इसके खुलने के बाद पूर्वी दिल्ली के कई हिस्सों में जाम से राहत मिल सकती है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने टोल वसूली से जुड़े नियमों को निर्धारित कर दिया है। अथॉरिटी से जुड़े अधिकारियों ने बताया कि अब जल्द ही टोल टैक्स की दरों को लेकर भी फैसला कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिल्ली से बागपत (खेकड़ा) के बीच टोल की दरें औसत से ज्यादा रहने की संभावना है, क्योंकि यहां एक्सप्रेसवे का 90 फीसदी हिस्सा एलिवेटेड है, जिसमें लागत काफी ज्यादा आती है। सामान्य तौर पर एनएचएआई 2.75 रुपये प्रति किलोमीटर के हिसाब से टोल वसूलता है, लेकिन यहां पर उससे ज्यादा टोल दरें रह सकती हैं।दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे पर अक्षरधाम से बागपत के खेकड़ा तक के बड़े हिस्से में लोड टेस्टिंग का काम शुरू कर दिया गया है। टेस्टिंग के बाद मंत्रालय से हरी झंडी मिलते ही एक्सप्रेसवे का यह हिस्सा यातायात के लिए खोल दिया जाएगा। संभावना है कि 30 जुलाई से पहले यातायात शुरू कर दिया जाए। एनएचएआई के अधिकारी बताते है कि, अभी सिर्फ 32 किलोमीटर लंबे पहले चरण के दो पैकेज को यातायात के लिए खोला जाना है, लेकिन टोल से जुड़े नियम पूरे एक्सप्रेसवे के लिए निर्धारित कर दिए गए है। 210 किलोमीटर लंबे एक्सप्रेसवे को एक कॉरिडोर मानते हुए फैसला लिया गया है कि एक ही एजेंसी टोल वसूलने का काम करेगी।

जून की कमी जुलाई में पूरी करेगा मॉनसून, ला नीना के कारण होगी मूसलाधार बारिश

नईदिल्ली, एजेंसी। लाखों लोगों को चिलचिलाती गर्मी का सामना कर पड़ा रहा है। किसानों को सिंचाई के लिए अपने खेतों में पानी का इंतजार है। इस बीच भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने अपने नए पूर्वानुमान में कहा है कि मॉनसून 3 जुलाई तक पूरे देश में फिर से बढ़ना शुरू करेगा और उत्तर-पश्चिम भारत में बरसने लगेगा। इससे दिल्ली के साथ-साथ पंजाब और हरियाणा जैसे कृषि प्रमुख राज्य शामिल हैं। आपको बता दें कि 11 जून के बाद से मॉनसून की रफ्तार सुस्त हो चुकी है। गुरुवार को मध्य भारत के कुछ हिस्सों में ही यह थोड़ा आगे बढ़ी है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव एम रविचंदन ने कहा, हमें जुलाई के पहले सप्ताह के आसपास अच्छी रिकवरी की उम्मीद है और जून से हुई कमी उस अवधि के दौरान पूरी हो जाएगी।

अगले 3-4 दिनों में यहां होगी बारिश: अगले 3-4 दिनों के दौरान मॉनसून के गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, गंगा के तटीय पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल के शेष हिस्सों, झारखंड के कुछ हिस्सों, बिहार के कुछ और हिस्सों और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ने की उम्मीद है। मौसम एजेंसी ने यह बी भविष्यवाणी की है कि 27 जून से यह उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत में जोर पकड़ेगा। आईएमडी के पूर्वानुमान में कहा गया है, इस दौरान पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र और पश्चिमी राजस्थान को छोड़कर देश के अधिकांश हिस्सों में बारिश की गतिविधि सामान्य से अधिक रहने की संभावना है।

ला नीना कराएगा भारी बारिश: आईएमडी ने यह भी कहा है कि वर्तमान में अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) की स्थितियां बनी हुई हैं। अगस्त के आसपास ला नीना विकसित होने की उम्मीद है। अल नीनो भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र का चक्रीय वार्मिंग है, जो दुनिया भर के मौसम पर एक व्यापक प्रभाव डालता है। भारत में यह आमतौर पर कमजोर मॉनसून के मौसम का कारण बनता है। ला नीना इसके विपरीत घटना है। इसके कारण भारतीय उपमहाद्वीप में अधिक बारिश होती है।

मौसम विज्ञानी एम राजीवन ने कहा, मॉनसून फिर से सक्रिय हो रहा है। जुलाई के पहले सप्ताह तक मॉनसून आ जाएगा। हमें अगले 2-3 सप्ताह तक अच्छी बारिश की उम्मीद करनी चाहिए। सामान्य से अधिक मॉनसून वाली बारिश होगी। हमें अगस्त में ला नीना के कारण सामान्य से अधिक बारिश की उम्मीद करनी चाहिए।

आपको बता दें कि मॉनसून की प्रगति लगभग नौ दिनों से रुकी हुई थी। शनिवार तक मॉनसून की उत्तरी सीमा नवसारी, जलगांव, मंडला, पेंड्रा रोड, झारसुगुड़ा, बालासोर, हल्दिया, पाकुर, साहिबगंज और रक्सौल से होकर गुजरी। आईएमडी को अगले 3-4 दिनों में उत्तरी अरब सागर, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में मॉनसून के आगे बढ़ने की उम्मीद है।

ब्राह्मणों और मुसलमानों को भी मिले ओबीसी कोटा, महाराष्ट्र में उठी नई मांग

मुंबई, एजेंसी। मराठा आरक्षण की मांग कर रहे मनोज जरांगे अब महायुति सरकार के सामने नई चुनौती पेश करते नजर आ रहे हैं। खबर है कि उन्होंने कुनबी रिकॉर्ड्स वाले ब्राह्मण और मुसलमानों समेत कई समुदायों को कोटा के लाभ देने की मांग रख दी है। पत्रकारों से बातीत के दौरान जरांगे ने साफ कर दिया है कि सरकार को अल्पसंख्यकों को हर हाल में कोटा देना ही होगा।

एक अखबार के मुताबिक, जरांगे ने कहा, मुसलमानों, मारवाड़ियों, लिंगायतों, ब्राह्मणों और कुनबी रिकॉर्ड्स वाले अन्य लोगों को आरक्षण का अधिकार है। ये उन समुदायों के सदस्यों पर निर्भर करता है कि उन्हें कोटा के फायदे चाहिए या नहीं। हालांकि, उन्हें आरक्षण का लाभ देना कानूनी है। साथ ही उन्होंने कहा कि लोहार और कुम्हार समुदायों के कुनबी रिकॉर्ड्स भी सामने आए हैं। साथ ही उन्होंने पात्र मुसलमानों को ओबीसी आरक्षण दिलाने के लिए दृढ़ रहने की बात कही है। खास बात है कि महायुति सरकार के लिए चुनौती इसलिए भी है, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी लगातार अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने का विरोध कर रही है। जबकि, उपमुख्यमंत्री अजित पवार की अगुवाई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शिक्षा में मुसलमानों के लिए कोटा का समर्थन करती है।

क्या बोले सीएम शिंदे

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शनिवार को कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि समाज में जातिगत तनाव नहीं फैले। यह बात उन्होंने मराठाओं और ओबीसी द्वारा आरक्षण पर अपने रुख को मजबूत करने की पृष्ठभूमि में कही। शिंदे ने ओबीसी कार्यकर्ता लक्ष्मण हाके और अन्य को सरकारी हस्तक्षेप के बाद अनिश्चितकालीन अनशन वापस लेने के लिए धन्यवाद दिया। शिंदे ने नासिक में संवाददाताओं से कहा, हम यह सुनिश्चित करेंगे कि समाज में कोई जातिगत तनाव नहीं फैले। ओबीसी कोटा कम न किए जाने की मांग को लेकर कार्यकर्ता हाके और नवनाथ वाघमारे 13 जून से अनशन पर थे।

कौन बनेगा भाजपा अध्यक्ष? आरएसएस की पसंद शिवराज और राजनाथ

नईदिल्ली, एजेंसी। मोदी सरकार 3.0 में जगत प्रकाश नड्डा के शामिल होने के बाद भाजपा अध्यक्ष कौन बनेगा? इस पर अभी तक पार्टी ने कोई फैसला नहीं लिया है। आगामी 30 जून नड्डा का कार्यकाल भी समाप्त हो रहा है। पार्टी नेतृत्व भाजपा चीफ के लिए आरएसएस से भी संपर्क में है। सूत्रों का कहना है कि आरएसएस केंद्रीय मंत्री राजनाथ या शिवराज सिंह चौहान में से से किसी एक को भाजपा अध्यक्ष के तौर पर देखना चाहता है। संघ परिवार यह भी चाहता है कि इसके लिए इन दोनों में से एक केंद्रीय पद छोड़े और भाजपा चीफ का पद संभाले। दूसरी तरफ पीएम मोदी और अमित शाह की पसंद कोई और है।

देश की सबसे बड़ी पार्टी के मुखिया पद पद पर कौन आसीन होगा? इस पर अभी भी सस्पेंस बना हुआ है। वर्तमान में भाजपा की कमान संभाल रहे जेपी नड्डा का कार्यकाल 30 जून को समाप्त हो रहा है। न्यू इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट है कि आरएसएस केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह और शिवराज सिंह चौहान में से किसी एक को इस पद के लिए ज्यादा सही मानता है। संघ चाहता है कि इन दोनों मंत्रियों में से कोई एक सरकार से इस्तीफा देकर पार्टी अध्यक्ष का पद संभाले।

मोदी और शाह की पसंद कौन है?

रिपोर्ट के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह राजनाथ और शिवराज में से किसी को भाजपा अध्यक्ष पद के लिए जाने नहीं देना चाहते। वे पार्टी के किसी प्रभावी पदाधिकारी को शीर्ष पद पर बैठाना चाहते हैं। उनके पसंदीदा नेताओं में राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े और सुनील बंसल हैं। ये दोनों नेता पार्टी में ऊंचे पद संभाल चुके हैं। दोनों में पार्टी चलाने का अनुभव भी है और संगठन में अपनी योग्यता भी साबित कर चुके हैं। इनमें से किसी एक की पार्टी प्रमुख के तौर पर नियुक्ति होने की भी उम्मीद है।

उलझन बढ़ने पर फिर वापसी करेंगे नड्डा?

सूत्रों ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी राजनाथ और शिवराज दोनों में से किसी को भी पार्टी पद की जिम्मेदारी देने के बजाय तावड़े या सुनील बंसल में से एक को पार्टी का नियंत्रण देना चाहते हैं। जल्द ही तावड़े या बंसल में से किसी एक को कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने की भी संभावना है। यह भी रिपोर्ट है कि आरएसएस संग मतभेदों से बचने के लिए पार्टी नड्डा को एक छोटा विस्तार भी दे सकती है।

ट्रेनों की सुरक्षित आवाजाही पर रेलवे का जोर

रेल मंत्री ने कवच सिस्टम को लेकर दिया बड़ा आदेश

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय रेलवे ने स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली कवच का नया वैरिएंट कवच 4.0 डेवलप किया है। ट्रायल हो जाने के बाद इसे शीघ्र ही लगाना शुरू किया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कवच की प्रगति की समीक्षा की, जिसमें अधिकारियों ने कवच के संस्करण 4.0 की प्रगति के बारे में बताया। साथ ही, वैष्णव ने निर्देश दिया कि कवच 4.0 तैयार होते ही सभी लोको पर मिशन मोड में योजनाबद्ध तरीके से कवच की स्थापना की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि इंस्टालेशन की प्रक्रिया में मौजूद मौजूदा सिस्टम को भी कवच

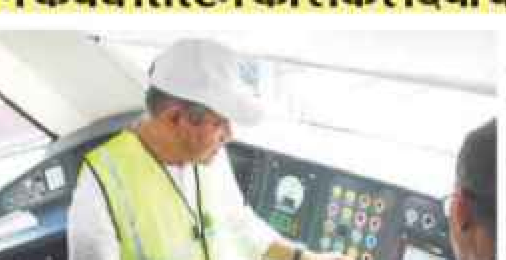

??4.0 में अपग्रेड किया जाएगा।

स्वचालित ट्रेन सुरक्षा कवच का विकास रेलवे सुरक्षा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। अस्सी के दशक में दुनिया की अधिकांश प्रमुख रेलवे प्रणालियां एटीपी में स्थानांतरित हो गई। भारतीय रेलवे ने 2016 में ट्रेन टक्कर रोधी प्रणाली के पहले संस्करण की मंजूरी के साथ यह यात्रा शुरू की थी। वर्ष 2019 में सुरक्षा प्रमाणन के उच्चतम स्तर एसआईएल-4 को प्राप्त करने के लिए सिस्टम का परीक्षण किया गया था। भारतीय रेलवे अलग-अलग प्रकार के ट्रैक वाले नेटवर्क संचालित करता है। विभिन्न स्थितियों का अध्ययन करने और उन्हें सुरक्षा प्रणालियों में शामिल करने की आवश्यकता है क्योंकि एक ट्रेन रेलवे नेटवर्क पर कहीं भी यात्रा कर सकती है।

कवच सिस्टम का ऐसे हुआ विकास

रिपोर्ट के मुताबिक, इस सिस्टम को 2020 में राष्ट्रीय एटीपी प्रणाली के रूप में मंजूरी दी गई। कोविड काल के बावजूद आगे का परीक्षण और विकास जारी रहा। 2021 में सिस्टम के संस्करण 3.2 को प्रमाणित और क्रियान्वित किया गया था। 2022 की अंतिम तिमाही में दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा के उच्च घनत्व वाले मार्गों पर काम शुरू किया गया था। अभी जो संस्करण लगाया जा रहा है, वह कवच 3.2 है। किसी भी एटीपी प्रणाली को कार्य करने के लिए 5 उपप्रणालियों की आवश्यकता होती है। रेलवे पटरियों के किनारे ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क, रेलवे पटरियों के किनारे टावर व रेडियो उपकरण, रेलवे पटरियों पर आरएफआईडी टैग लगाना, रेलवे स्टेशनों पर डेटा सेंटर व सिग्नलिंग प्रणाली के साथ एकीकरण तथा प्रत्येक ट्रेन और लोकोमोटिव पर कवच स्थापित करना।

लोकसभा में अच्छे नतीजे के बाद भी महाराष्ट्र कांग्रेस में मची कलह

16 नेताओं की हाईकमान को चिट्ठी

मुंबई, एजेंसी। लोकसभा चुनाव में उम्मीद से काफी अच्छा प्रदर्शन करने के बाद महाराष्ट्र में कांग्रेस पार्टी में सबकुछ ठीक नहीं है। सूत्रों के मुताबिक पार्टी में संकट मंडरा रहा है। लगभग 16 कांग्रेस नेताओं ने पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को बैठक के लिए चिट्ठी लिखी है। 16 जून को लिखी गई चिट्ठी में मुंबई में संगठनात्मक ढांचे पर ध्यान केंद्रित करने, पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय बढ़ाने, रणनीतिक सिफारिशों और प्रस्तावों पर चर्चा करने की बात कही गई है। कांग्रेस के सूत्रों ने कहा कि वरिष्ठ नेताओं का एक दल चाहता है कि पार्टी नेतृत्व वर्षा गायकवाड़ को मुंबई कांग्रेस प्रमुख के पद से हटा दे। चिट्ठी पर वरिष्ठ नेता चंद्रकांत हंडोरे (सीडब्ल्यूसी सदस्य) और महाराष्ट्र कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष, आरिफ नसीम खान, और महाराष्ट्र कांग्रेस के कोषाध्यक्ष डॉ अमरजीत मन्हास ने भी हस्ताक्षर किए हैं। मुंबई कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष जेसी चंदूरकर भी इस कड़ी में शामिल है। इकोनॉमिक टाइम्स ने चिट्ठी लिखने वाले वरिष्ठ नेता के हवाले से बताया कि वे चाहते हैं कि गायकवाड़ को पद से हटा दिया जाए ताकि कांग्रेस अपनी हालिया सफलता को और आगे ले जा सके। उन्होंने बताया, वह एक संगठन का निर्माण करने में सक्षम नहीं रही है। कांग्रेस के प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए कुछ लोगों ने कुछ उपाय सुझाए हैं।

एक झलक

केवीआईसी ने योग दिवस पर की रिकॉर्ड 8.67 करोड़ रुपये की बिक्री

नयी दिल्ली : देश के ग्रामीण क्षेत्रों के लाखों खादी कारीगरों के लिए योग दिवस विशेष खुशी लेकर आया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर खादी विकास और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) ने 8.67 करोड़ रुपये मूल्य के खादी योग वस्त्र और मैट की बिक्री की। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय ने बुधवार को जारी बयान में कहा कि 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने देशभर में 55 खादी संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न सरकारी विभागों को 8,67,87,380 रुपये मूल्य के 1,09,022 योग मैट और 63,700 योग पोशाक बेचीं। केवीआईसी के अध्यक्ष मनोज कुमार ने आंकड़े जारी करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'ब्रांड पावर' ने योग के साथ-साथ खादी की भारतीय विरासत को लोकप्रिय बना दिया है। उन्होंने कहा कि खादी परिवार के लिए यह खुशी की बात है कि इस बार हमारे खादी कारीगरों द्वारा बनाए गए विशेष योग वस्त्र और मैट की रिकॉर्ड तोड़ बिक्री हुई है।

राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण अध्यक्ष अजय भूषण ने सीतारमण से की मुलाकात

नयी दिल्ली : राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण (एनएफआरए) के अध्यक्ष अजय भूषण पांडे ने बुधवार को यहां केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। वित्त मंत्री कार्यालय ने ह्वाएक्सह्व पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण अध्यक्ष अजय भूषण पांडे से मुलाकात की है। हालांकि, इस मुलाकात की विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण एक स्वतंत्र नियामक है। यह कंपनी अधिनियम 2013 के तहत लेखा परीक्षा पेशे और भारतीय लेखा मानकों की देखरेख के लिए स्थापित किया गया है। इसका काम केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदन के लिए कंपनियों द्वारा अपनाई जाने वाली लेखांकन और लेखापरीक्षा नीतियों और मानकों की सिफारिश करना है।

स्टेट बैंक ने बॉन्ड के माध्यम से जुटाये 10 हजार करोड़ रुपये

नयी दिल्ली : देश और सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने अपने पांचवें बुनियादी ढांचा बॉन्ड के माध्यम से 10 हजार करोड़ रुपये जुटाए हैं। बैंक ने यह राशि 7.36 फीसदी की देय कूपन दर पर जुटाई है। एसबीआई ने बुधवार को नियामक फाइलिंग में बताया कि उन्होंने बॉन्ड के माध्यम से 10 हजार करोड़ रुपये जुटाए हैं। स्टेट बैंक ने शेयर बाजार को सूचित किया कि इस निर्गम को निवेशकों से जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिली है। बैंक ने बताया कि कुल 19,884 करोड़ रुपये से अधिक की 143 बोलियां मिली हैं। इसमें निवेश करने वाले निवेशक भविष्य निधि, पेंशन कोष, बीमा कंपनियों, म्यूचुअल फंड, कॉर्पोरेट्स क्षेत्र से थे। सार्वजनिक क्षेत्र के कर्जदाता बैंक के मुताबिक ये बॉन्ड इंफ्रा प्रोजेक्ट में फंडिंग के लिए जारी किया गया है। एसबीआई के मुताबिक सालाना 7.36 फीसदी की देय कूपन रेट पर ये बॉन्ड जारी किया गया है।

सेंसेक्स व निफ्टी ने बनाया मजबूती का नया रिकॉर्ड

नयी दिल्ली : घरेलू शेयर बाजार में रिकॉर्ड तोड़ तेजी का सिलसिला बुधवार को लगातार तीसरे दिन भी जारी रहा। कारोबार की शुरुआत भी ओपनिंग के नए रिकॉर्ड के साथ हुई। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.80 प्रतिशत और निफ्टी 0.62 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। दिन के कारोबार में शेयर बाजार अभी तक के सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा और फिर आज के कारोबार का अंत भी क्लोजिंग के ऑल टाइम हाई रिकॉर्ड के साथ हुआ। दिन के कारोबार में ज्यादातर समय खरीदारी का जोर बना रहा, जिसके कारण शुरुआती 1 घंटे के कारोबार के अलावा बाकी पूरे समय शेयर बाजार लगातार हरे निशान में बना रहा। आज के कारोबार के दौरान बैंकिंग और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में सबसे अधिक खरीदारी होती रही। इसके साथ ही टेक और ऑयल एंड गैस इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। दूसरी ओर आईटी, ऑटोमोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थ केयर, मेटल और पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज इंडेक्स में गिरावट दर्ज की गई। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.29 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.15 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। बाजार में आए उछाल के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का इजाफा हो गया। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 436.97 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 435.76 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 1.21 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया। दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,008 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,916 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,967 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 125 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,301 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,032 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,269 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 18 शेयर बढ़त के साथ और 12 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल शेयरों में से 25 शेयर हरे निशान में और 25 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज ऑल टाइम हाई ओपनिंग का नया रिकॉर्ड बनाते हुए 40.50 अंक की मामूली तेजी के साथ 78,094.02 अंक के स्तर पर खुला।

अमेजन प्राइम ने '#सच में टू मच' 2.0 अभियान की घोषणा की

रांची : अमेजन प्राइम 'जॉय ऑफ मोर' की खोज का सार प्रस्तुत करता है। एक ही सदस्यता के साथ, ग्राहक पढ़ने, गेमिंग और संगीत से लेकर खरीदारी, शिपिंग, मनोरंजन और उससे भी आगे तक कई तरह के अनगिनत लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यह ऑल - एक्सक्लूसिव मेंबरशिप '#सच में टू मच' 2.0 की भावना को पूरी तरह से दर्शाती है, जो एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करती है और जो उनके जीवन के हर पहलू को समृद्ध भी करती है। इस विचार को जारी रखते हुए अमेजन प्राइम अपने सफल अभियान सच में टू मच कैम्पेन, की दूसरी किस्त के साथ वापस आ गया है. एक ऐसा टेलीविजन और डिजिटल विज्ञापन, जो पड़ोसियों के बीच जीवन की स्थितियों को दिखाता है, जिससे प्राइम सदस्यता द्वारा उसी दिन मुफ्त डिलीवरी के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले मूल्य असीमित बचत और ब्लॉकबस्टर मनोरंजन पर प्रकाश डाला गया है। यह अभियान नए ग्राहकों के लिए प्राइम सदस्यता की आकांक्षा पैदा करने के लिए संबंधित परिदृश्यों को दर्शाता है और साथ ही मौजूदा ग्राहकों के लिए लाभों पर प्रकाश डालता है। दो टीवीसी (मल्टी-बेनिफिट | स्पीड) स्पीड, बचत और ब्लॉकबस्टर मनोरंजन के लाभों को प्रदर्शित करते हैं। दोनों फिल्में अन्य प्राइम लाभों को दोहराती हैं जैसे उसी दिन डिलीवरी, अमेजन पे आईसीआईसीआई क्रेडिट कार्ड पर 5% कैशबैक, विस्तृत चयन और मनोरंजन। यह अभियान मजेदार अमेजॉन प्राइम शुभंकर - बॉक्सट्रोपोलिस को भी जीवंत करता है, जो अधिक विविध और इंटरैक्टिव बनने के लिए विकसित हुआ है।

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत एशिया में भी मिला-जुला कारोबार

नयी दिल्ली : ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मजबूती के साथ बंद हुआ। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स भी फिलहाल मामूली बढ़त के साथ कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार के विपरीत यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान दबाव बना रहा। एशियाई बाजारों में आज मिला-जुला कारोबार हो रहा है। अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान उत्साह का माहौल बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.39 प्रतिशत की बढ़त के साथ 5,469.30 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह नैस्डेक ने 220.84 अंक यानी 1.26 प्रतिशत की तेजी के साथ 17,717.65 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.02 प्रतिशत की मजबूती के साथ 39,121.62 अंक के स्तर पर कारोबार करता नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार से उलट यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार दबाव बना रहा, जिसके कारण वहां के तीनों प्रमुख सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.41 प्रतिशत टूट कर 8,247.79 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह सीएसी इंडेक्स ने 0.58 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 7,662.30 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डीएएक्स इंडेक्स 147.96 अंक यानी 0.81 प्रतिशत की गिरावट के साथ 18,177.62 अंक के स्तर पर बंद हुआ। एशियाई बाजारों में आज मिला-जुला कारोबार होता नजर आ रहा है। एशिया के 9 बाजारों में से 5 के सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि 4 सूचकांक बढ़त के साथ हरे निशान में बने हुए हैं। ताइवान वेटेड इंडेक्स 0.18 प्रतिशत की मजबूती के साथ 22,917.10 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह कोस्पी इंडेक्स 0.44 प्रतिशत उछल कर 2,786.56 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर, कच्चा तेल 86 डॉलर प्रति बैरल के करीब

नयी दिल्ली : सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने आज पेट्रोल और डीजल के मूल्य में कोई बदलाव नहीं किया है। अलबत्ता, अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के तीसरे दिन शुरूआती कारोबार में कच्चे तेल की कीमत में उतार-चढ़ाव जारी है। ब्रेंट क्रूड का मूल्य 86 डॉलर, और डब्ल्यूटीआई क्रूड 82 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

सर्राफा बाजार में सोने की सपाट चाल, चांदी हुई सस्ती

कारोबार

नयी दिल्ली : घरेलू सर्राफा बाजार में सपाट स्तर पर कारोबार होता नजर आ रहा है। देश के ज्यादातर बाजारों में सोना मंगलवार के भाव पर ही कारोबार कर रहा है। हालांकि चेन्नई में आज सोने के दाम में गिरावट आई है। देश के सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 72,870 रुपये से लेकर 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 66,790 रुपये से लेकर 66,240 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज गिरावट दर्ज की गई है। आज की गिरावट के कारण आज दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी 90,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 72,370 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 66,390 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24 कैरेट सोना 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,240 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जबकि चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 72,870 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 66,790 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना आज 72,270 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 66,290 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,240 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 72,370 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 66,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 72,270 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 66,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 72,370 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना बिना किसी उतार चढ़ाव के कारोबार कर रहा है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज भी 72,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना भी मंगलवार के भाव पर यानी 66,240 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

आयकर विभाग ने करदाताओं को रिफंड विफल होने पर दोबारा अनुरोध करने की दी सलाह

नयी दिल्ली : आयकर विभाग ने आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने वाले करदाताओं को रिफंड विफल होने पर फिर से अनुरोध करने की सलाह दी है।

इनकम टैक्स विभाग ने बुधवार को एक बयान में कहा कि यदि किसी कारण से करदाताओं का रिफंड विफल हो जाता है तो पुनः अपना रिफंड जारी करने का अनुरोध करें। विभाग ने इसके लिए कहा कि कृपया इनकम टैक्स विभाग के आधिकारिक वेबसाइट https:incometax.gov.in/iec/foportal/पर जाएं।

पहला चरणः- आयकर विभाग के ई-फाइलिंग पोर्टल पर लॉग इन करें।

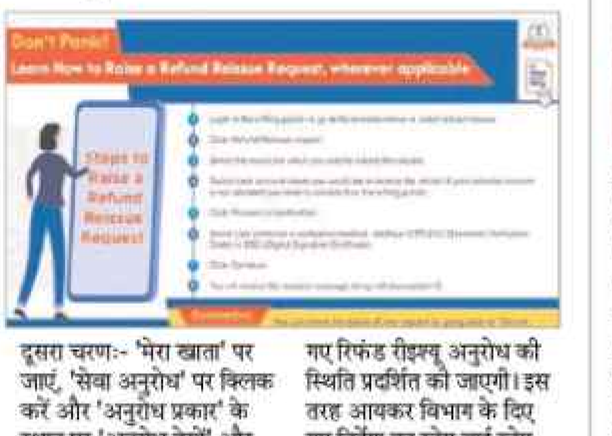

दूसरा चरणः- 'मेरा खाता' पर जाएं, 'सेवा अनुरोध' पर क्लिक करें और 'अनुरोध प्रकार' के स्थान पर 'अनुरोध देखें' और 'अनुरोध श्रेणी' के स्थान पर 'धन वापसी पुनः जारी करें' का चयन करें।

तीसरा चरण :- 'सबमिट' बटन पर क्लिक करें। सबमिट किए गए रिफंड रीइश्यू अनुरोध की स्थिति प्रदर्शित की जाएगी। इस तरह आयकर विभाग के दिए गए निर्देश का स्टेप बाई स्टेप पालन करें। इसके बाद रिफंड रीइश्यू अनुरोध का सफलतापूर्वक पालने करने के बाद आपके ट्रांजेक्शन आईडी पर मैसेज आयेगा।

बानी की सगाई उसके परिवार के लिए खुशी और वित्तीय चिंताएं लेकर आती है

सोनी सब का 'बादल पे पांव है' एक मेहनती पंजाबी लड़की बानी की कहानी बताता है, जिसका किरदार अमनदीप सिद्धू ने निभाया है। बानी महत्वाकांक्षी और प्रेरित है, न केवल खुद के लिए बल्कि अपने परिवार के पास मौजूद सीमित संसाधनों के बावजूद उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए भी। आगामी एपिसोड्स में, बानी के जमानत पर रिहा होने के बाद, उसके पिता चाहते हैं कि खबर फैलने से पहले वह जल्दी से शादी कर ले। इस बीच, एक मैचमेकर बानी के घर रजत (आकाश आहूजा) की शादी का प्रस्ताव लाता है।

रिलायंस फाउंडेशन बनायेगा पेरिस ओलंपिक में देश का पहला 'इंडिया हाउस'

नयी दिल्ली : रिलायंस फाउंडेशन ने भारतीय ओलंपिक संघ (IOA) के साथ साझेदारी के तहत पेरिस ओलंपिक खेलों में देश का पहला कंट्री हाउस यानी इंडिया हाउस बनायेगा। इंडिया हाउस, पेरिस के प्रतिष्ठित पार्क डे ला विलेट में बनाया गया है। पार्क में इंडिया हाउस के अलावा नीदरलैंड, कनाडा, ब्राजील और मेजबान फ्रांस समेत 14 देशों के कंट्री हाउस होंगे। इंडिया हाउस के दरवाजे दुनिया भर के एथलीटों, गण्यमान्य व्यक्तियों और खेल प्रेमियों के लिए खुले रहेंगे। यहां दुनिया को भारत की प्रतिभा, क्षमता और महत्त्वाकांक्षा की एक झलक दिखेगी। संस्कृति से लेकर कला और खेल से लेकर योग, हस्तशिल्प, संगीत और पारंपरिक भारतीय व्यंजन इंडिया हाउस में परोसे जायेंगे।

आईओसी सदस्या और रिलायंस फाउंडेशन की फाउंडर व चेयरपर्सन नीता एम. अंबानी ने इंडिया हाउस पर कहा, 'पेरिस ओलंपिक खेलों में पहली बार इंडिया हाउस की घोषणा करते हुए मैं बेहद खुश और उत्साहित हूं। यह एक ऐसा स्थान होगा, जहां हम अपने एथलीटों का सम्मान करेंगे, अपनी जीत का जश्न मनायेंगे, अपनी कहानियां साझा करेंगे और दुनिया भर का भारतीयता के रंग में रंग देंगे।'

भारतीय ओलंपिक संघ की प्रेजिडेंट सुश्री पीटी उषा ने कहा, 'रिलायंस फाउंडेशन के साथ साझेदारी में इंडिया हाउस का उद्घाटन, पेरिस ओलंपिक में भारतीय प्रशंसकों और एथलीटों के लिए मुख्य आकर्षणों में से एक होगा। यह प्रशंसकों और अन्य देशों के लोगों के लिए भारत के बारे में और अधिक जानने का मौका होगा। मैं इस पहल और भारत के ओलंपिक आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए आईओसी सदस्या नीता अंबानी को धन्यवाद देना चाहूंगी।' ओलंपिक खेलों में बनाये जानेवाले कंट्री हाउस में दरअसल देश अपनी सॉफ्ट पॉवर का प्रदर्शन करते हैं। पेरिस का इंडिया हाउस भारतीय संस्कृति की समृद्ध और विविधतापूर्ण छवि को उकेरने के साथ भारतीय एथलीटों के लिए घर से दूर एक घर की तरह भी काम करेगा। यहां भारतीय एथलीटों की जीत और उनके पदकों का जश्न मनाया जायेगा। खेल प्रशंसकों के लिए यहां खास तौर पर वॉच पार्टियां आयोजित होंगी। वॉच पार्टियों के लिए विशेष मीडिया अधिकारधारक वायकॉम18 फीड मुहैया करायेगा।

पेज एक के शेष

ओम बिरला निर्विरोध बने लोकसभा के अध्यक्ष...

उन्हीं की अध्यक्षता में पिछली लोकसभा में नारी वंदन, जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन जैसे बड़े विधेयक पारित हुए और सदन की उत्पादकता 97 प्रतिशत रही। नेता विपक्ष के तौर पर राहुल गांधी ने ओम बिरला को बधाई देते हुए कहा कि विपक्ष को बोलने का अवसर मिलना चाहिए। विपक्ष को चुप कर देना लोकतंत्र के खिलाफ है। वह संसद के अंतिम मध्यस्त की भूमिका में हैं और सरकार तथा विपक्ष ; दोनों को उनसे उम्मीद है। विपक्ष भी जनता का ही प्रतिनिधित्व करता है। हम सहयोग करने और सदन को चलाने के पक्ष में हैं। ऐसे में विपक्ष की आवाज को भी प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि यह सदन बिना भेदभाव के आगे बढ़ेगा। निष्पक्षता और जिम्मेदारी के साथ उनसे सदन चलाने की उम्मीद है। उन्हें उम्मीद है कि वह सत्ता पक्ष पर भी अंकुश लगायेंगे। वह चाहते हैं सदन उनके इशारे पर चले और इसका उल्टा न हो।

तृणमूल कांग्रेस नेता सुदीप बंधोपाध्याय ने कहा कि सदन विपक्ष का होता है और उसकी सकारात्मक बातों को भी सम्मान मिलना चाहिए। सदन से 150 सदस्यों को निलम्बित कर देना लोकतंत्र नहीं है। पिछली लोकसभा में कई विधेयक पारित हुए, लेकिन वे केवल पेश किये गये और बिना चर्चा के पारित कर दिये गये। ऐसा नहीं होना चाहिए। द्रमुक नेता टीआरबालू ने बिरला को बधाई देते हुए कहा कि भले ही वे कमल के निशान पर जीत कर आये हैं, लेकिन उन्हें कमल की ही तरह पानी में रह कर पानी से अलग रहना चाहिए। विपक्ष को भी महत्त्व मिलना चाहिए।

इसके अलावा भी कई सांसदों ने सदन अध्यक्ष को बधाई देने साथ अपनी बात रखी। शिवसेना बालासाहब ठाकरे से सांसद अरविंद सावंत ने चुनाव आयोग से जुड़े कानून और मणिपुर का मुद्दा उठाया। न्याय तथा संवेदनशीलता की मांग की। एनसीपी शरदपवार नेता सुप्रिया सुले ने कोविड के दौरान ओम बिरला से मिले सहयोग के लिए उनका धन्यवाद दिया। उन्होंने केन्द्रीय मंत्रियों से मिले सहयोग का जिक्र करते हुए कोशिश और बातचीत से विषयों को सुलझाने की बात कही। उन्होंने कहा कि सदन चलना चाहिए।

लोकजनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने कहा कि उपाध्यक्ष के पद की मांग कर रहे विपक्ष को देखना चाहिए कि राज्यों में जहां उनकी सरकार है, क्या वे वहां ऐसा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब हम किसी की ओर उंगली उठाते हैं, तो चार उंगलियां अपनी तरफ होती हैं। हरसिमरत कौर बादल ने क्षेत्रीय एवं छोटी पार्टियों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने का मुद्दा उठाया।

आपातकाल की निन्दा और इसके शिकार लोगों के लिए मौन

सदन की कार्यवाही के अंत में अध्यक्ष ओम बिरला ने वक्तव्य पढ़ा और कहा कि यह सदन आपातकाल की निंदा करता है। वक्तव्य के बाद उन्होंने सदस्यों से दो मिनट का मौन रखने को कहा, जिसमें कांग्रेस और कुछ विपक्षी नेताओं के अलावा अन्य सदस्यों ने मौन रखा। बिरला के वक्तव्य पढ़ने के दौरान कांग्रेस सांसदों ने आगे आकर इसका विरोध किया और शेम-शेम के नारे लगाये। वहीं, ओम बिरला ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज 26 जून को कैबिनेट ने आपातकाल पर पूर्ववर्ती प्रभाव से मोहर लगायी थी। आपातकाल अन्याय का कालखंड था। संविधान भावना के खिलाफ था। यह सदन प्रतिबद्धता दोहराता है कि दोबारा ऐसा समय नहीं आने दिया जायेगा। उन्होंने आपातकाल के खिलाफ लड़नेवालों को याद करते हुए कहा कि देश को इसकी समाप्ति के बाद दूसरी आजादी मिली थी।

प्रधानमंत्री ने मंत्रिपरिषद से परिचय कराया

अध्यक्ष के आपातकाल पर वक्तव्य से पूर्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नये सदन को अपने मंत्रिपरिषद से परिचय कराया। उन्होंने एक-एक कर सभी मंत्रियों, स्वतंत्र प्रभार मंत्रियों और राज्यमंत्रियों के नाम लिये, जिसके साथ ही मंत्रियों ने हाथ जोड़ कर सभी का अभिवादन किया।

सदन की शुरुआत में शपथ

लोकसभा की बुधवार को शुरू हुई कार्यवाही के दौरान सबसे पहले बचे हुए सदस्यों को शपथ दिलायी गयी। केवल दीपक देव अधिकारी ने आज शपथ ग्रहण की। वहीं शशि थरूर, शत्रुघन सिन्हा और तीन अन्य सदस्य अनुपस्थित रहे। आपातकाल पर मौन के बाद बिरला ने सदन की कार्यवाही गुरुवार को होने वाले राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधा घंटे बाद तक के लिए स्थगित कर दी है।

संसद 140 करोड़ नागरिकों की आकांक्षाओं का केन्द्र : प्रधानमंत्री...

ने फिर से विजयी होकर अध्यक्ष के रूप में इतिहास रच दिया है।

प्रधानमंत्री ने एक सांसद के रूप में अध्यक्ष के कामकाज पर प्रकाश डाला। उन्होंने ओम बिरला के निर्वाचन क्षेत्र में स्वस्थ मां और स्वस्थ बच्चे के उल्लेखनीय अभियान का उल्लेख किया। उन्होंने बिरला द्वारा अपने निर्वाचन क्षेत्र कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को ले जाने के लिए किये गये अच्छे काम पर भी टिप्पणी की। उन्होंने बिरला द्वारा अपने निर्वाचन क्षेत्र में खेलों को बढ़ावा देने की भी प्रशंसा की। पिछली लोकसभा में बिरला के नेतृत्व को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने उस अवधि को हमारे संसदीय इतिहास का स्वर्णिम काल बताया। 17वीं लोकसभा के दौरान लिये गये परिवर्तनकारी निर्णयों को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने अध्यक्ष के नेतृत्व की प्रशंसा की। उन्होंने नारी शक्ति वंदन अधिनियम, जम्मू कश्मीर पुनर्गठन, भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता, व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधेयक, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकार संरक्षण विधेयक, उपभोक्ता संरक्षण विधेयक, प्रत्यक्ष कर- विवाद से विश्वास विधेयक जैसे ऐतिहासिक अधिनियमों का उल्लेख किया, जो ओम बिरला की अध्यक्षता में पारित किये गये।

प्रधानमंत्री ने जी-20 देशों के विधायी निकायों के पीठासीन अधिकारियों के अत्यंत सफल पी-20 सम्मेलन के लिए भी अध्यक्ष की प्रशंसा की, जिसमें रिकॉर्ड संख्या में देशों ने भाग लिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने सदन की मर्यादा बनाये रखने में अध्यक्ष द्वारा दिखाये गये संतुलन की सराहना की, जिसमें कई कठोर निर्णय लेना भी शामिल था। उन्होंने परम्पराओं को बनाये रखते हुए सदन के मूल्यों को बनाये रखने का विकल्प चुनने के लिए अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त किया।

गढ़वा पुलिस ने तस्करी के तीन आरोपितों को दबोचा, 24 लाख की ब्राउन शुगर बरामद...

इसके बाद तीनों तस्करों को गिरफ्तार कर पूछताछ की गयी, तो सभी ने अपराध को स्वीकार कर लिया। आरोपितों में पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र के नेनुआ गांव निवासी अविनाश कुमार चंद्रवंशी, गढ़वा शहर के सोनपुरवा रेलवे स्टेशन निवासी शत्रुघ्न कुमार चौहान एवं उसी गांव के पिंटू कुमार चौहान शामिल हैं। गढ़वा के दो तस्करों पर लातेहार में भी मामला दर्ज है।

अगले तीन महीने में 40 हजार युवाओं को मिलेगी सरकारी नौकरी : चम्पाई सोरेन...

है। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर कर रहे हैं। युवाओं को रोजगार से जोड़ने का काम हो रहा है। हमारी सरकार आदिवासी-मूलवासी, किसान, मजदूर, गरीब, महिला, बुजुर्ग, दिव्यांग, पिछड़ा और अल्पसंख्यक समेत हर वर्ग एवं तबके को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है, ताकि इन सभी की भागीदारी से राज्य को नयी दिशा मिल सके।

योजनाओं का लाभ देने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता की भावनाओं और उम्मीदों के अनुरूप हमारी सरकारी योजनाएं बना रही है। योजनाओं का लाभ देने में कोई भेदभाव नहीं है। हर व्यक्ति के हितों का पूरा ख्याल रखा जाता है। उन्होंने कहा कि 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम के जरिये हमने आपकी समस्याओं को जाना और उसे दूर करने के साथ वैसी योजनाओं को लेकर आपके बीच आये, जिससे यहां की जनता सशक्त हो रही है।

कोई भी ऐसा परिवार नहीं है, जहां सरकार की कोई न कोई योजना नहीं पहुंची हो

मुख्यमंत्री ने जोर देते हुए कहा कि आज राज्य का कोई भी ऐसा परिवार नहीं है, जहां सरकार की कोई न कोई योजनाएं नहीं पहुंची हो। आज हर परिवार में पेंशन और राशन पहुंच रहा है। किसानों को सशक्त करने के लिए कई योजनाएं चल रही हैं। किसानों के दो लाख रुपये तक का लोन भी माफ किया जायेगा। राज्य के दूर-दराज इलाकों और जंगल-झाड़ तथा नदियों-पठारों की तलहटी में रहनेवाले गरीबों के घर भी रोशन रहें, इसके लिए 200 यूनिट बिजली मुफ्त देने का निर्णय राज्य सरकार ने लिया है। अब 25 वर्ष से अधिक और 50 वर्ष से कम उम्र की बहन-बेटियों को भी सरकार आर्थिक सहायता करने जा रही है। ऐसी और भी अनेक योजनाएं हैं, जो समाज के हाशिये पर बैठे लोगों को मुख्यधारा में लाने के लिए शुरू की गयी है।

विस्थापितों के दर्द को दूर करने का प्रयास

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड एक ऐसा राज्य है, जहां विस्थापन आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। यहां विभिन्न परियोजनाओं और खनन कार्यों के नाम पर आदिवासियों-मूलवासियों की जमीन का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण तो कर लिया गया, लेकिन रैयतों को उसका उचित लाभ नहीं मिल सका। आज भी विस्थापित कई समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारी सरकार जल्द ही विस्थापितों के कल्याण और हित में नीति बनायेगी, ताकि उनका जो हक और अधिकार है, वह मिल सके।

गांव और प्रखंडों के स्कूलों में भी मिलेगा क्वालिटी एजुकेशन

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। प्रखंडों में मॉडल स्कूल खोले जा रहे हैं, जहां बच्चों को निजी विद्यालयों की तर्ज पर क्वालिटी एजुकेशन मिलेगा। कोई भी बच्चा-बच्ची पैसे के अभाव में शिक्षा से वंचित ना रहे, इसके लिए छात्रवृत्ति राशि में तीन गुना इजाफा के साथ सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना संचालित है। उच्च शिक्षा हासिल करने में आर्थिक तंगी बाधा नहीं बने, इसके लिए गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना शुरू की गयी है। यहां के आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के बच्चों को विदेश में पढ़ने का पूरा खर्च सरकार दे रही है। यहां के गरीब बच्चे इंजीनियर, डॉक्टर और अफसर बनें, उन्हें कोचिंग और पढ़ाई के लिए आर्थिक सहायता दी जा रही है। हम शिक्षा का ऐसा दीया जलायेंगे, जो कभी नहीं बुझेगा।

कई योजनाओं का मिला तोहफा

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 313 करोड़ 96 लाख 24 हजार 500 रुपये की 333 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। इसमें 165 करोड़ 50 लाख 22 हजार 800 रुपये की 167 योजनाओं का शिलान्यास एवं 148 करोड़ 46 लाख 01 हजार 700 रुपये की 166 योजनाओं की आधारशिला रखी। वहीं, 23540 लाभुकों के बीच 69 करोड़ 73 लाख 99 हजार 11 रुपये की परिसम्पत्तियों का वितरण किया। इस कार्यक्रम में मंत्री सत्यानंद भोक्ता, मंत्री बादल पत्रलेख, विधायक मथुरा प्रसाद महतो, विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह, जिला 20 सूत्री उपाध्यक्ष ब्रजेन्द्र प्रसाद सिंह, जिला परिषद अध्यक्ष शारदा सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक सुरेन्द्र कुमार झा तथा जिले के उपायुक्त एवं वरीय पुलिस अधीक्षक समेत कई पदाधिकारी मौजूद थे।

जाति के नाम पर दूसरों से कैसी श्रेष्ठता?

सामाजिक स्तरीकरण मुख्यतः जाति पर आधारित है। किसी जाति समूह की सदस्यता जन्म से प्राप्त होती है, जिसके आधार पर लोगों को अन्य जाति समूहों के सापेक्ष स्थान दिया जाता है। यह दर्शाता है कि विभिन्न जातियों को उनके व्यवसायों की शुद्धता और अशुद्धता के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। उदाहरण के लिए, निम्न जाति समूहों के पास कुओं तक पहुंच नहीं थी, उन्हें मंदिरों में प्रवेश करने से प्रतिबंधित किया गया था आदि-आदि। किसी विशेष जाति के सदस्यों को अपनी जाति में ही विवाह करना होता है। अंतरजातीय विवाह निषिद्ध हैं। यह सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा किसी समूह को मुख्यधारा से अलग करके बहिष्कृत करने की प्रथा है। जाति व्यवस्था और धर्म ने संकीर्णता की भावना को जन्म दिया और लोगों को अपनी जाति-धर्म के प्रति अनावश्यक रूप से सचेत कर दिया। समकालीन समाज में जातिगत भेदभाव अभी भी व्यापक रूप से प्रचलित है, क्योंकि भारतीय समाज वैदिककाल से ही इस सामाजिक बुराई का दंश झेल रहा है और संवैधानिक तथा कानूनी उपायों के बावजूद भी यह जारी है। किसी व्यक्ति की जाति उसके जन्म लेने वाले परिवार की जाति से निर्धारित होती है। यह आमतौर पर वंशानुगत होती है। किसी व्यक्ति की जाति अपरिवर्तनीय होती है, चाहे उसकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। किसी व्यक्ति को जन्म से ही किसी जाति की सदस्यता विरासत में मिलती है। यह बात सच है कि प्राचीन असमानताएं और पूर्वाग्रह धीरे-धीरे बदलते हैं। सदियों से निचली जातियों का शोषण करने वाली उच्च जातियां आज भी उनके साथ सामाजिक और आर्थिक रूप से भेदभाव करती हैं। अपनी जाति को दूसरी जातियों से श्रेष्ठ समझने की भावना इसका मुख्य कारण है। लोगों की जाति की प्रतिष्ठा बढ़ाने की तीव्र इच्छा होती है। किसी विशेष जाति या उपजाति के सदस्यों में अपनी जाति के प्रति वफादारी विकसित करने की प्रवृत्ति होती है। जातिगत सजातीय विवाह का अर्थ है एक ही जाति में विवाह करना। इसलिए जातिगत सजातीय विवाह जातिवाद की भावना के उद्भव के लिए जिम्मेदार है। अशिक्षा के कारण लोग धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों और अंधविश्वासों में विश्वास करते हैं। 'जाति धर्म' के अभ्यास के कारण वे अपनी जाति में रुचि लेते हैं। इससे जाति भावना और जातिवाद को बढ़ावा मिलता है। खासतौर पर ग्रामीण इलाकों में ऊंची जाति के लोग निचली जातियों से सामाजिक दूरी बनाए रखते हैं। ग्रामीण गांवों में दलितों को हिंदू मंदिरों में जाने की मनाही है और ऊंची जाति के मोहल्लों में जूते पहनकर जाने की अनुमति नहीं है। वे इसे विभिन्न प्रतिबंधों जैसे कि अंतरजातीय विवाह, अंतर-भोज आदि के माध्यम से बनाए रखते हैं। किसी व्यक्ति की विचारधारा उसके जातिगत मानदंडों और मूल्यों से जुड़ी होती है। इसने जातिवाद को जन्म दिया है। उच्च शिक्षा और सरकार में जातिगत आरक्षण ने एक ऐसी व्यवस्था को कायम रखने का काम किया है जो अन्यथा खत्म हो गई होती। कई बार जाति और साम्प्रदायिक हितों को राष्ट्रीय हितों से अधिक प्राथमिकता दी गई। इस प्रकार पूरी व्यवस्था राष्ट्रीय एकता की अवधारणा के विरुद्ध खड़ी हो गई। लोकतंत्र मानव समानता की अपेक्षा करता है, लेकिन जाति व्यवस्था असमानता में विश्वास करती थी और इसमें पदानुक्रमिक व्यवस्था थी। आज जाति राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए एक विषय के रूप में प्रकट हुई है, जैसे शैक्षणिक कॉलेजों, सरकारी नौकरियों आदि में आरक्षण। सती प्रथा, बाल विवाह आदि जाति व्यवस्था का परिणाम थे। महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का नागरिक जैसा व्यवहार किया जाता था। यह पितृसत्तात्मक व्यवहार आज भी प्रचलित है। दलितों पर अत्याचार, निचली जाति की महिलाओं पर यौन उत्पीड़न आदि ऐसे भेदभाव और शोषण का परिणाम हैं जो बदले में भारतीय समाज में गहराई से जड़ जमाए हुए जाति और सांप्रदायिक पहचान का परिणाम हैं। हाथ से मैला ढोना अंततः एक जाति-आधारित व्यवसाय बन गया, जिसमें बाल्टी वाले शौचालयों या गड्ढे वाले शौचालयों से अनुपचारित मानव मल को हटाना शामिल है। इसे मैनुअल स्कैवेंजर के रूप में रोजगार के निषेध और उनके पुनर्वास अधिनियम 2013 द्वारा आधिकारिक रूप से समाप्त कर दिया गया है। जाति आधारित हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति अंतरजातीय विवाह के उदाहरणों और दलितों द्वारा भूमि अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, न्याय तक पहुंच, शिक्षा तक पहुंच आदि सहित बुनियादी अधिकारों के दावे से संबंधित है। जाति आधारित हिंसा की बढ़ती प्रवृत्ति अंतरजातीय विवाह के उदाहरणों और दलितों द्वारा भूमि अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, न्याय तक पहुंच, शिक्षा तक पहुंच आदि सहित बुनियादी अधिकारों के दावे से संबंधित है। दलितों के एक समूह पर गुजरात के ऊना में हमला किया गया था जब उन्होंने दलितों के लिए भूमि स्वामित्व की मांग के लिए आंदोलन में भाग लिया था। हाथरस में एक दलित महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म को जाति आधारित हिंसा के रूप में प्रचारित किया गया। प्रत्येक जाति की स्थिति को न केवल जाति कानूनों द्वारा बल्कि सम्मेलनों द्वारा भी सावधानीपूर्वक संरक्षित किया जाता है। इन्हें समुदाय द्वारा जाति पंचायत नामक एक शासी निकाय या बोर्ड के माध्यम से खुले तौर पर लागू किया जाता है। उच्च जातियों ने अनुष्ठान, आध्यात्मिक और नस्लीय शुद्धता का दावा किया, जिसे उन्होंने प्रदूषण की धारणा के माध्यम से निचली जातियों को दूर रखकर बनाए रखा।

एमएसपी घोषणा से दलहन-तिलहन में बढ़ेगी आत्मनिर्भरता

ANALYSIS

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा

सरकार द्वारा भी इस दिशा में लगातार प्रयास जारी है और जिस तरह के परिणाम सामने आ रहे है वे निश्चित रुप से सकारात्मक और उत्साहवर्द्धक है। न्यूनतम समर्थन मूल्यों में लगातार बढ़ोतरी और तिलहनी-दलहनी फसलों की खरीद के आश्वासन से किसानों का दलहन-तिलहन के प्रति रुझान बढ़ा है। केन्द्र सरकार ने खरीफ फसल की धान एवं ज्वार की दो किस्मों सहित 16 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा कर एक बार फिर किसानों को बड़ी राहत दी है। केन्द्र सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य के अनुसार सर्वाधिक बढ़ोतरी नाइजरसीड यानी कि राम तिल पर की गई है तो दालों में अरहर/तुअर की दाल के एमएसपी में भी 550 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। वैसे सरकार द्वारा खरीफ की सभी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय और किसानों को प्रोत्साहित करने वाली बढ़ोतरी की है। न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा के पीछे उद्देश्य यह रहा है कि किसानों को कम से कम उनकी लागत का पूरा मूल्य मिल सके। देश में पहली बार 1966-67 में केवल गेहू की सरकारी खरीद के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की गई थी। एक अगस्त, 1964 में तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने एलके झा की अध्यक्षता में इसके लिए कमेटी घटित की थी।

केन्द्र सरकार की खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की घोषणा से दलहन और तिलहन के उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में बढ़ता कदम माना जाना चाहिए। देश में तिलहन और दलहन का उत्पादन पिछले सालों में लगातार बढ़ता जा रहा है पर अभी भी देश दलहन और तिलहन के क्षेत्र में घरेलू जरूरत पूरी होने जितना उत्पादन हो नहीं पा रहा है। हालांकि अब धीरे-धीरे दलहन तिलहन का उत्पादन बढ़ने लगा है और केन्द्र सरकार 2027 तक दलहन के क्षेत्र में देश की विदेशी निर्यात पर पूरी निर्भरता कम होने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रही है। केन्द्र सरकार की आगामी खरीफ के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा से यह साफ हो जाता है कि सरकार दलहन और तिलहन के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सही व योजनाबद्ध तरीके से कदम बढ़ा रही है। सरकार का लक्ष्य है कि 2027 तक दलहन के क्षेत्र में इस हद तक आत्मनिर्भर हो जाए कि विदेशों से एक दाना भी दाल का आयात नहीं करना पड़े। एक मोटे अनुमान के अनुसार दुनिया भर में कुल उत्पादित दालों अर्थात दलहनी फसलों में भारत की भागीदारी 25 प्रतिशत के लगभग है। 2027 तक यह लक्ष्य अर्जित करने के लिए हमें 28 फीसदी का आंकड़ा छूना होगा। देश के कृषि वैज्ञानिकों और किसानों के संयुक्त प्रयास से देश में कृषि उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। सरकार द्वारा भी इस दिशा में लगातार प्रयास जारी है और जिस तरह के परिणाम सामने आ रहे हैं वे निश्चित रुप से सकारात्मक और उत्साहवर्द्धक है। न्यूनतम समर्थन मूल्यों में लगातार बढ़ोतरी और तिलहनी-दलहनी फसलों की

खरीद के आश्वासन से किसानों का दलहन-तिलहन के प्रति रुझान बढ़ा है। केन्द्र सरकार ने खरीफ फसल की धान एवं ज्वार की दो किस्मों सहित 16 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा कर एक बार फिर किसानों को बड़ी राहत दी है। केन्द्र सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य के अनुसार सर्वाधिक बढ़ोतरी नाइजरसीड यानी कि राम तिल पर की गई है तो दालों में अरहर/तुअर की दाल के एमएसपी में भी 550 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। वैसे सरकार द्वारा खरीफ की सभी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय और किसानों को प्रोत्साहित करने वाली बढ़ोतरी की है। न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा के पीछे उद्देश्य यह रहा है कि किसानों को कम से कम उनकी लागत का पूरा मूल्य मिल सके। देश में पहली बार 1966-67 में केवल गेहूं की सरकारी खरीद के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की गई थी। एक अगस्त, 1964 में तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने एलके झा की अध्यक्षता में इसके लिए कमेटी घटित की थी। इसके बाद सरकारों ने अन्य प्रमुख फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करने की और कदम बढ़ाए। केन्द्र सरकार द्वारा सीएसीपी यानी कि कृषि मूल्य एवं लागत आयोग की सिफारिश पर कृषि जिंसों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की जाने लगी। आज देश में 23 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की जाती है। इसमें 7 गेहूं, धान आदि अनाज फसलें, 5 दलहनी फसलें, 7 तिलहनी फसलों 4 नकदी फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा की जाती है। नकदी फसलों में गन्ना के सरकारी खरीद मूल्य की सिफारिश गन्ना आयोग द्वारा की जाती है तो गन्ने की खरीद भी सीधे गन्ना मिलों द्वारा की जाती है। इसी तरह से कपास की खरीद सीसीआई यानी कि कॉटन कारपोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा की जाती है। मुख्यतौर से अनाज की खरीद भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से और दलहन व तिलहन की खरीद नेफैड द्वारा राज्यों की सहकारी संस्थाओं और अन्य खरीद केन्द्रों के माध्यम से की जाती है। केरल सरकार ने 16 तरह की सब्जियों के बेस मूल्य तय कर सब्जी उत्पादक किसानों को बड़ी राहत देने की पहल की है तो हरियाणा सरकार भी केरल की तरह हरियाणा सरकार भी सब्जियों का बेस मूल्य तय करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। किसानों के लिए सर्वाधिक चर्चित एमएस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने को लेकर भी प्रमुखता से जोर दिया जाता रहा है। एमएस स्वामीनाथन आयोग ने 2004 में अपनी सिफारिश में न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करने का एक फामूर्ला सुझाया था कि उत्पादन लागत से कम से कम 50 प्रतिशत अधिक एमएसपी घोषित की जाए। हालांकि सरकार का दावा है कि खरीफ 2024 के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2018-19 की बजट घोषणा के अनुरूप अखिल भारतीय औसत उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर तय किया गया है। सरकारी दावों की बात की जाए तो बाजरा की उत्पादन लागत पर 77 प्रतिशत तो तुअर पर 59 प्रतिशत, मक्का पर 54 प्रतिशत, उड़द पर 52 प्रतिशत तो बाकी अन्य फसलों पर भी उत्पादन लागत पर 50 प्रतिशत मार्जिन होने का अनुमान व्यक्त किया गया है। दरअसल देश में तिलहन और दलहन उत्पादन के लिए सरकारें गंभीर रही हैं। 1986 में सैम पित्रोदा की अध्यक्षता में टीएमओ यानी कि तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन का गठन किया गया था। इस मिशन के माध्यम से देश में तिलहनों के उत्पादन को बढ़ाना था। राजस्थान सहित देश के प्रमुख उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादन बढ़ाने के समन्वित प्रयास किए गए। राजस्थान में तो सहकारी क्षेत्र में तेल मिलें भी लगाई गई और तिलहन सोसाइटियां गठित कर उनका संघ भी बनाया गया। तेल मिलों का संचालन भी इसी संघ को दिया गया पर कालांतर में तिलम संघ की तेल मिलें तो बंद हो गई वहीं तिलम संघ अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आज भी जूझ रहा है। कमोवेश वही स्थिति अन्य प्रदेशों में भी रही है। खैर यह विषयांतर हो गया पर 1990 में दलहन को भी इस तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन के दायरे में लाया गया। इसके बाद 1992-93 और 95-96 में पाम ऑयल और मक्का को भी इस तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन के दायरे में लाकर इनके उत्पादन को बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। 2021 से मिशन पॉम ऑयल भी सकारात्मक दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है। इसके माध्यम से सरकार ने 15 राज्यों में पॉम ऑयल के उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयास किए। इस मिशन के तहत 2025-26 में पूर्वोत्तर राज्यों में 3.28 लाख हैक्टेयर में और पूर्वोत्तर के इतर राज्यों में 3.22 लाख हैक्टेयर में पॉम ऑयल की खेती का रकबा पहुंचाने का लक्ष्य रख कर सरकार चल रही है। खैर दो बातें साफ हो जानी चाहिए कि देश को तिलहन और दलहन की पैदावार में बढ़ोतरी कर आत्मनिर्भर बनाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जाना और समयपूर्व एमएसपी घोषित करना सही दिशा में बढ़ता प्रयास है तो दूसरी और न्यूनतम घोषित दर किसानों को मिले ही यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है। इसके लिए खरीद व्यवस्था को चाक-चौबंद और खरीद तंत्र को मजबूत बनाना होगा।

लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

'न्यू इंडिया' को 'स्वस्थ भारत' में बदलेंगे आयुर्वेद व योग

आयुष उन चिकित्सा प्रणालियों का संक्षिप्त रूप है जिनका भारत में अभ्यास किया जा रहा है, जैसे आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी। स्वास्थ्य, रोग और उपचार पर इन सभी प्रणालियों का मूल दृष्टिकोण समग्र है। आयुष, स्वास्थ्य सेवाओं की बहुलवादी और एकीकृत योजना का प्रतिनिधित्व करता है। आयुष अपने नागरिकों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सा देखभाल प्रदान करके 'न्यू इंडिया' के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। 'न्यू इंडिया' को 'स्वस्थ भारत' भी होना चाहिए, जहां उसकी अपनी पारंपरिक प्रणालियां महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन जामनगर (गुजरात) दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा के लिए पहला और एकमात्र वैश्विक चौकी केंद्र होगा। आयुर्वेद और योग ने प्राचीन भारतीय विज्ञान के रूप में 5000 साल पहले अपनी यात्रा शुरू की थी। जबकि सिद्ध दक्षिण भारत में लोकप्रिय दवाओं की प्राचीन प्रणालियों में से एक है, यूनानी, चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस में हुई है। होम्योपैथी का विकास 1800 के दशक की शुरुआत में जर्मन चिकित्सक सैमुअल हैनिमैन ने किया था। इन प्रणालियों ने वर्षों से लोगों के निरंतर संरक्षण का आनंद लिया है। आयुर्वेद सहित भारत की अधिकांश पारंपरिक प्रणालियों की जड़ें लोक चिकित्सा में हैं। आयुर्वेद पर कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ जैसे कि सारंगधारा संहिता और चांगा सेन द्वारा चिकित्सा संग्रह, यागरात बाजार और भवमिश्र के भावप्रकाश को संकलित किया गया था। योग अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक है और यह स्वस्थ जीवन जीने की एक कला और विज्ञान है जो शरीर और मन के बीच सामंजस्य लाने पर केंद्रित है। चिकित्सा की यूनानी प्रणाली की उत्पत्ति ग्रीस में हुई, फिर मध्यकालीन भारत में मिस्र, अरब, ईरान, चीन, सीरिया और भारत जैसी प्राचीन सभ्यताओं के पारंपरिक ज्ञान का विलय हुआ। यह स्वाभाविक रूप से होने वाली ज्यादातर हर्बल दवाओं और जानवरों, समुद्री और खनिज मूल की कुछ दवाओं के उपयोग पर जोर देती है। दारा शिकोह को समर्पित नूरुद्दीन मुहम्मद की मुसलजती-दर्शाकोही, ग्रीक चिकित्सा से संबंधित है और अंत में, लगभग संपूर्ण आयुर्वेदिक सामग्री औषधि है। सिद्धा भारत में चिकित्सा की प्राचीन प्रणालियों में से एक है जिसका द्रविड़ संस्कृति के साथ घनिष्ठ संबंध है। सिद्ध शब्द का अर्थ है उपलब्धियां और सिद्ध वे हैं जिन्होंने चिकित्सा में पूर्णता प्राप्त की है। कहा जाता है कि 18 सिद्धारों ने योगदान दिया है। सोवा रिग्पा या आमची हिमालयी क्षेत्र में लोकप्रिय चिकित्सा की सबसे पुरानी जीवित प्रणालियों में से एक है। इसे 2009 में जोड़ा गया था। यह हिमालयी क्षेत्रों में विशेष रूप से लेह और लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, दार्जिलिंग आदि में प्रचलित है। यह अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, गठिया आदि जैसी पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में प्रभावी है। समकालीन समय में भारतीय चिकित्सा पद्धति विभाग नामक एक विभाग मार्च 1995 में बनाया गया था और नवंबर 2003 में आयुष का नाम बदलकर इन प्रणालियों के विकास पर अधिक ध्यान देने पर ध्यान दिया गया था। 2014 में, भारत की केंद्र सरकार के तहत एक अलग मंत्रालय बनाया गया था, जिसके प्रमुख राज्यमंत्री होते हैं। आयुष मंत्रालय ने अंतरराष्ट्रीय पेटेंट कार्यालय द्वारा गैर-मूल आविष्कारों पर पेटेंट के अनुदान को रोकने के लिए सीएसआईआर के सहयोग से टीकेडीएल (पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी) का शुभारंभ किया। राष्ट्रीय आयुष मिशन में पीएचसी, सीएचसी और जिला अस्पतालों में आयुष का सह-स्थान, अस्पतालों का उन्नयन और 50 बिस्तर वाले एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना शामिल है। कुपोषित होने की तुलना में गैर-संचारी रोग बड़ी समस्या बन सकते हैं। आधुनिक चिकित्सा के विपरीत, आयुष केवल बीमारी के इलाज पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय समग्र कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अधिक समग्र दृष्टिकोण का पालन करता है। इस तरह का दृष्टिकोण गैर-संचारी रोगों के मामले में अधिक महत्व रखता है, जो एक बार पुरानी स्थिति में विकसित हो जाने के बाद इलाज करना मुश्किल होता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, चिकित्सा की वैकल्पिक प्रणालियों, विशेष रूप से योग के स्वास्थ्य प्रभाव के बारे में अधिक से अधिक वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध हो रहे हैं। यह संदेह से परे साबित हो चुका है कि वैकल्पिक दवाओं के साथ प्री-डायबिटीज और प्री-हाइपरटेंसिव स्थितियों में समय पर हस्तक्षेप से बीमारियों का प्रतिगमन और स्वास्थ्य की बहाली हो सकती है। योग न केवल रोकथाम और नियंत्रण में बल्कि रोगों के उपचार में भी प्रभावी है। आज पूरी दुनिया स्वस्थ जीवनशैली के लिए योग को अपना रही है। कोविड-19 महामारी के मद्देनजर, आयुष मंत्रालय ने श्वसन स्वास्थ्य के विशेष संदर्भ में निवारक स्वास्थ्य उपायों और प्रतिरक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ स्व-देखभाल दिशानिर्देशों की सिफारिश की। ये आयुर्वेदिक साहित्य और वैज्ञानिक प्रकाशनों द्वारा समर्थित हैं। आयुष मंत्रालय की पहल के बाद कई राज्य सरकारों ने भी प्रतिरक्षा और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए पारंपरिक चिकित्सा समाधानों पर स्वास्थ्य सलाह का पालन किया, जो विशेष रूप से कोव की पृष्ठभूमि के खिलाफ प्रासंगिक हैं। आयुष दवाओं और पद्धतियों की सुरक्षा और प्रभावकारिता के लिए वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से आयुष क्षेत्र में क्षमता निर्माण और सक्षम पेशेवरों के महत्वपूर्ण समूह को विकसित करने की दिशा में काम करना, पारंपरिक और आधुनिक प्रणालियों का सच्चा एकीकरण समय की आवश्यकता है।

मोदी के लिए अहम हैं अश्विनी वैष्णव

भारतीय राजनीति की जानकारी रखने वाला हर व्यक्ति यह जानता है कि सफलता की बुलेट ट्रेन हॉवर्ड और व्हार्टन जैसे स्टेशनों से होकर गुजरती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पसंदीदा मंत्री अश्विनी वैष्णव का अभिजन टेक्नोक्रेट से अनेक मंत्रालयों के मंत्री के रूप में परिवर्तन प्रतिष्ठित बिजनेस स्कूलों के लिए शोध का एक विषय हो सकता है। इस 54 वर्षीय व्यक्ति की राजनीतिक और प्रशासनिक प्रबंधन में दक्षता के कारण इन्हें रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना तकनीक मंत्रालयों के मंत्री के रूप में फिर से सरकार में शामिल किया गया है। वे ओडिशा से राज्यसभा में 2019 से सांसद हैं। उनका ब्यूरोक्रेट से राजनेता बनने की उनकी कहानी समकालीन राजनीति में सफलता की बड़ी गाथा है। जब उन्हें मोदी ने फिर मंत्री बनाया, तो दिल्ली दरबारियों को बड़ा अचरज हुआ क्योंकि बीते दशक के भाजपा के वर्चस्व को छोड़कर 1996 से ही रेल मंत्रालय हमेशा एनडीए के किसी घटक दल के पास होता था। मोदी को वैष्णव का महत्व पता है। वे महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव के साथ भाजपा के सह-प्रभारी भी बनाये गये हैं। राजनीति में वैष्णव एक विरोधाभास भी हैं क्योंकि वे राज्यसभा के अकेले ऐसे भाजपा सांसद हैं, जो दो बार निर्वाचित हुए हैं, पर अपनी पार्टी द्वारा नहीं, बल्कि नवीन पटनायक की पार्टी की उदारता के कारण, जिसे हाल में भाजपा ने राज्य में परास्त किया है। मोदी और अमित शाह ने पहले 2019 में और फिर 2024 में पटनायक से उनकी ओर से बात की थी। वैष्णव ने राज्य में एक दशक से कम समय आइएएस के रूप में काम किया था और 1999 के भीषण चक्रवात के समय डाटा संग्रहण में उनकी भूमिका की बड़ी सराहना हुई थी। साल 2003 से उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी के साथ काम किया- पहले प्रधानमंत्री कार्यालय में और फिर पूर्व प्रधानमंत्री के पद से हटने के बाद। विकसित भारत के मंतव्य के लिए मोदी रेल तथा सूचना तकनीक को अपने बेहतरीन इंजन के रूप में देखते हैं। और, सूचना मंत्री के रूप में वैष्णव देश-विदेश की मीडिया में मोदी संदेश को भी प्रभावी ढंग से प्रसारित करेंगे। वैष्णव अब तक 80 से अधिक चमकदार वंदे भारत ट्रेनें शुरू कर चुके हैं, जो 250 से ज्यादा जिलों से गुजरती हैं। रेल की छवि सुधारने में उन्होंने अपने बिजनेस मॉडल का सफल इस्तेमाल किया है। सौ से अधिक स्टेशनों को फिर से विकसित किया गया और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी हैं। ऐसा सैकड़ों स्टेशनों के साथ करने की उनकी योजना है। चुनाव से एक माह पहले 26 फरवरी को मोदी ने 553 स्टेशनों के पुनर्विकास की आधारशिला रखी थी। विपक्ष ने मंत्री पर यात्रियों की सुरक्षा की उपेक्षा करने और सांगठनिक खामियों के आरोप लगाये हैं। मार्च तक रेलवे में सुरक्षा से संबंधित 1.7 लाख से अधिक पद खाली थे। बीते दशक में रेल दुर्घटनाओं में कमी आयी है, पर हताहतों की संख्या बढ़ गयी है। पिछले साल ओडिशा के बालासोर में हुई तिहरी रेल दुर्घटना में 291 लोगों की मौत हुई थी। अजीब संयोग है कि वैष्णव कभी बालासोर के कलेक्टर होते थे। वैष्णव का मिशन मोदी की विभिन्न आकांक्षाओं को पूरा करना है, जिनमें मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना भी शामिल है। प्रधानमंत्री मानते हैं कि 2.30 करोड़ से अधिक दैनिक रेल यात्री अपने-आप में एक विशाल वोट बैंक हैं। प्रभावी शासन के लिए तकनीक का अधिक उपयोग मोदी का पसंदीदा विचार है, इसलिए डिजिटल इंडिया के लिए भी वैष्णव उनकी पसंद हैं। वैष्णव मोदी के नवोन्मेषी शासन मॉडल के अभिन्न अंग है, जिसमें टेक्नोक्रेट और पेशेवर बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। वैष्णव जैसे बाहर के लोगों को लाने से यह भी इंगित होता है कि राजनेताओं की भागीदारी घट रही है। वैष्णव अपने समकक्ष समूह में शायद आदर्श बाबू के सटीक प्रतीक हैं।

टकराव से शुरुआत

लोकसभा अध्यक्ष पद को लेकर सरकार व विपक्ष के बीच टकराव की स्थिति अठारहवीं लोकसभा की सुखद शुरूआत नहीं कही जा सकती। सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की ओर से पूर्व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायन्स (इंडिया) की तरफ से के सुरेश के नामांकन दाखिल करने के साथ ही सर्वसम्मति से लोकसभा अध्यक्ष चुने जाने की एक स्वस्थ परंपरा के आगे सवाल खड़ा हो गया है। इंडिया ब्लॉक को शायद यह उम्मीद थी, बल्कि शिव सेना जैसा उसका घटक दल तो खुलकर बोल भी रहा था कि यदि टीडीपी के किसी सांसद का नाम सत्तारूढ़ खेमे की ओर से इस पद के लिए प्रस्तावित किया जाता है, तो वे उसका समर्थन कर सकते हैं, पर जिस तरह पिछली सरकार के अहम चेहरों को नई सरकार में उनकी पुरानी भूमिका सौंपी गई, उसे देखते हुए यह लगने लगा था कि ओम बिरला का नाम ही फिर लोकसभाध्यक्ष पद के लिए आगे किया जाएगा। ऐसा ही हुआ। बिरला राजस्थान से तीसरी बार भाजपा के टिकट पर लोकसभा पहुंचे हैं, तो उनके सामने खड़े. के सुरेश आठवीं बार कांग्रेस सदस्य के रूप में केरल से चुनकर आए हैं। इसमें कोई दोराय नहीं कि अठारहवीं लोकसभा के अंकगणित ने विपक्ष को भरपूर हौसला दिया है। पिछले दो सदनों में तो आधिकारिक रूप से कोई नेता प्रतिपक्ष ही नहीं था। यहां तक कि पिछली लोकसभा बिना उपाध्यक्ष पद के खत्म हो गई। लगभग हर सत्र में विपक्ष इस पद पर नियुक्ति की मांग करता रहा, पर उसकी मांगें अनसुनी कर दी गईं। मगर इस बार विपक्ष के तेवर से साफ लगता है कि वह सत्ता पक्ष के आगे चुनौती पेश करता रहेगा। मगर इस दांव-पेच में अच्छी लोकतांत्रिक परंपराओं की अवहेलना नहीं होनी चाहिए।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ 09 पटना झ 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादक: श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार मैनेजिंग एडिटर: डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादक: डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादक: तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

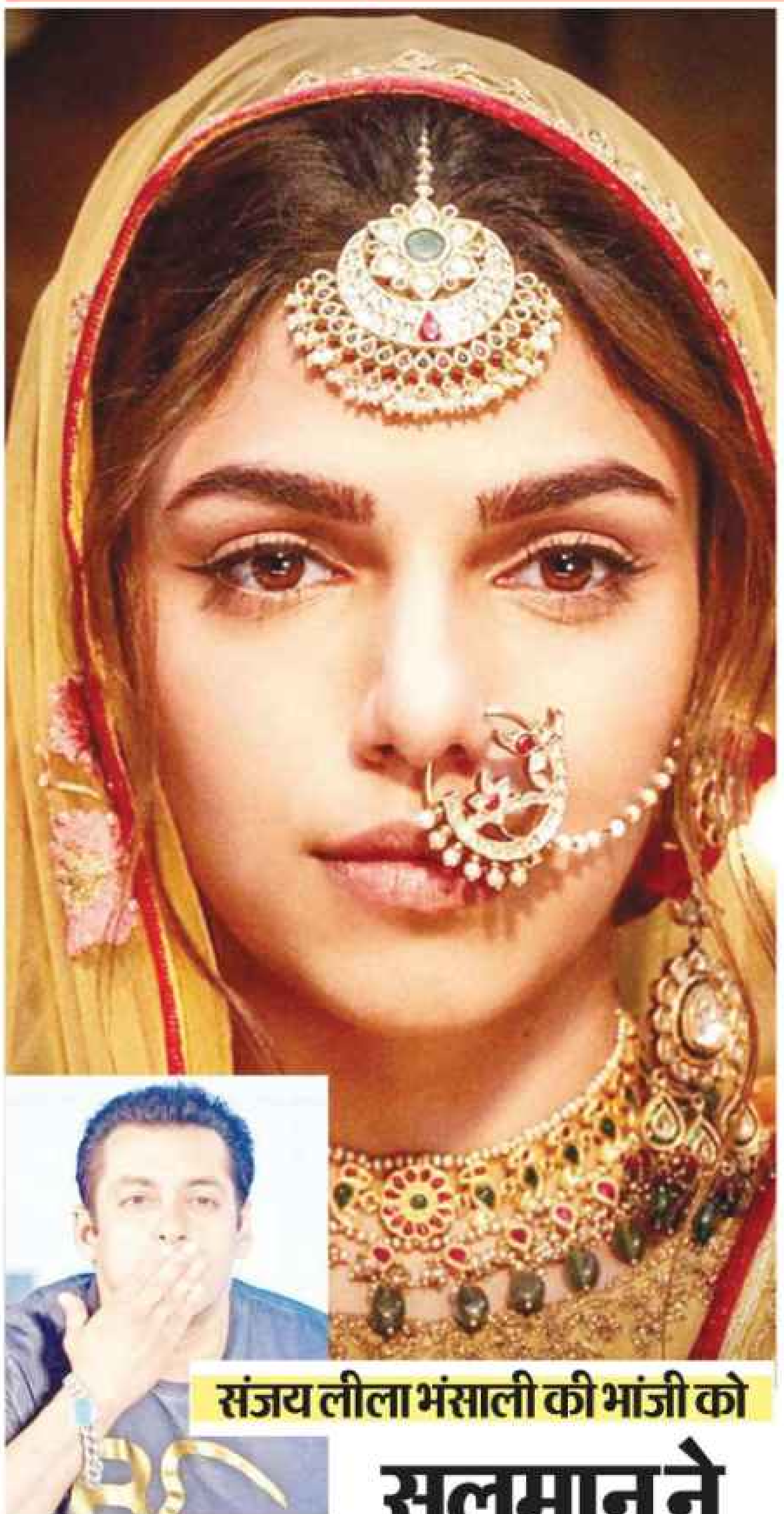

संजय लीला भंसाली की भांजी को

सलमान ने किया था शादी के लिए प्रपोज

'हीरामंडी' एक्ट्रेस ने किया खुलासा

बॉलीवुड के फेमस फिल्ममेकर संजय लीला भंसाली की भतीजी और एक्ट्रेस शर्मिन सहगल को 'हीरामंडी' की रिलीज के बाद से ही चर्चा में बनी हुई है। शर्मिन सहगल ने सीरीज में आलमजेब का किरदार निभाया है। इसी बीच उन्होंने खुलासा किया कि बॉलीवुड के सुपरस्टार सलमान खान ने उन्हें एक बार शादी के लिए प्रपोज किया था। लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया था।

दरअसल शर्मिन ने हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में बताया कि जब वह 2 या 3 साल की थीं तो 'हम दिल दे चुके सनम' के सेट पर सलमान ने मजाक में उनसे शादी करने की बात कही थी। शर्मिन ने कहा कि वह सेट पर आए और मुझसे कहा कि 'क्या तुम मुझसे शादी करोगी?' मैं चौंक गई और हंसने लगी। मैंने उनसे कहा कि 'सलमान, आप क्या मजाक कर रहे हैं?' उन्होंने कहा, 'मैं सीरियस हूं। मैंने उनसे कहा कि नहीं। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि तब मैं छोटी थी और मुझे शादी का मतलब नहीं पता था और मैं हर बात पर ना कर देती थी। शर्मिन ने आगे कहा कि वह सलमान खान की बहुत बड़ी फैन हैं। और उनके कुछ गाने 'प्यार किया तो डरना क्या, और 'ओ ओ जाने जाना' उनको बहुत पसंद हैं।

लॉस एंजेलिस वापस लौटीं प्रियंका चोपड़ा

कहा - घर पर रहना आत्मा को सुकून देता है

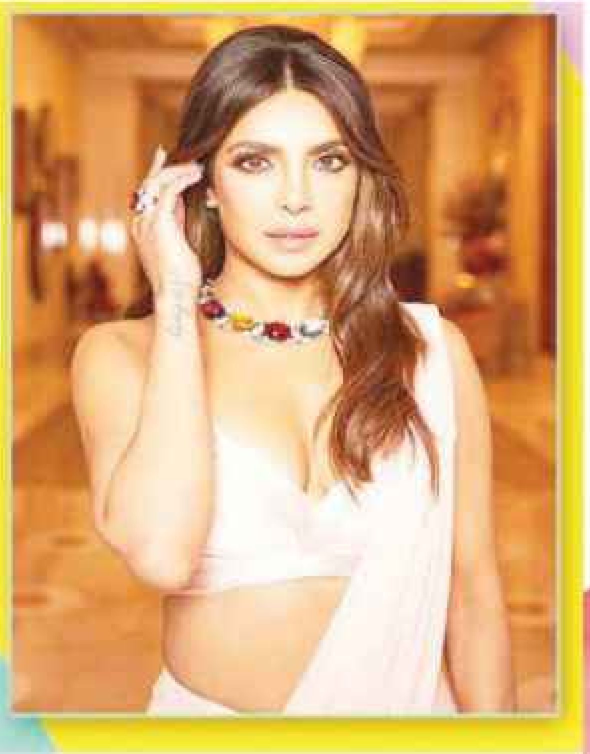

फ्रांस में अपकमिंग फिल्म हेड ऑफ स्टेट की शूटिंग के बाद प्रियंका चोपड़ा जोनस लॉस एंजेलिस में अपने घर वापस लौट आयी है। प्रियंका ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर घर लौटने की खुशी जाहिर की। एक्ट्रेस ने अपने घर के इंटीरियर की झलक के साथ अपनी बालकनी से एक तस्वीर पोस्ट की। उन्होंने कैप्शन में लिखा, घर पर रहना...मेरी आत्मा को सुकून देता है। एक्ट्रेस फ्रांस के नीस में हेड ऑफ स्टेट की शूटिंग कर रही थीं। फिल्म में इदरीस एल्बा और जॉन सीना भी हैं। यह इल्या नैशुलर द्वारा निर्देशित एक एक्शन-कॉमेडी फिल्म है। प्रियंका ने 8 मई को बताया था कि उन्होंने शूटिंग पूरी कर ली है और यह फिल्म डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रिलीज होगी।

कांस फिल्म फेस्टिवल में फिल्म 'मंथन' की स्क्रीनिंग अटैंड करेंगे

प्रतीक बब्बर

ऐश्वर्या राय, कियारा आडवाणी, अदिति राव हैदरी और शोभिता धुलिपाला के बाद अब जैकलीन फर्नांडीज, प्रतीक बब्बर और छाया कदम भी कांस फिल्म फेस्टिवल अटैंड करने जा रहे हैं। जैकलीन, कियारा, अदिति के अलावा इस साल प्रतीक बब्बर भी कांस में नजर आएंगे। प्रतीक वहां अपनी मां दिवंगत एक्ट्रेस स्मिता पाटिल की फिल्म 'मंथन' का प्रीमियर अटैंड करेंगे। प्रतीक भी गुरुवार को कांस रवाना हो चुके हैं। इस प्रीमियर में प्रतीक के साथ एक्टर नसीरुद्दीन शाह भी शामिल होंगे। वो 1976 में रिलीज हुई फिल्म 'मंथन' का हिस्सा थे। यह फिल्म इस साल कांस क्लासिक सिलेक्शन कैटेगरी में सिलेक्ट हुई है। कांस में इस साल फिल्म मंथन का प्रीमियर होगा। फिल्म में स्मिता पाटिल के अलावा नसीरुद्दीन शाह और गिरीश कर्नाड जैसे कलाकार अहम भूमिका में थे।

उभरती सितारा

आकांक्षा रंजन कपूर माया वन मूवी टीज़र में

चमकीं

आकांक्षा रंजन कपूर सिनेमा की दुनिया में धूम मचा रही हैं, और उनका नवीनतम प्रोजेक्ट माया वन पहले से ही चर्चा पैदा कर रहा है। फिल्म का हाल ही में जारी किया गया टीज़र आकांक्षा की प्रतिभा और करिश्मा को दर्शाता है, जिससे दर्शक और अधिक उत्सुक हैं। छोटे से वीडियो में आकांक्षा अपनी जबरदस्त एक्टिंग से सबका ध्यान खींचती हैं, वह आत्मविश्वास से भरी दिखती हैं और उनके चेहरे के भावों में बहुत सारी भावनाएं झलकती हैं, जिससे जब वह स्क्रीन पर होती हैं तो लोगों का ध्यान वास्तव में उन पर केंद्रित हो जाता है। माया वन एक सम्मोहक कहानी होने का वादा करती है, और आकांक्षा का उसके चरित्र का चित्रण कहानी में एक दिलचस्प परत जोड़ता है।

विभिन्न प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने की उनकी क्षमता एक सूक्ष्म और बहुआयामी प्रदर्शन का संकेत देती है जिसका दर्शक इंतजार कर रहे थे। आकांक्षा के लिए, माया वन उनके बढ़ते करियर में एक और मील का पत्थर है। प्रत्येक प्रोजेक्ट के साथ, वह अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अपनी कला के प्रति समर्पण को साबित करती रहती है। यादगार प्रदर्शन देने की उनकी प्रतिबद्धता टीज़र के हर फ्रेम में स्पष्ट है। एक उभरते सितारे के रूप में, आकांक्षा रंजन कपूर फिल्म उद्योग में एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए तैयार है। उनकी प्रतिभा, कहानी कहने के जुनून के साथ मिलकर, उन्हें अलग करती है और आने वाले वर्षों में उन्हें देखने लायक एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है। माया वन का टीज़र सिनेमा में आकांक्षा के आशाजनक भविष्य की एक झलक पेश करता है।

निर्देशकों को किरण राव की सलाह

कुछ ऐसा बनाएं जो आपको खुद पसंद आए

लापता लेडीज की सफलता का आनंद लेते हुए फिल्म निर्माता किरण राव ने सभी महत्वाकांक्षी पटकथा लेखकों के लिए एक संदेश देते हुए कहा है कि आप अपने पेशे में शीर्ष पर रहें।

15वें कशिश प्राइड फिल्म फेस्टिवल के मौके पर मीडिया से बात करते हुए राव ने कहा, -मुझे हमेशा लगता है कि कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जो अच्छा प्रदर्शन करती हैं और कुछ नहीं कर पाती।

प्रासंगिक होने के लिए आपको कुछ ऐसा बनाना होगा जो एक दर्शक के दिल में उतर जाय। राव के अनुसार एक अच्छी कहानी वह है जिसके साथ आप जुड़ते हैं, कुछ ऐसा जिसके बारे में बात करना आपको दिलचस्प और महत्वपूर्ण लगता है।दर्शकों के बारे में बात करते हुए किरण ने कहा, लोगों के पास अब कई सारे ऑप्शन हैं। कई तरह के कंटेंट तक उनकी पहुंच आसान हो गई है।

एक फिल्म निर्माता के रूप में मुझे लगता है कि आपको अपने पेशे में शीर्ष पर रहने की जरूरत है। यदि आप अच्छे हैं और ऐसी कहानियां बनाते हैं जो दिलचस्प हो, तो आप एक अच्छे कहानीकार होंगे। फिर चाहे आप ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए काम कर रहे हों या फिल्म बना रहे हों।लापता लेडीज के निर्माण के लिए आमिर खान की सराहना करते हुए राव ने कहा, इस तरह की फिल्म केवल आमिर खान जैसे निर्माता ही बना सकते थे। वह सर्वोत्तम फिल्में बनाना चाहते हैं। फिल्म की कास्टिंग के बारे में राव ने कहा, आमिर को एहसास हुआ कि यह फिल्म साधारण कलाकारों के साथ सबसे अच्छा काम करेगी। बहुत कम निर्माता इसे महसूस करेंगे और आपको उस तरह का समर्थन देंगे। आमिर वह व्यक्ति हैं जिन्होंने इसकी कहानी ढूंढी, उनके बिना फिल्म नहीं बनाई जा सकती थी।

खुशी कपूर के साथ अनटाइटल्ड फिल्म की तैयारी में आमिर के बेटे जुनैद खान

बॉलीवुड सुपरस्टार आमिर खान के बेटे जुनैद खान ने एक्ट्रेस खुशी कपूर के साथ अपनी तीसरी अनटाइटल्ड फिल्म की तैयारी शुरू कर दी है। प्रोडक्शन से जुड़े एक करीबी सूत्र ने कहा, जुनैद ने पहले ही दो फिल्मों की शूटिंग पूरी कर ली है और अब वह अपने तीसरे प्रोजेक्ट के लिए तैयार हैं, जो पिछली दो फिल्मों से बहुत अलग है। उनकी अगली अनटाइटल्ड फिल्म में वह खुशी कपूर के साथ दिखेंगे, जिसको लेकर फैंस के बीच काफी उत्सुकता है। जुनैद ने अपने प्रोजेक्ट महाराजा और साई पल्लवी के साथ अनटाइटल्ड फिल्म पूरी कर ली है। महाराजा कथित तौर पर 1862 के महाराजा लिबेल केस से प्रेरित है। इसमें जयदीप अहलावत और शारवरी वाघ भी हैं, कथित तौर पर जुनैद एक रिपोर्टर की भूमिका निभाएंगे। हालांकि, फिल्म की अन्य जानकारियां अभी भी गुप्त हैं।

अर्जुन ने पूरी की 'सिंघम अगेन' की शूटिंग

रोहित शेट्टी की अपकमिंग फिल्म 'सिंघम अगेन' है। इस फिल्म में अजय देवगन, करीना कपूर, अक्षय कुमार, रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण जैसे कलाकार पहली बार एक साथ नजर आएंगे। फिल्म में अर्जुन कपूर विलेन के रोल में होंगे। हाल ही में अर्जुन ने इस फिल्म की शूटिंग पूरी की। आखिरी दिन सेट से एक फोटो शेयर करते हुए एक्टर ने इस फिल्म को अपने करियर के लिए मील का पत्थर बताया है। अर्जुन ने यह भी बताया कि यह उनके करियर की 20वीं फिल्म है। अर्जुन ने लिखा- 'रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स का विलेन। मैंने सिंघम अगेन की शूटिंग पूरी कर ली है। मैं खुशनसीब हूं जो इंडियन सिनेमा की इस सबसे ज्यादा एंटरटेनिंग फ्रेंचाइजी का हिस्सा बना। मेरी 20वीं फिल्म और मेरे करियर की सबसे बड़ी माइलस्टोन में से एक।

आत्मविश्वास की कमी से जूझ रही भूमि

एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर ने खुलासा किया है कि बड़े होने के दौरान उनमें आत्मविश्वास की कमी थी और उन्होंने खुद की तलाश में फैशन की ओर रुख किया था। भूमि ने कहा, मैं जब बड़ी हो रही थी, मुझमें आत्मविश्वास की काफी कमी थी, खास तौर से कुछ ब्यूटी आइडियल जैसी बनने के दबाव के चलते। इसलिए, मैंने खुद की तलाश में फैशन की ओर रुख किया। एक्ट्रेस ने कहा, मुझमें उम्र के साथ खूबसूरती और फैशन की समझ बढ़ती गई। भूमि ने कहा कि यह अब सिर्फ अच्छा दिखने या ट्रेंड्स को फॉलो करने की बात नहीं है। उन्होंने कहा, यह मेरे अपने व्यक्तित्व विशेष को अपनाने, अपनी पर्सनालिटी को व्यक्त करने और अपनी खास खूबियों का जश्न मनाने के बारे में है। आज, फैशन और ब्यूटी एक ऐसा जरिया है जिससे मैं खुद को, अपने इमोशनल कैनवास और अपनी मन की स्थिति को जाहिर कर सकती हूं। भले ही भूमि को उनके फैशन और स्टाइल स्टेटमेंट पर मिली-जुली प्रतिक्रिया मिली हो, लेकिन भूमि अभी भी अपने लुक के साथ एक्सपेरिमेंट करना बेहद पसंद करती हैं। उन्होंने कहा, मुझे एक्सपेरिमेंट करना पसंद है। मैं बस फैशन के साथ आनंद लेना चाहती हूं, और मुझे लगता है कि मैं इसे पूरे दिल से कर रही हूं, यही वजह है कि लोग मेरे फैशन की सराहना कर रहे हैं।

बेटी की शादी के बजट पर बोले अनुराग कश्यप

फिल्ममेकर अनुराग कश्यप की बेटी आलिया जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाली हैं। अनुराग कश्यप बेटी की शादी की तैयारियों में जुट गए हैं। बेटी आलिया के पॉडकास्ट यंग, डंब एंड एंक्सियस पर अनुराग कश्यप ने बेटी की शादी के बजट पर बात की। उन्होंने कहा आलिया की शादी ठीक से हो और उसे किसी भी चीज की कमी ना हो इसके लिए उन्होंने अभी से मेहनत करना शुरू कर दिया है। अनुराग का कहना है कि आलिया की शादी का बजट उनकी लो बजट फिल्मों के बराबर है। शादी में होने वाले खर्चे का बिल समय-समय पर भरा जाता रहे, इसके लिए उन्हें लगातार काम करते रहना होगा। पिता की ऐसी बातें सुनकर आलिया हंसने लगती हैं।

खुद को टेरिबल पिता बताया

अनुराग ने बेटी से बात करते हुए अपने आपको टेरिबल पिता बताया। उन्होंने कहा- मुझे लगता है मैं तुम्हारे लिए एक पिता की तुलना में दोस्त ज्यादा बेहतर रहा हूं। मैं ये बात जानता हूं कि तुम्हें इन सबके बीच पिता की कमी बहुत खली होगी। लेकिन तुम्हारी मां ने अपना पूरा फर्ज निभाया है। पिता की बातें सुनकर आलिया इमोशनल हो गईं। आलिया ने कहा- आप हमेशा मेरे बहुत अच्छे दोस्त बनकर रहे हैं। इससे यह साफ पता चलता है कि आप कितने बेहतर इंसान हैं।

पिछले साल हुई थी आलिया की सगाई

पिछले साल आलिया कश्यप ने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड शेन ग्रेगोइर से सगाई की थी। आलिया कश्यप फिल्ममेकर अनुराग कश्यप और उनकी पहली पत्नी आरती बजाज की बेटी हैं। आलिया पेशे से यूट्यूबर हैं। आलिया और उनके बॉयफ्रेंड शेन ग्रेगोइर लंबे समय से डेट कर रहे थे। शेन ने इंडोनेशिया के बाली में आलिया को प्रपोज किया था। उन्होंने अपने यूट्यूब वीडियो में बताया कि शेन ने चुपके से उन्हें प्रपोज करते हुए वीडियो रिकॉर्ड कर लिया था। शेन का ऐसा करना आलिया को काफी रोमांटिक लगा। आरती और अनुराग की शादी 2003 में हुई थी और 2009 में दोनों ने तलाक ले लिया था।

-समाचार एजेंसी

गोला फेंक खिलाड़ी

तजिंदर पाल सिंह राष्ट्रीय अंतर राज्यीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप से हटे

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के 29 साल के तूर के नाम कुछ समय पहले तक 21.77 मीटर का एशियाई रिकॉर्ड था। सऊदी अरब के मोहम्मद दाओबा तोलो ने 21 जून को मैड्रिड में एस्टाडियो वालेहर्मोसो प्रतियोगिता में 21.80 मीटर के प्रयास के साथ उनके रिकॉर्ड को तोड़ा। भारत के गोला फेंक खिलाड़ी तजिंदर पाल सिंह तूर ने टखने में दर्द के कारण राष्ट्रीय अंतर राज्यीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप से बाहर होने का फैसला किया है। गुरुवार से पंचकुला में शुरू हो रही यह प्रतियोगिता आगामी पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालिफाई करने का अंतिम मौका है।

कुछ दिन पहले तक एशियाई रिकॉर्ड धारक तूर विश्व रैंकिंग कोटा के जरिए पेरिस खेलों के लिए क्वालिफाई करने की राह पर थे। वह गत एशियाई चैंपियन और एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता हैं। हालांकि, अब उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया है। तूर ने पीटीआई को बताया कि अभी उनके टखने में थोड़ा दर्द है जिसकी वजह से डॉक्टर ने सिंह को तीन से चार हफ्तों तक थ्रो नहीं करने की सलाह दी है।

भारत के 29 साल के तूर के नाम कुछ समय पहले तक 21.77 मीटर का एशियाई रिकॉर्ड था। सऊदी अरब के मोहम्मद दाओबा तोलो ने 21 जून को मैड्रिड में एस्टाडियो वालेहर्मोसो प्रतियोगिता में 21.80 मीटर के प्रयास के साथ उनके रिकॉर्ड को तोड़ा। यह देखना होगा कि भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) तूर की नवीनतम समस्या से कैसे निपटता है क्योंकि अधिकारी अभी तक इस बारे में कुछ नहीं कह रहे हैं। पेरिस ओलंपिक में पुरुषों की गोला फेंक स्पर्धा दो अगस्त (क्वालीफाइंग दौर) को शुरू होगी और फाइनल तीन अगस्त को होगा। पिछले महीने एएफआई के अध्यक्ष आदिले सुमारिवाला ने स्पष्ट किया था कि ओलंपिक चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को छोड़कर अन्य सभी खिलाड़ियों के लिए पेरिस ओलंपिक में चयन के लिए राष्ट्रीय अंतर-राज्यीय चैंपियनशिप (27-30 जून) में भाग लेना अनिवार्य होगा। तूर एक जुलाई 2023 से 30 जून 2024 के दौरान पेरिस ओलंपिक का 21.50 मीटर का स्वत क्वालिफाइंग स्तर हासिल नहीं कर पाए।

उन्होंने 19 जून 2023 को 21.77 मीटर की दूरी तय की लेकिन तब से वह 20 मीटर के दूरी को सिर्फ तीन बार पार कर पाए हैं। पुरुष 3000 मीटर स्टीपलचेज में पेरिस ओलंपिक का स्वत क्वालिफाइंग स्तर हासिल करने वाले एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता अविनाश साबले अपनी पसंदीदा स्पर्धा की जगह 1500 मीटर स्पर्धा में हिस्सा ले रहे हैं।

लारा एकमात्र शख्स थे जिन्हें यकीन था कि...

अफगानिस्तान सेमीफाइनल में होगा : राशिद खान

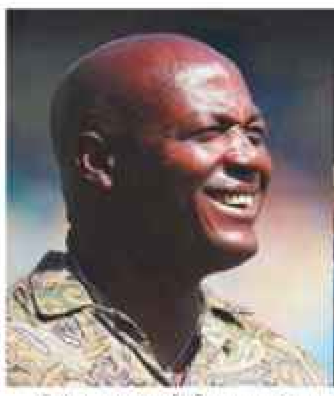

किंग्सटाउन, एजेंसी। अफगानिस्तान ने मंगलवार को टी20 विश्व कप के सुपर 8 मुकाबले में बांग्लादेश को 8 रन से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना ली। विश्व कप शुरू होने से पहले केवल ब्रायन लारा ही ऐसे पूर्व खिलाड़ी थे जिन्होंने अफगानिस्तान के सेमीफाइनल में पहुंचने की भविष्यवाणी की थी। अब जब अफगानिस्तान सेमीफाइनल में पहुंच गया है तो कप्तान राशिद खान को उसे सही साबित करने में बेहद खुशी महसूस हो रही है। राशिद ने बांग्लादेश से मैच जीतने के बाद कहा कि मुझे लगता है कि हमारा सेमीफाइनल में पहुंचना अफगानिस्तान में युवाओं के लिए एक बड़ी प्रेरणा साबित होने वाला है।

अफगानिस्तान की टीम पहली बार सेमीफाइनल में पहुंची है। हम पहली बार सुपर 8 में भी पहुंचे। अब सेमीफाइनल खेलेंगे। यह एक अविश्वसनीय एहसास है और मुझे लगता है कि हमने एक व्यक्ति को बिल्कुल सही साबित कर दिया है। वह व्यक्ति है ब्रायन लारा। वह एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने सेमीफाइनल में पहुंचने वाली चार टीमों में अफगानिस्तान का उल्लेख किया था। मुझे लगता है कि जब हम उनसे स्वागत पार्टी में मिले थे तो हमने उन्हें यह बताया था - हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हम इसे सही भी साबित करें।

राशिद ने कहा कि मुझे लगता है कि जब आपको एक टीम के रूप में किसी दिग्गज से शानदार बयान मिलते हैं, तो मुझे लगता है कि यह आपको बहुत सारी ऊर्जा देता है। जब तक हम चीजों को बहुत सरल रखते हैं हम सब कुछ करने में सक्षम है। हमने चीजों को सरल रखा है, हां, कुछ कठिन समय थे लेकिन हमने खुद को निराश नहीं किया और हम हमेशा मजबूत होकर वापस आने की कोशिश करते हैं। भले ही अफगानिस्तान समकालीन क्रिकेट में एक भयंकर प्रतिद्वंद्वी है, लेकिन कम ही लोगों को सेमीफाइनल में उनके उल्लेखनीय प्रदर्शन की उम्मीद थी।

अब अंग्रेजों की बारी है...

भारत-इंग्लैंड सेमीफाईनल आज

गुयाना, एजेंसी। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2024 का दूसरा सेमीफाइनल मुकाबला भारत और इंग्लैंड के बीच 27 जून को गुयाना के प्रोविडेंस क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। पिछले टी20 वर्ल्ड कप (2022) में भी भारत और इंग्लैंड के बीच सेमीफाइनल हुआ था। हालांकि इस मुकाबले में इंग्लैंड ने भारत को 10 विकेट से हराया था। टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया के बाद अब इंग्लैंड से भी अपना पुराना बदला जरूर लेना चाहेगी। भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा इस वक्त प्रचंड फॉर्म में चल रहे हैं। उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ पहले मैच में अर्धशतक ठोकने के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सुपर 8 के मैच में शानदार बल्लेबाजी की। उन्होंने 41 गेंद में 8 छक्के और 7 चौके के बूते 92 रन बनाए थे। इंग्लैंड के खिलाफ भी वह बड़ी पारी खेल सकते हैं।

एमिटी खिताब के करीब, सिटी व नॉर्दन यूनाइटेड बेहतर स्थिति में

नई दिल्ली, एजेंसी। विनय के दो बेहतरीन गोलों की मदद से एमिटी इंडियन नेशनल ने नोएडा सिटी एफसी को 2-1 से हरा कर डीएसए ए डिवीजन के सुपर सिक्स मुकाबले में पूरे अंक अर्जित किए। इस जीत से एमिटी के चैंपियनशिप जीतने की उम्मीद बढ़ गई है।

नोएडा सिटी का एकमात्र गोल कर्मण्य ने किया। दिन के दूसरे मैच में नॉर्दन यूनाइटेड ने हेमंत ठाकुर के पेनाल्टी गोल से एम 2 एम को 1- 0 से पराजित किया। एमिटी की जीत का आकर्षण विनय द्वारा क्रमश- 48 और 53 मिनट में जमाए गोल रहे।

पांच मिनट में दो गोल करने के बाद एमिटी की फार्म में गिरावट आई और उसे रक्षात्मक खेलना पड़ा। गोल करने के लिए नोएडा सिटी ने बहुत प्रयास किए लेकिन कर्मण्य बंसल ही गोल जमा पाया। अंतिम 20 मिनट में एमिटी पर दबाव बढ़ जाने के कारण उसके मिड फील्डर और फारवर्ड चल नहीं पाए। नतीजतन नोएडा सिटी ने खेल पर पकड़ तो बनाई लेकिन लगातार आसान मौके और मैच गंवाया।

नॉर्दन यूनाइटेड और एम 2 एम के बीच खेला गया मैच मौके गंवाने वाला रहा। विजेता टीम ने दूसरी जीत के साथ सुपर लीग में खेलने का दावा फिर से पेश किया है। हालांकि अभी एक दिन का खेल बाकी है, इसमें कोई बड़ा उलटफेर समीकरण बदल सकता है।

पाकिस्तान के दिग्गज खिलाड़ी

इंजमाम-उल-हक ने भारतीय टीम पर लगाया चीटिंग करने का आरोप

कराची, एजेंसी। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी अक्सर अपने बयानों को लेकर चर्चा में बने रहते है. वही पाकिस्तान के पूर्व खिलाड़ी हर बार भारतीय टीम के ऊपर आरोप लगाने से एक भी मौका नहीं चूकते है.भारत और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए मैच में भारतीय तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह को रिवर्स स्विंग मिली पूर्व खिलाड़ी ने इसी पर ही सवाल खड़े कर दिए.

पाकिस्तान के दिग्गज क्रिकेटर इंजमाम-उल-हक ने भारत के ऊपर एक बड़ा आरोप लगा दिया है.इंजमाम पाकिस्तान के एक टीवी शो पर बैठकर बात कर रहे थे. इस कार्यक्रम में उनके साथ पाकिस्तान पूर्व कप्तान सलीम मलिक भी मौजूद थे.

अर्शदीप सिंह पर लगाया बड़ा आरोप

पाकिस्तान के दिग्गज खिलाडी इंजमाम-उल-हक ने भारत के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह पर बड़ा आरोप लगाया है. इंजमाम ने एक टीवी शो पर कहा की भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबलें में गेंद के साथ छेड़-छाड़ की है. अर्शदीप सिंह भारत के लिए 16वां ओवर लेकर गेंदबाजी करने आए थे. उस ओवर में अर्शदीप को काफी रिवर्स स्विंग मिल रही था. इंजमाम ने अर्शदीप के रिवर्स स्विंग पर अपना ऐतराज जताया है.

इंजमाम ने कहा की इतने कम ओवर में कोई गेंदबाज कैसे रिवर्स स्विंग कर सकता है. अंपायर को गेंद चेक करनी चाहिए थी की भारतीय टीम में गेंद के साथ में कोई छेड़-छाड़ तो नहीं की है. भारतीय गेंदबाज इस टी20 विश्व कप में अलग ही लय में नजर आ रहे है.

DLS मैथड बनाने वाले फ्रेंक डकवर्थ का निधन

84 साल की उम्र में अंतिम सांस ली

लंदन, एजेंसी। DLS मैथड..यह शब्द तो आपने क्रिकेट मैचों के दौरान कई बार सुना होगा। इसे बारिश से प्रभावित इंटरनेशनल क्रिकेट मैचों का नतीजा निकालने के लिए उपयोग किया जाता है। इस मैथड की खोज करने वाले फ्रेंक डकवर्थ का मंगलवार को निधन हो गया है। वे 84 साल के थे। 4 साल पहले टोनी लुइस का भी निधन हो चुका है।

इंग्लैंड के स्टैटीशियन डकवर्थ ने टोनी लुइस के साथ मिलकर इस मैथड की खोज की थी, जिसे इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने 1 जनवरी 1997 को पहली बार जिम्बाब्वे और इंग्लैंड के मैच में लागू किया था। इस मुकाबले को जिम्बाब्वे ने 7 रन से जीता था। उसके बाद ICC ने इसे 1999 में अप्रूव किया और 2001 में टारगेट रिवाइज करने के लिए स्टैंडर्ड मैथड के तौर पर अधिकृत रूप से लागू किया। उन्हें 2010 में MBE (मेंबर ऑफ ब्रिटेश एम्पायर) अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

डेविड वार्नर ने जेक फ्रेजर मैक्गर्क को दी अपनी जिम्मेदारी

● आईपीएल में अपने बल्ले से मचा चुका है तबाही

पर्थ, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के धाकड़ ओपनर बल्लेबाज डेविड वार्नर ने टेस्ट और वनडे क्रिकेट के बाद टी20 को भी अलविदा कह दिया है. वही वार्नर ने इसके बाद अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया है. ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज डेविड वार्नर ने टी20 विश्व कप के बाद ही टी20 क्रिकेट को अलविदा कह दिया. वार्नर पहले ही टेस्ट क्रिकेट और वनडे में संन्यास ले चुके थे. वार्नर ने इस बात की घोषणा पहले ही कर दी थी की वो टी20 विश्व कप के बाद टी20 क्रिकेट से संन्यास ले लेंगे. वार्नर ने अपना आखिरी टी20 मैच भारत के खिलाफ खेला जिसमें उनके बल्ले से केवल 6 रन ही देखने को मिले. इसके बाद डेविड वार्नर ने अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट के जरिए जानकारी दी की वो इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह रहे है. वार्नर ने जाते हुए अपने उत्तराधिकारी की भी घोषणा कर दी है. इंस्टाग्राम पर स्टोरी लगाकर डेविड वार्नर ने जेक फ्रेजर मैकगर्क को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया है.

ऑस्ट्रेलिया के धाकड़ बल्लेबाज डेविड वार्नर ने इंटरनेशनल क्रिकेट छोड़ने के बाद अपनी जिम्मेदारी इस खिलाड़ी पर छोड़ दी है.वार्नर ने अपने इंस्टाग्राम पर एक स्टोरी लगाई जिसमें उनके साथ ऑस्ट्रेलिया के युवा ओपनर बल्लेबाज जेक फ्रेजर मैकगर्क भी मौजूद है. इस स्टोरी पर उन्होंने लिखा की अब तुम्हारे हवाले चैंपियन जेक फ्रेजर मैकगर्क. इस स्टोरी के बाद अब ऐसा लगता की जेक फ्रेजर मैकगर्क ही डेविड वार्नर की जगह लेने वाले है. जेक फ्रेजर मैकगर्क अपने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी के लिए जाने जाते है.

पैरा बैडमिंटन

पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी सुहास यथिराज विश्व रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे, इस दिग्गज को पछाड़ा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी सुहास यथिराज ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए मंगलवार को जारी बीडब्ल्यूएफ पैरा बैडमिंटन की नवीनतम विश्व रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल किया। सुहास फ्रांस के दिग्गज लुकास माजुर को पछाड़कर दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी बन गए हैं। 40 वर्षीय अर्जुन पुरस्कार विजेता सुहास को टोक्यो पैरालंपिक के एसएल-4 वर्ग के खिताबी मुकाबले में माजुर के खिलाफ हार के चलते रजत पदक से संतोष करना पड़ा था।

सुहास के नाम पर अब 60 हजार 527 अंक हैं जो फ्रांस के उनके प्रतिद्वंद्वी माजुर (58 हजार 953) से अधिक हैं। सुहास ने सोशल मीडिया पर लिखा, अंततः विश्व नंबर एक। यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि आज घोषित नवीनतम बैडमिंटन विश्व महासंघ पैरा बैडमिंटन रैंकिंग में पुरुष सिंगल्स वर्ग में मुझे जीवन में पहली बार विश्व नंबर एक रैंकिंग मिली है। मैंने लंबे समय से विश्व नंबर एक खिलाड़ी फ्रांस के लुकास माजुर की जगह ली। आपके आशीर्वाद और शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

क्लाइम्बिंग

भारतीय पर्वतारोहियों ने पीर पंजाल रेंज में गुप्त पर्वत को फतह किया

कोलकाता, एजेंसी। कोलकाता दक्षिण के बाहरी इलाके सोनारपुर में स्थित पर्वतारोहियों के क्लब सोनारपुर आरोही द्वारा संचालित तथा पर्वतारोही रूद्र प्रसाद हलदर के नेतृत्व में टीम लगभग आठ घंटे की चढ़ाई के बाद सुबह करीब 8.45 बजे गुप्त पर्वत की चोटी पर पहुंची। भारतीय पर्वतारोहियों ने वो काम कर दिखाया जो अब तक इससे पहले कोई भी नहीं कर सका है। पश्चिम बंगाल के नौ पर्वतारोहियों की एक टीम ने मंगलवार को हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले के पीर पंजाल रेंज में 5,988 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक चोटी गुप्त पर्वत को फतह किया।

पर्वतारोहण टीम के क्लब ने यह जानकारी दी। कोलकाता दक्षिण के बाहरी इलाके सोनारपुर में स्थित पर्वतारोहियों के क्लब सोनारपुर आरोही द्वारा संचालित तथा पर्वतारोही रूद्र प्रसाद हलदर के नेतृत्व में टीम लगभग आठ घंटे की चढ़ाई के बाद सुबह करीब 8.45 बजे गुप्त पर्वत की चोटी पर पहुंची। इस टीम में विश्व के सबसे युवा पर्वतारोही और प्रत्येक महाद्वीप की सात चोटियों तथा सात ज्वालामुखी चोटियों पर चढ़ने वाले भारत के पहले शख्स सत्यरूप सिद्धांत शामिल थे तथा इसमें एक महिला सदस्य दीपोश्री पॉल भी शामिल थीं। यह टीम तीन जून को कोलकाता से माउंट शिकार बेह (6,200 मीटर) और गुप्त पर्वत की चोटी पर चढ़ने के दोहरे लक्ष्य के साथ रवाना हुई थी, लेकिन पता चला कि जब पर्वतारोही चोटी पर जाने के लिए रास्ता बनाने में सफल हो गए, तभी हिमस्खलन के कारण महत्वपूर्ण चढ़ाई उपकरण नष्ट हो गए, जिसके कारण उन्हें शिखर पर चढ़ने की उम्मीद छोड़नी पड़ी।

टी-20 वर्ल्डकप

दोबारा कभी आंध्र के लिए नहीं खेलूंगा...

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम के लिए टेस्ट मैच खेल चुके हनुमा विहारी के लिए पिछले कुछ समय ठीक नहीं रहा था. हनुमा विहारी को आंध्र प्रदेश की कप्तान के पद से हटा दिया गया था. जिसके बाद उनके द्वारा आंध्र क्रिकेट संघ पर कई आरोप लगाए गए थे. विहारी के इस आरोप के बाद आंध्र क्रिकेट संघ ने भी उनको कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया था. जिसके बाद विहारी ने आंध्र ने से दोबारा क्रिकेट ना खेलने का तक का मन बना लिया था. अब भारतीय ऑलराउंडर हनुमा विहारी ने राज्य की सत्ताधारी तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) से राज्य क्रिकेट संघ से उनकी शिकायत का समाधान निकालने का आश्वासन मिलने के बाद आंध्र के लिए ही खेलने की प्रतिबद्धता जताई है.

कैसे बदला हनुमा विहारी का मन

इस साल के मार्च में आंध्र क्रिकेट संघ (एसीए) ने विहारी को कारण बताओ नोटिस जारी किया है . क्योंकि उन्होंने आरोप लगाया था कि राज्य संघ ने उन्हें कप्तान के पद से विवादास्पद तरीके से हटा दिया था.विहारी ने इसके बाद आंध्र का साथ छोड़ने की घोषणा की थी और मध्य प्रदेश क्रिकेट संघ (एमपीसीए) ने उनसे संपर्क भी किया था. इस महीने की शुरुआत में एसीए ने विहारी को अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किया था लेकिन अब उन्होंने अपना मन बदल लिया है. खबर के मुताबिक विहारी ने टीडीपी अधिकारियों के साथ सोमवार को मुलाकात की है जिसके बाद उन्होंने पुष्टि की कि वह आंध्र के लिए खेलना जारी रखेंगे.

उत्तरी गाजा में हमास की जगह लेगा इजरायल

बाइडन प्रशासन कर रहा विरोध

तेल अवीव , एजेंसी। इजरायल और हमास के बीच लगातार युद्ध जारी है। इस दौरान कई लोगों की मौत भी हो चुकी है। इजरायल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तजाची हानेग्बी ने मंगलवार को कहा कि यरुशलम जल्द ही उत्तरी गाजा में हमास शासन को बदलने की योजना लागू करेगा।

रीचमैन विश्वविद्यालय के वार्षिक हर्जलिया सम्मेलन में हानेग्बी ने कहा कि हमास की शासन करने की सैन्य क्षमता के पतन से उन देशों के लिए अवसर खुलेंगे जो गाजा में हमास के विकल्प के रूप में स्थानीय नेतृत्व के साथ एक शासन व्यवस्था देखना चाहते हैं, ताकि वे इस प्रक्रिया में शामिल हो सकें।

उन्होंने बताया कि गाजा के नए नेतृत्व में इजरायल के अब्राहम समझौते के साझेदार, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र शामिल होंगे, जबकि इजरायली सेना हमास की उपस्थिति को समाप्त करने के लिए काम जारी रखेगी।

उन्होंने आगे कहा, विचार यह है और इसी पर अमेरिकी सहमत हैं, जिसमें इस सप्ताह की बातचीत भी शामिल है और रक्षा मंत्री [योआव गैलेंट] द्वारा अभी [वाशिंगटन में] की जा रही बातचीत भी शामिल है कि तथाकथित शीर्ष-से-नीचे का नेतृत्व होगा, न कि केवल नीचे से ऊपर का। हानेग्बी ने कहा, आप हमास को पूरी तरह से गायब नहीं कर सकते, क्योंकि यह एक विचार है, एक अवधारणा है।

बाइडन प्रशासन करता है इजरायल का विरोध

अमेरिका ने युद्ध के बाद गाजा के शासन के लिए एक दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए इजरायली अधिकारियों पर दबाव डाला है। बाइडन प्रशासन इजरायल द्वारा गाजा पर कब्जा करने या गाजा पट्टी में अराजकता फैलने का विरोध करता है।

प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने जोर देकर कहा है कि इजरायल के तीन युद्ध लक्ष्य हैं हमास की सैन्य और शासन क्षमताओं का विनाश, सभी बंधकों की वापसी और यह सुनिश्चित करना कि गाजा अब इजरायल के लिए खतरा न बने।

बीते शुक्रवार को अमेरिका स्थित पंचबोल न्यूज को दिए गए एक इंटरव्यू में नेतन्याहू ने कहा कि युद्ध के बाद विसैन्यीकृत गाजा की देखरेख अरब देशों की सहायता से नागरिक प्रशासन द्वारा की जाएगी। इस दौरान उन्होंने कट्टरपंथ-विरोधी प्रक्रिया को लेकर भी बात की।

7 अक्टूबर को गाजा सीमा के निकट इजरायली समुदायों पर हमास के हमलों में कम से कम 1,200 लोग मारे गए तथा 252 इजरायली और विदेशी बंधक बना लिए गए। शेष 116 बंधकों में से 30 से अधिक के मृत होने की संभावना है।

इजरायली सेना ने गाजा शहर में किया हवाई हमला

इजरायल की सेना ने मंगलवार तड़के गाजा शहर पर तीन अलग-अलग हवाई हमल किए। गाजा के स्वास्थ्य अधिकारियों और चिकित्सकों ने कहा कि इस हमले में कम से कम 24 फलस्तीनियों की मौत हो गई। मृतकों में आतंकवादी इस्लामी समूह हमास के प्रमुख इस्माइल हनियेह की बहन भी शामिल है। स्थानीय निवासियों ने कहा कि इजरायली टैंक रात में एन्क्लेव के दक्षिण में राफा के पश्चिमी इलाकों में घुस गए और कई घरों को उड़ा दिया। चिकित्सकों ने कहा कि इजरायली सेना ने गाजा शहर के दो स्कूलों पर भी हमला किया, जिसमें कम से कम 14 लोग मारे गए हैं।

संक्षिप्त समाचार

रूस-यूक्रेन के बीच 90 युद्ध बंदियों की अदला-बदली

मास्को, एजेंसी। रूस-यूक्रेन को दो साल से अधिक समय हो चुका है। इस युद्ध के दौरान न जाने कितने ही लोगों को दोनों देशों ने बंदी बना लिया है। हालांकि अब एक अच्छी खबर है। रूस ने बताया कि उसने संयुक्त अरब अमीरात की मध्यस्थता में यूक्रेन के साथ 90 बंदियों का आदान-प्रदान किया है।

पूर्वी चीन में जापानी महिला और उसके बच्चे सहित तीन लोगों पर चाकू से हमला

बीजिंग, एजेंसी। पूर्वी चीन में सोमवार को 2 जापानी नागरिकों सहित तीन लोगों पर एक व्यक्ति ने चाकू से हमला कर दिया। जिसमें तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए। सीएनएन के मुताबिक जापानी महिला बस स्टॉप पर स्कूल बस के पास खड़ी थी, तभी आरोपी व्यक्ति ने जापानी महिला और उसके बच्चे पर हमला कर दिया। इस दौरान स्कूल बस में अटेंडेंट के रूप में काम करने वाली एक चीनी महिला भी गंभीर रूप से घायल हो गई। जापान के विदेश मंत्रालय के नेशनल ओवरसीज सेफ्टी डिवीजन के एक प्रतिनिधि ने सीएनएन को बताया कि जियांग्सु प्रांत के सूज़ौ में हुए हमले में स्कूल बस अटेंडेंट के रूप में काम करने वाली एक चीनी महिला को भी गंभीर चोटें आईं।

शराब-तंबाकू के अवैध कारोबार पर रोक जरूरी - डब्ल्यूएचओ

वाशिंगटन, एजेंसी। शराब और तंबाकू जानलेवा है। इनके सेवन से कैंसर जैसी घातक बीमारियां बढ़ रही है। भारत सहित दक्षिण एशिया के देशों को इनके अवैध कारोबार को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने मंगलवार को जारी एक बयान में कहा कि सभी देशों को तंबाकू उत्पादों के अवैध व्यापार की निगरानी के लिए ठोस उपाय करने चाहिए। क्षेत्रीय निदेशक साइमा वाजेद ने कहा, अवैध तंबाकू और शराब व्यापार पर रोक लगनी चाहिए। इसके लिए सभी देशों को तंबाकू नियंत्रण पर रूपरेखा सम्मेलन प्रोटोकॉल के पक्षकार बनना चाहिए। फिलहाल इस समय भारत और श्रीलंका इस प्रोटोकॉल के पक्षकार हैं।

झूठे मामले में सजा मिलने पर अब भारतीय मूल की पीड़िता से गवाह मांग रहे माफी

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है। यहां एक भारतीय मूल की आठ सप्ताह की गर्भवती महिला को गलत आरोपों में जेल की सजा काटनी पड़ी थी। यह मामला अब इसलिए सामने आया है क्योंकि इंग्लैंड में एक डाकघर की भारतीय मूल की पूर्व प्रबंधक ने उस इंजीनियर की माफी को स्वीकार करने से इनकार कर दिया है, जिसके सबूत के चलते उन्हें दोषी ठहराया गया था।

47 साल की सीमा मिश्रा की सजा अप्रैल 2021 में रद्द कर दी गई थी। उस समय अदालत ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा था कि महिला को 12 साल पहले गलत आरोपों में दोषी माना गया था। बता दें, महिला पर आरोप था कि उसने उप डाकपाल के पद पर कार्यरत होते हुए डाकघर की शाखा से 75 हजार पाउंड चोरी किए थे।

घोटाले की चल रही जांच को लेकर सीमा ने अदालत में कहा, पूर्व फुजित्सु इंजीनियर गैरेथ जेनकिंस ने बहुत देर से माफी मांगी है। वो भी बहुत कम। जेनकिंस सदियों पहले माफी मांग सकते थे। जिस हालत से मैं गुजरी हूं उसे कोई नहीं समझ सकता। बता दें, महिला की यह प्रतिक्रिया ऐसे समय में सामने आई, जब घोटाले की जांच में गैरेथ जेनकिंस ने एक लिखित बयान दिया था कि उन्हें नहीं पता था कि मिश्रा सजा के दौरान गर्भवती थीं और इसके बारे में उन्हें कई वर्षों बाद पता चला था। उन्होंने कहा था, जो भी हुआ वह बहुत ही दुखद है। मैं उनके साथ जो भी हुआ, उसके लिए मिश्रा और उनके परिवार से सिर्फ माफी ही मांग सकता हूं।बता दें, डाकघर घोटाले में अब पुलिस झूठी गवाही या अदालत से झूठ बोलने को लेकर जांच कर रही है। 15 उप-पोस्टमास्टर मामले में पूर्व इंजीनियर जेनकिंस विशेष गवाह हैं। जांच के शुरू होते ही उन्होंने किसी भी गलत काम में मिश्रा के शामिल होने से इनकार किया था। इससे पहले, सीमा ने डाकघर के पूर्व प्रबंधक निदेशक डेविड स्मिथ द्वारा मांगी गई माफी को भी स्वीकार नहीं किया था। दरअसल, जिस वक्त मिश्रा को दोषी सिद्ध किया गया था, उस समय स्मिथ ने अपनी पूरी टीम को एक बधाई का मेल भेजा था।

भारत ने यूएनजीए में कश्मीर पर किए बयानों को लेकर पाकिस्तान को लताड़ा

टिप्पणियों को लेकर सुनाई खरी-खरी

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। पाकिस्तान की दुखती रग कश्मीर को लेकर रोना कहीं न कहीं निकलता ही रहता है। इस बीच अब पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में कश्मीर का राग छेड़ा है। वहीं, भारत ने पाकिस्तान के इस हरकत की आलोचना की है। भारत ने पाकिस्तान की आलोचना करते हुए कहा कि उसने निराधार और कपटपूर्ण बयानों के लिए पाकिस्तान की आलोचना करता है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी मिशन में मंत्री प्रतीक माथुर ने कहा कि पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल का यह बयान हैरानी की बात नहीं है। हमें इन टिप्पणी पर हम का कीमती वक्त बर्बाद नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा, 'आज एक प्रतिनिधिमंडल ने निराधार और झूठी बातें फैलाने के लिए इस मंच का दुरुपयोग किया जो कोई हैरानी की बात नहीं है। मैं केवल इस प्रतिष्ठित संस्थान का कीमती वक्त बचाने के लिए किसी भी तरह की प्रतिक्रिया देकर इन टिप्पणियों को बढ़ावा नहीं दूंगा।'

यह पहली बार नहीं है, जब पाकिस्तान ने कश्मीर का मुद्दा किसी अंतरराष्ट्रीय मंचों से उठाई हो। इससे पहले भी कई बार पाकिस्तान कश्मीर के मुद्दे को उठा चुका है। वहीं भारत ने हर बार इस मुद्दे को लेकर पाकिस्तान को लताड़ लगाई है। इससे पहले भी भारत ने कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उठाने की पाकिस्तान की कोशिशों की कड़ी आलोचना की है। इस बार भी भारत ने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश भारत के अभिन्न और अविभाज्य अंग रहे हैं और हमेशा रहेंगे।

हमारे साथ हो रहा शोषण... इटली में मजदूर सतनाम सिंह के साथ हुई बर्बरता पर भड़क उठे हजारों भारतीय प्रवासी

रोम , एजेंसी। इटली के लैटिना के खेत में काम करने वाले एक भारतीय मजदूर की कुछ दिनों पहले सड़क दुर्घटना के बाद मौत हो गई। इस सड़क हादसे में उसकी हाथ भी कट गई थी। सतनाम सिंह नामक व्यक्ति का हाथ उस समय कटा जब वह खेत पर काम कर रहा था। मदद देने के बजाय उसे उसके घर के पास सड़क पर छोड़ दिया गया।

हजारों भारतीय प्रवासियों ने सतनाम की मौत पर चिंता जाहिर की: सतनाम सिंह के साथ हुए इस अत्याचार के खिलाफ इटली में मौजूद भारतीय समुदाय के लोगों ने आवाज उठाना शुरू कर दिया है। हजारों भारतीय, जो इटली के खेतों में मजदूरी कर रहे हैं, उन्होंने अवैध प्रवासियों पर हो रहे शोषण पर चिंता जाहिर की है।

लैटिना रोम के दक्षिण में एक ग्रामीण क्षेत्र है जहां हजारों भारतीय प्रवासी मजदूर रहते हैं। इटली में मौजूद भारतीय दूतावास ने रतलाम सिंह की मौत पर चिंता जाहिर की है।

भारतीय दूतावास ने एक्स पर एक बयान में कहा कि दूतावास को इटली के लैटिना में एक भारतीय नागरिक की दुर्भाग्यपूर्ण मौत की जानकारी मिली है। हम स्थानीय अधिकारियों के संपर्क में हैं। परिवार से संपर्क करने और कांसुलर सहायता प्रदान करने के प्रयास जारी हैं।

सतनाम सिंह के परिवार को मिला ट्रेड यूनियन का साथ : इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने गुरुवार को कैबिनेट की बैठक में सिंह की मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त की और कड़ी निंदा की। बता दें कि इटली के कई ट्रेड यूनियन ने इस घटना को क्रूर बताया है। वहीं, सतनाम सिंह के परिवार को राहत सहायता देने के लिए कई ट्रेड यूनियन आगे भी आए हैं।

हम भारत के साथ..., नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते ही बदले पाकिस्तान के सुर

इस्लामाबाद, एजेंसी। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन गए हैं। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव के बाद एनडीए को पूर्ण बहुमत मिला है। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्हें दुनियाभर के नेताओं ने बधाई संदेश दिया। साथ ही, कई देश भारत के साथ अच्छे संबंधों पर भी जोर दे रहे हैं। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से भी दोनों देशों के संबंधों को लेकर अहम बयान आया है।

पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री इशाक डार ने मंगलवार को मोदी सरकार से दोनों परमाणु शक्ति संपन्न पड़ोसियों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के भविष्य पर गंभीरता से विचार करने का आह्वान किया। यहां एक कार्यक्रम में उन्होंने भारत के साथ संबंधों के बारे में अपने पिछले बयानों को दोहराया और कहा कि पाकिस्तान हमेशा से भारत के साथ अच्छे संबंध रखने का इच्छुक रहा है।

भारत के साथ हमारे संबंध ऐतिहासिक रूप से खराब रहे हैं, लेकिन पाकिस्तान सतत शत्रुता में विश्वास नहीं करता। हम आपसी सम्मान, संप्रभु समानता और लंबे समय से चले आ रहे जम्मू-कश्मीर विवाद के न्यायसंगत और शांतिपूर्ण समाधान के आधार पर भारत के साथ अच्छे पड़ोसी का संबंध चाहते हैं।

हर कदम उठाएगा पाकिस्तान: उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत के साथ बेहतर संबंध सुनिश्चित करने के लिए पाकिस्तान हर कदम उठाएगा, लेकिन वह किसी भी भारतीय सैन्य दुस्साहस का समुचित जवाब देने से नहीं चूकेगा। डार का बयान ऐसे समय में आया है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार पदभार संभाला है और राजग सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं।

नाबालिग के साथ यौन उत्पीड़न के मामले में बुद्ध बॉय दोषी करार, अब एक जुलाई को सुनाई जाएगी सजा

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की एक अदालत ने बुद्ध बॉय के नाम से मशहूर आध्यात्मिक नेता को यौन उत्पीड़न के आरोप में दोषी ठहराया। बुद्ध बॉय के प्रचलित राम बहादुर बामजन को जनवरी में नाबालिग के साथ यौन उत्पीड़न के के अलावा अपने चार भक्तों के गायब होने के मामले में गिरफ्तार किया गया था। सरलाही जिला न्यायालय के एक जज ने उसे दोषी करार दिया। कोर्ट ने बताया कि सजा एक जुलाई क सुनाई जाएगी।

गौतम बुद्ध का अवतार मानते हैं भक्त: 33 वर्षीय राम बहादुर बामजन को उसके भक्त गौतम बुद्ध का अवतार मानते हैं। उसके भक्तों का मानना है कि बुद्ध बॉय महीनों तक पानी, नींद और भोजन के बिना ध्यान कर सकता है। हालांकि, कुछ पत्रकारों ने उसे ध्यान के दौरान कुछ खाते और सोते हुए भी रिकॉर्ड किया था। 2010 में उसके खिलाफ दर्जनों हमले की शिकायतें दर्ज की गई थी। इस पर सफाई पेश करते हुए बुद्ध बॉय ने बताया था कि ध्यान के दौरान परेशान करने के कारण उसने अपने भक्तों को पीट दिया था।

जनवरी में हुई थी गिरफ्तारी : नेपाल की केंद्रीय जांच ब्यूरो ने उसे इस साल काठमांडू के बाहरी इलाके में एक घर से गिरफ्तार किया था। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तारी के दौरान उन्होंने 227,000 डॉलर मूल्य के नेपाली बैंक नोट और 23,000 डॉलर मूल्य की अन्य विदेशी मुद्राएं जब्त कीं। इन आरोपों के बाद भी राम बहादुर बामजन के पास अभी भी भक्तों की एक बड़ी संख्या है। एक समय करीब दस हजार भक्त जंगल में उसके ध्यान के चमत्कार को देखने के लिए एकत्रित हुए थे। 16 साल की उम्र में वह नौ महीनों के लिए गायब हो गया था, जिसके बाद उसके भक्तों ने उसकी वापसी के लिए प्रार्थना की थी।

इस्राइल की नई चेतावनी, जल्द गाजा में हमास शासन का होगा खात्मा

यरुशलम, एजेंसी। हमास और इस्राइल बीते आठ महीने से जंग लड़ रहे हैं। इस्राइल द्वारा हमास को खत्म करने का संकल्प गाजा पट्टी के लोगों पर भारी पड़ रहा है। गाजा में पैदा हुई मानवीय परिस्थितियों को लेकर दुनिया भर के लोगों का आक्रोश बढ़ता जा रहा है। वहीं, इस्राइल अपने लक्ष्य पर डटा हुआ है। उसका कहना है कि वह जल्द ही उत्तरी गाजा में हमास शासन को बदलने की योजना लागू करेगा।

हमास के सदस्यों का होगा खात्मा: इस्राइल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तजाची हानेग्बी ने मंगलवार को रीचमैन विश्वविद्यालय के वार्षिक हर्जलिया सम्मेलन में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमास की शासन करने की क्षमता को खत्म करने से उन देशों के लिए अवसर खुलेंगे, जो गाजा में सरकार के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं। उन्होंने बताया कि गाजा में जो नया नेतृत्व होगा, उसमें इस्राइल के अब्राहम समझौते के साझेदार, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र शामिल होंगे। वहीं इस्राइली सेना हमास के सदस्यों को ढूंढ-ढूंढ कर खत्म करना जारी रखेगी।

अब यह नई योजना: हानेग्बी ने कहा, हम लंबे समय से इस योजना के बारे में बात कर रहे हैं। मगर तब हमारी कोशिश थी कि हमास को पूरी तरह से खत्म करना। हालांकि अब हमें इसके पूरी तरह से खत्म होने की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। उस प्रक्रिया में लंबा समय लग सकता है। इसलिए अब हमारी यही योजना है और इस पर अमेरिका भी सहमत है। उन्होंने आगे कहा कि आप हमास को पूरी तरह से गायब नहीं कर सकते क्योंकि यह एक विचार है, एक अवधारणा है।

नेतन्याहू ने बताए इस्राइल के तीन युद्ध उद्देश्य: गौरतलब है, अमेरिका ने युद्ध के बाद गाजा के शासन के लिए एक दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए इस्राइल के अधिकारियों पर दबाव डाला है। हालांकि बाइडन प्रशासन इस्राइल द्वारा गाजा पर कब्जा करने का हमेशा ही विरोध करता रहा है। इस बीच, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने जोर देकर कहा कि इस्राइल के तीन युद्ध उद्देश्य हैं हमास की सैन्य और शासन क्षमताओं का विनाश, सभी बंधकों की वापसी और यह सुनिश्चित करना है कि गाजा अब इस्राइल के लिए खतरा नहीं है।

उन्होंने आगे कहा कि युद्ध के बाद गाजा की देखरेख अरब देशों की सहायता से वहां के नागरिकों द्वारा की जाएगी। उन्होंने कट्टरपंथ-विरोधी प्रक्रिया का भी उल्लेख किया।

आठ माह से जारी जंग: हमास ने सात अक्तूबर को इस्राइली शहरों पर पांच हजार से ज्यादा रॉकेट दागकर हमले की शुरुआत की थी। इसके बाद हमास के आतंकियों ने इस्राइल में घुसकर लोगों को मौत के घाट उतारा। इसके जवाब में इस्राइल ने हमास आतंकियों के खिलाफ गाजा में ऑपरेशन शुरू किया था। इस ऑपरेशन में गाजा स्थित हमास के ठिकानों पर जबरदस्त बमबारी की गई है, जिससे अधिकतर गाजा खंडहर में तब्दील हो गया है। अब तक इस्राइल और गाजा में कुल मिलाकर 34,622 लोगों की मौत हो चुकी है। फलस्तीनी अधिकारियों के अनुसार, गाजा युद्ध शुरू होने के बाद से वेस्ट बैंक में कम से कम 549 फलस्तीनियों की मौत हो गई है।इस्राइल के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, इसी अवधि में वेस्ट बैंक में फलस्तीनियों के हमलों में कम से कम 14 इस्राइली मारे गए हैं।

चुनावी बहस से पहले डोनाल्ड ट्रंप को आंशिक राहत; फैसले में जज ने कहा- जूरी की सुरक्षा प्राथमिकता

न्यूयॉर्क, एजेंसी। न्यूयॉर्क की एक अदालत से अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को आंशिक राहत मिली। अदालत के फैसले के बाद ट्रंप अपने मामले में गवाही देने वाले माइकल कोहेन और स्टॉर्मी डेनियल से जुड़ी टिप्पणी कर सकेंगे। ये राहत इसलिए भी अहम है क्योंकि 27 जून को होने वाली चुनावी बहस में ट्रंप भाग लेंगे। खबरों के मुताबिक अदालत से मिली राहत के बाद ट्रंप बहस के दौरान खुलकर टिप्पणी कर सकेंगे। गौरतलब है कि गुप्त धन से जुड़े आपराधिक मुकदमे में लगे प्रतिबंध आदेश (गैग ऑर्डर) को आंशिक रूप से हटाने के मामले में न्यूयॉर्क के अटॉर्नी अल्वीन ब्रैग (डी) का रूख अपवाद है। एक अन्य जज जुआन मर्चेन ने भी कहा है कि वे 11 जुलाई के फैसले के बाद प्रतिबंध हटाने पर विचार करेंगे। आंशिक रूप से हटाए जाने के बाद ट्रंप जूरी के सामने अपना पक्ष रख सकेंगे। इसी जूरी ने ट्रंप को पिछले महीने 34 आपराधिक आरोपों में दोषी ठहराया था। हालांकि, पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप एक अन्य सुरक्षात्मक आदेश के तहत सार्वजनिक रूप से गवाहों की पहचान का खुलासा नहीं कर सकेंगे। द हिल की रिपोर्ट के मुताबिक प्रतिबंधों में राहत देते हुए जज मर्चेन ने कहा कि जूरी के सदस्यों को संरक्षण प्रदान करना उनकी प्राथमिकता है। न्यूयॉर्क के अटॉर्नी अल्वीन ब्रैग की तरफ से इस संबंध में अपील भी की गई थी।

संक्षिप्त समाचार

एनीमिया मुक्त भारत के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा : डॉ एके द्विवेदी

भोपाल। भारत सरकार ने 2047 में एनीमिया मुक्त भारत की परिकल्पना में सभी चिकित्सकों एवं समाज सेवी संस्थानों तथा जनता को मिलकर सहयोग करना होगा। सिकल सेल की बीमारी अतयंत गंभीर, असाध्य एवं पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली बीमारी है इसके लिए जागरूकता के साथ - साथ शादी पूर्व रक्त जाँच जब तक अनिवार्य नहीं होगा तब तक बीमारी को अगली पीढ़ी में जाने से रोका जाना असंभव होगा यह बात केंद्रीय होम्योपैथी अनुसन्धान परिषद् आयुष मंत्रालय भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के सदस्य डॉ एके द्विवेदी ने कही, आपने यह भी कहा कि सिकल सेल का इलाज किसी भी चिकित्सा पद्धति द्वारा अभी तक संभव नहीं हो सका है लेकिन होम्योपैथी चिकित्सा द्वारा सिकल सेल की बीमारी से पीड़ित मरीजों के दुःख दर्द एवं असहनीय पीड़ा को कम किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि डॉ एके द्विवेदी के पास पूरे देश से अप्लास्टिक एनीमिया के मरीज आते हैं जिनका हीमोग्लोबिन और प्लेटलेट्स काफी कम रहने के कारण उन्हें पूर्व में बार बार, जल्दी जल्दी रक्त चढ़ाना पड़ता था और जिन्हे इलाज स्वरुप केवल बोन मेरो ट्रांसप्लांट बताया गया था ऐसे कई मरीज डॉ द्विवेदी की एडवांस्ड होम्योपैथी चिकित्सा 50 मिलिसिमल पोटेंसी की दवा से के सेवन से अब पूरी तरह ठीक हो गए हैं और अपना जीवन बिना किसी परेशानी के व्यतीत कर रहें हैं

सोमैया विद्याविहार मुंबई द्वारा रेहटी में सोमैया विद्या मंदिर का उद्घाटन

रेहटी। हाल ही में सोमैया विद्याविहार (मुंबई) ने मध्य प्रदेश के रेहटी में सोमैया विद्या मंदिर स्कूल का उद्घाटन किया, जिसका उद्देश्य बुदनी, रेहटी, नसरुल्लागंज और ओबेदुल्लागंज के इलाकों में रहने वाले बच्चों को मूल्य-आधारित सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करना है। इस शानदार पहल की शुरुआत करते हुए स्कूल में पहले ही 50 छात्रों ने प्रवेश ले लिया है, जिनमें रातापानी वन्यजीव अभयारण्य के बाहरी इलाके के सुदूर आदिवासी गाँवों के 20 बच्चे भी शामिल है। सोमैया संस्थान ने वर्ष 1942 में ग्रामीण महाराष्ट्र के कोपरगाँव में अपने पहले स्कूल की स्थापना की थी और यह सोमैया विद्याविहार का नौवाँ स्कूल है, जो ग्रामीण महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा गुजरात के स्कूलों में सम्मिलित हो गया है। रेहटी, मध्य प्रदेश में विन्ध्याचल की पहाड़ियों की तलहटी में बसा एक जिंदादिल शहर है और यह नया स्कूल इसी शहर में स्थित है। इस अवसर पर सोमैया विद्याविहार अध्यक्ष एवं सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, श्री समीर सोमैया ने कहा, 'समाज हित में योगदान देना हमारे परिवार की परंपरा है और शिक्षा हमारी इस परंपरा का आधार रही है, और मुझे विश्वास है कि शिक्षा में लोगों का जीवन बदलने की शक्ति होती है।

इमरजेंसी के बाद इंदिरा गांधी को लगने लगा था पिटाई का डर, देश छोड़ने की बनाई थी योजना: अन्नामलाई

चेन्नई, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश (तमिलनाडु) अध्यक्ष के अन्नामलाई ने मंगलवार को दावा किया है कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1977 में इमरजेंसी समाप्त होने के बाद देश से बाहर जाने का फैसला किया था। अन्नामलाई ने कहा कि आपातकाल के दौरान हर तरफ दमन था। 1975 से 1977 तक 21 महीनों में 1.14 लाख लोगों को गिरफ्तार किया गया था। आपको बता दें कि आपातकाल की घोषणा 25 जून 1975 को की गई थी। इस दिन को काला दिवस के रूप में मनाते हुए प्रदेश भाजपा ने पूरे तमिलनाडु में कई कार्यक्रम आयोजित किए। चेन्नई स्थित भाजपा मुख्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान अन्नामलाई ने कहा, आपातकाल समाप्त होने के बाद इंदिरा गांधी ने सोचा कि देश की जनता पूरे गांधी परिवार को पीटेगी। इसलिए उन्होंने अपने बेटे और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी से देश से बाहर जाने के लिए मुंबई में उनके लिए एक विशेष विमान तैयार करने को कहा था। लेकिन, 1978 में सत्ता में आने के बाद पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने उन्हें आश्वासन दिया कि देश की जनता उन्हें माफ कर देगी और उनकी जान को कोई खतरा नहीं होगा।

केंद्र ने सबसे ज्यादा भेदभाव केजरीवाल जी के साथ किया

आतिशी से मिलने के बाद बोले अखिलेश

नईदिल्ली, एजेंसी। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव बुधवार सुबह दिल्ली सरकार की मंत्री और आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी से मिलने एलएनजेपी अस्पताल पहुंचे। जो कि हाल ही में दिल्ली जल संकट और हरियाणा से पानी की आपूर्ति को लेकर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठी थीं। इसी दौरान आतिशी की तबीयत बिगड़ने के बाद 24 जून की देर रात उन्हें यहां लाया गया था। इसी वजह से अखिलेश उनकी सेहत का हाल पूछने अस्पताल पहुंचे। इस मौके पर आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह भी मौजूद थे, जिन्होंने अखिलेश यादव का स्वागत किया। आतिशी से मिलने के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, जब से दिल्ली में भाजपा की सरकार बनी है मुख्यमंत्रियों की तकलीफ बढ़ी है, परेशानियां बढ़ी है। दिल्ली (केंद्र सरकार) सरकार से जो सहयोग और मदद मिलनी चाहिए उसे भी सरकार ने पूरा नहीं किया। केंद सरकार ने सबसे ज्यादा भेदभाव अगर किसी के साथ किया है तो वो दिल्ली सरकार के साथ और खासकर अरविंद केजरीवाल जी के साथ किया है। केंद्र सरकार लगातार उनको तकलीफ परेशानी पहुंचा रही है। जब उन्हें हर जगह से राहत मिलने का काम शुरू हो गया, जब वो बाहर आ जाते तो वे निकल ना पाएं सरकार ना चला पाएं इसलिए फिर उन पर ना जाने कौन सा मुकदमा लगाकर उनको फंसा दिया गया। सीबीआई के लोग लगातार लोगों को फंसाते है और उनको फंसाते है जिनसे इनको (भाजपा) खतरा है।

इस मुलाकात के बारे में जानकारी देते हुए आप ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी ने दिल्लीवालों को उनके हक का पानी दिलाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देने वाली जल मंत्री आतिशी जी के स्वास्थ्य का एलएनजेपी अस्पताल पहुंचकर हालचाल जाना। इस दौरान आप सांसद संजय सिंह जी व विधायक दिलीप पांडे जी भी मौजूद रहे।

बता दें कि अनिश्चितकाली भूख हड़ताल पर बैंठी आतिशी की तबीयत सोमवार रात को बिगड़ गई थी, जिसके बाद उन्हें एलएनजेपी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वह पिछले पांच दिनों से कुछ भी नहीं खा रही थीं और हरियाणा से दिल्ली के हिस्से का पानी जारी करने की मांग पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर थीं। इसी दौरान उनका ब्लड शुगर लेवल आधी रात को 43 और सुबह 3 बजे 36 तक गिर गया, जिसके बाद अस्पताल के डॉक्टरों ने तुरंत उन्हें भर्ती करने की सलाह दी। इसी के साथ उन्होंने डॉक्टरों की सलाह पर मंगलवार सुबह अपना अनशन भी खत्म कर दिया।

नोएडा सेक्टर-142 से बॉटेनिकल गार्डन तक दौड़ेगी मेट्रो, यूपी कैबिनेट से मिली मंजूरी

नईदिल्ली, एजेंसी। नोएडा सेक्टर-142 से 38ए बॉटेनिकल गार्डन तक मेट्रो रूट की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) को यूपी कैबिनेट ने मंगलवार को मंजूरी दे दी। अब इसे केंद सरकार के पास भेजा जाएगा। वहां से मंजूरी मिलने के बाद टेंडर प्रक्रिया शुरू होगी। यह एक्वा लाइन का एक्सटेंशन रूट होगा। अगले साल से इस रूट पर काम शुरू होने की उम्मीद है। पिछले साल दिसंबर में नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (एनएमआरसी) ने इस रूट की डीपीआर को बोर्ड से मंजूरी दी थी। इसके बाद यूपी सरकार को भेजा गया था। एनएमआरसी के अधिकारियों ने बताया कि मेट्रो का नया रूट 11.56 किलोमीटर का होगा। इस पर आठ मेट्रो स्टेशन एलिवेटेड बनेंगे। परियोजना की कुल लागत 2254.35 करोड़ रुपये आएगी। इसमें जमीन और सभी कर शामिल हैं। परियोजना में राज्य सरकार द्वारा कोई धनराशि नहीं दी जाएगी। इसका खर्च नोएडा उठाएगा। यूपी सरकार परियोजना को बढ़ाने और कनेक्टिविटी में सहयोग करेगी। योजना के मुताबिक बॉटेनिकल गार्डन और सेक्टर-44 के मेट्रो स्टेशन को छोड़ दें तो बाकी सभी छह स्टेशन एक्सप्रेसवे के पास सेक्टर रोड पर बनाए जाएंगे। एक्सप्रेसवे और सर्विस रोड को जोड़ते हुए इसके दूसरे हिस्से को जोड़ने के लिए फुटओवर ब्रिज भी बनाए जाएंगे। डीपीआर के तहत इस रूट पर मेट्रो चलने के पहले चरण में करीब 80 हजार राइडरशिप रहने की उम्मीद है। इससे सेक्टर-44, 45, 97, 99, 100, 104, 105, 108 और 93 में रहने वाले लोगों को सबसे ज्यादा फायदा होगा।

राजस्थान में कांग्रेस का खेल बिगाड़ेंगी मायावती, उप चुनाव लड़ने का ऐलान

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान की पांच विधानसभा उप चुनाव में बसपा अपने उम्मीदवार खड़ा करेंगी। बसपा प्रदेश अध्यक्ष भगवान सिंह बाबा ने कहा कि पार्टी नगर निकाय चुनाव भी लड़ेगी। जिससे ग्रासरूट पर कार्यकर्ता तैयार हो सके। भगवान सिंह बाबा ने कहा कि मायावती की अध्यक्षता में हाल ही में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। राजस्थान में 5 सीटों पर विधायक अब सांसद बन चुके हैं, जिसके बाद 5 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव का ऐलान होनेवाला है। उपचुनाव के लिए अलग-अलग पार्टियां तैयारियों में जुट चुकी है। इस बीच कांग्रेस ने भी अपनी कमर कस ली है। बता दें 5 विधानसभा सीटों में से तीन सीटों पर कांग्रेस के विधायक सांसद पहुंचे है। जबकि एक सीट पर आरएलपी और एक सीट पर बीएपी के विधायक सांसद बने हैं। ऐसे में कांग्रेस अपनी जीती हुई सीट को हाथ से निकलने नहीं देगी। विधानसभा उपचुनाव के लिए कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने फिर से मोर्चा संभाल लिया है।

गोविंद सिंह डोटासरा ने संगठनात्मक सक्रियता बढ़ान के लिए पांचों विधानसभा क्षेत्र के लिए चार सदस्यीय समिति का गठन किया है. समिति द्वारा ब्लॉक, मण्डल तथा बूथ कांग्रेस कमेटियों की बैठक ली जाकर क्षेत्र के जमीनी कार्यकर्ताओं के साथ सीधा संवाद किया जायेगा और जमीनी स्तर पर संगठन का मतदाताओं से संवाद एवं जुड़ाव के लिए कार्य योजना बनाकर चुनाव में जीत सुनिश्चित के लिए रूपरेखा तैयार करेंगे। लोकसभा चुनाव में बीजेपी को राजस्थान में तगड़ा झटका लगा है। राज्य के पांच विधायकों के लोकसभा सांसद चुने जाने के चलते पांच विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। कांग्रेस के सामने अपने विधायकों की सीट बचाने की चुनौती है तो बीजेपी की कोशिश उपचुनाव के ट्रेंड तोड़ने की है। पिछले दस सालों में हुए उपचुनाव में कांग्रेस का पलड़ा भारी रही है। कांग्रेस सत्ता में रही हो या फिर विपक्ष में उपचुनाव की बाजी मारती रही है। ऐसे में सत्ता की कमान संभाल रहे सीएम भजनलाल के लिए बीजेपी को उपचुनाव जिताने का जिम्मा है।

पेपर आउट करा आपस में बांट लेते सभी गैंग

कई राज्यों में फैला है नीट-यूजी नकल माफिया का गठजोड़

नईदिल्ली, एजेंसी। नीट-यूजी पेपर लीक किसी एक गैंग का कारनामा नहीं है, बल्कि इसमें कई गैंग का गठजोड़ शामिल है। ये गैंग कई राज्यों में सक्रिय हैं और उनके सदस्य आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनकी तलाश इन राज्यों में प्रारंभ की जा चुकी है और नीट पेपर लीक मामले में उनकी भूमिका की जांच शुरू हो चुकी है। इस मामले में नोएडा एसटीएफ ने भी अपने स्तर से जांच शुरू कर दी है और वह रवि अत्री गैंग के सदस्यों की तलाश कर रही है।

नीट परीक्षा पेपर लीक मामले में जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे ही नए खुलासे हो रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार, जांच में पता चला है की पेपर लीक मामले से जुड़े बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश के गैंग का आपस में गठजोड़ है। यह गठजोड़ किसी एक परीक्षा में नहीं बल्कि अन्य परीक्षाओं में भी काम करता है। किसी भी एक गैंग के द्वारा पेपर लीक किए जाने के बाद उसे अन्य गैंग में भी बांटा जाता है।

जांच एजेंसियों से मिली जानकारी के अनुसार, इस गठजोड़ में मध्यप्रदेश के इंदौर में रहने वाले राजीव नारायण मिश्रा, पटना का शुभम मंडल, नालंदा का संजीव मुखिया और उसका बेटा डॉ. शिवम, शामली का मोनू गुर्जर, मथुरा का मोनू पंडित, जौनपुर का अजित चौहान, हरियाणा का संजीव दाहिया, मोनू छाकला और नोएडा का रवि अत्री प्रमुख है।

रवि अत्री पूरे दिल्ली एनसीआर में पेपर लीक का सरगना है। पुलिस भर्ती परीक्षा के लीक कांड का भी वह मुख्यारोपी है। नोएडा एसटीएफ की टीम भी रवि अत्री के साथियों और नीट पेपर लीक मामले में उनकी भूमिका की जांच में जुट गई है।

इन परीक्षाओं के पेपर लीक करने का आरोप इन गिरोह पर प्री मेडिकल टेस्ट परीक्षा, एम्स पीजी परीक्षा, पुलिस भर्ती परीक्षा, यूपीटीईटी, बीपीएससी द्वारा आयोजित शिक्षक भर्ती परीक्षा, एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती परीक्षा, आरओ, एआरओ परीक्षा आदि प्रमुख परीक्षाओं के पेपर लीक करने का आरोप है।

रवि अत्री का बैचमेट है संजीव मुखिया का बेटा: जेवर के गांव नीमका का मूल निवासी रवि अत्री पुलिस भर्ती परीक्षा लीक मामले का मास्टर माइंड है। नकल माफियाओं से सांठगांठ कर उसने करोड़ों की संपत्ति अर्जित की है। उसके पास नोएडा, ग्रेटर नोएडा में आलीशान फ्लैट हैं। वह वर्तमान में मेरठ जेल में बंद है। नीट परीक्षा लीक मामले के मास्टर माइंड माने जा रहे संजीव मुखिया से रवि की विशेष नजदीकी हैं। संजीव के बेटे डॉ. शिवम का वह बैचमेट रहा है।

महाराष्ट्र में हार के बाद भाजपा को एक और झटका, पूर्व मंत्री सूर्यकांता पाटिल अब शरद पवार के साथ

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव के नतीजे उम्मीदों के विपरीत आने पर भाजपा में मंथन चल ही रहा है कि इस बीच उसे करारा झटका लगा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री सूर्यकांता पाटिल ने भाजपा छोड़ दी है और अब वह शरद पवार खेमे वाली एनसीपी का हिस्सा बन गई हैं। उन्होंने शनिवार को ही भाजपा से इस्तीफा दिया था और तब से ही अटकलें थीं कि वह शरद पवार खेमे में जा सकती हैं। उन्होंने 11 साल बाद घर वापसी की है। एनसीपी को छोड़कर वह 2014 में ही भाजपा में आ गई थीं। उन्होंने अब घर वापसी करते हुए यह भी कहा कि भाजपा में जाकर उन्होंने गलती की थी। वह नांदेड़ से आती हैं, जहां से अशोक चव्हाण भी हैं। वह फिलहाल भाजपा से राज्यसभा सांसद बने हैं। एक तरफ नांदेड़ पार्टी को लोकसभा चुनाव में हार मिली है और अब पाटिल के शरद पवार खेमे में जाने से उसे झटका लगा है। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले इस तरह नेताओं का छोड़ना उसकी टेंशन बढ़ाने वाला है। शरद पवार ने पाटिल की वापसी पर कहा कि उनके आने से पार्टी को नांदेड़, हिंगोली, परभणी, बीड और अन्य जिलों में मदद मिलेगी। सूर्यकांत पाटिल ने अपने इस्तीफे में कहा कि मैंने कई बार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले से मिलने का समय मांगा था। लेकिन उन्होंने वक्त ही नहीं दिया। इसके साथ ही उन्होंने इस्तीफे में लिखा कि बीते 10 सालों में मैंने बहुत कुछ सीखा है। इसके लिए पार्टी को धन्यवाद देती हूं। सूर्यकांता पाटिल के करीबी सूत्रों का कहना है कि वह अशोक चव्हाण की एंट्री और उन्हें राज्यसभा भेजे जाने से नाखुश थीं। उन्हें लग रहा था कि उनको यह मौका मिलना चाहिए था। इसके अलावा वह लोकसभा चुनाव में भी लड़ने की दावेदारी कर रही थीं।

शिमला में 70 मीटर नीचे खड्ड में गिरा वाहन; हादसे में पति की मौत, पत्नी समेत दो घायल

शिमला, एजेंसी। शिमला के झाकड़ी इलाके में गानवी के पास बोलेरो कैम्पर वाहन अनियंत्रित हो गया और करीब 70 मीटर नीचे खड्ड (उपनदी) में जा गिरा। इस दुर्घटना में वाहन में सवार एक शख्स की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पत्नी व एक अन्य घायल है। घायलों में मृतक की पत्नी भी शामिल है।

दोनों घायलों को उपचार के लिए खनेरी अस्पताल में भर्ती किया गया है। मृतक की पहचान राम लाल (48) निवासी मोलागी के रूप में हुई है। हादसे में मृतक की पत्नी राधा देवी (48) और चालक अर्जुन (34) चोटिल हैं। मंगलवार देर शाम हुए इस हादसे की वजह चालक की लापरवाही सामने आई है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बोलेरो कैम्पर वाहन क्रमांक एचपी 25ए-1850 कोटलु ज्यूरी से मोलागी की तरफ जा रहा था। हादसे के वक्त वाहन में चार लोग सवार थे। इनमें मोलागी निवासी राम लाल, राधादेवी पत्नी राम लाल, चालक अर्जुन और बगडू राम (43) शामिल है। हादसे में बगडू राम सुरक्षित बच गया। दरअसल रामलाल ने घर का काम लगाया था और इसके लिए रेत के कट्टे बोलेरो कैम्पर में लाद कर लाये जा रहे थे। बोलेरो जब गानवी के पास पहुंची तो चढ़ाई में आगे नहीं बढ़ पा रही थी और अचानक बैक होने लगी। तभी वाहन में सवार बगडू राम पिछले टायर के नीचे पत्थर रखने के लिए वाहन से उतर गया। लेकिन बोलेरो तेजी से बैक हुई और वह सड़क से करीब 70 मीटर नीचे गानवी खड्ड में जा गिरी। इस दुर्घटना में राम लाल की मौके पर ही मौत हो गई तथा राधा देवी और चालक अर्जुन को चोटें आई हैं।

अरावली से सटे गांव टिकली में तेंदुआ दिखने से ग्रामीण दहशत में

पुलिस प्रशासन से लगाई सुरक्षा की गुहार

नईदिल्ली, एजेंसी। गुरुग्राम में अरावली से सटे गांव टिकली में तेंदुआ दिखने से ग्रामीण दहशत में है। सोमवार रात को गोशाला में एक साथ दो तेंदुए घुस गए। इनमें से एक तेंदुए ने गोवंश पर हमला कर उसे अपना शिकार बना लिया। गोशाला में लगे सीसीटीवी में यह घटना कैद हो गई। ग्रामीणों के मुताबिक बीते एक माह से जंगल से कई बार तेंदुए गांव के आबादी क्षेत्र में घूम रहे हैं। सोमवार रात को ग्रामीणों की सूचना पर वन्यजीव प्राणी विभाग के डीएफओ राजेश चहल ने गांव का निरीक्षण कर लोगों को सतर्क रहने को कहा है।

गांव टिकली निवासी सुनील यादव ने बताया कि गांव बिल्कुल अरावली की पहाड़ियों से सटा हुआ है। इस कारण जंगली जानवरों का गांव में हमेशा खतरा रहता है। गांव में बीते एक माह से तेंदुए ने खूब दहशत फैला रखी है। तेंदुए रात के अंधेरे में गांव के गोशाला में आता है और एक गोवंश को अपना शिकार बनाकर वहां से चला जाता है। तेंदुए ने एक माह में दस से ज्यादा गोवंश को अपना शिकार बनाया है। उन्होंने बताया कि गांव की गोशाला बिल्कुल पहाड़ से सटी हुई है, इस वजह से यहां पर तेंदुआ आसानी से घुस सकता है।

घटना सीसीटीवी फुटेज में कैद: ग्रामीणों ने बताया कि सोमवार की रात को एक साथ अलग-अलग समय में दो तेंदुए गोशाला में प्रवेश करते हुए दिखाई दे रहे हैं। दोनों की गेट के पास बनी दिवार के ऊपर से आते दिखाई दे रहे हैं। गोशाला में प्रवेश करते ही तेंदुए ने एक गोवंश पर हमला कर उसे मार दिया। इसके बाद वह वहां से चला गया। इसके बाद कुछ समय के बाद दूसरा तेंदुआ भी गोशाला में प्रवेश करते हुए सीसीटीवी में दिखाई दिया है।

वन्यजीव विभाग के डीएफओ राजेश चहल ने कहा, गांव टिकली में तेंदुए के घुसने की सूचना मिली थी। इसके बाद गांव में निरीक्षण कर लोगों से सतर्क रहने को कहा। यह गांव अरावली से सटा है। जंगल से शिकार की तालाश में तेंदुए यहां आ रहे हैं।

पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की गुहार लगाई: ग्रामीणों ने मंगलवार को सुबह गांव की आदर्श गोशाला में एकत्रित होकर प्रशासन से गोवंशों की रक्षा करने की गुहार लगाई है। ग्रामीणों का कहना है कि तेंदुए अगर ऐसे ही गांव में आते रहे तो अब तो गोवंश को शिकार बना रहे हैं। वह लोगों पर भी हमला कर सकते है। लगातार गांव में तेंदुए दिखने से यहां दहशत का माहौल है। लोगों ने पुलिस प्रशासन से सुरक्षा की गुहार लगाई है।

वन्यजीव विभाग ने सतर्क रहने को कहा: मंगलवार को वन्य जीव विभाग के डीएफओ राजेश चहल ने गांव टिकली का दौरा किया।

भोंडसी-मानेसर में भी कई बार देखा जा चुका

गुरुग्राम और सोहना क्षेत्र अरावली से सटा हुआ है। इस कारण भोंडसी, मानेसर के आसपास गांव में कई बार तेंदुए देखे गए है। फरवरी में गांव नरसिंहपुर से भी एक तेंदुए को वन्यजीव विभाग ने रेस्क्यू कर पकड़ा था। वन विभाग के मुताबिक अरावली में वन्य जीवों को पर्याप्त भोजन-पानी नही मिल पा रहा। इस वजह से यह रिहायशी इलाकों में घुस रहे हैं। इनसे सावधान रहने की जरूरत है।